CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैमिनि ज्योतिष का अध्ययन

लेखक
डॉ० बी० वी० रमन

अनुवादिका
श्रीमती जया भटनागर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैमिनि ज्योतिष का अध्ययन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैमिनि ज्योतिष का अध्ययन

मूल लेखक
डॉ० बी० वी० रमन

अनुवादिका
श्रीमती जया भटनागर

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर, वाराणसी, पुणे, पटना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थ पुनर्मुद्रण दिल्ली-२०१६
पुनर्मुद्रण : दिल्ली, २००३, २००७, २०१२
द्वितीय संशोधित संस्करण: २०००
प्रथम संस्करण: १९९२

© मोतीलाल बनारसीदास

ISBN: 978-81-208-2571-0

मोतीलाल बनारसीदास
४१ यू०ए० बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७
८ महालक्ष्मी चैम्बर, २२ भुलाभाई देसाई रोड, मुम्बई ४०० ०२६
२३६ नाइंथ मेन III ब्लाक, जयनगर, बंगलौर ५६० ०११
सनाज प्लाजा, १३०२ बाजीराव रोड, पुणे ४११ ००२
२०३ रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, चेन्नई ६०० ००४
८ केमेक स्ट्रीट, कोलकाता ७०० ०१७
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
चौक, वाराणसी २२१ ००१

आर.पी. जैन के द्वारा एन ए बी प्रिंटिंग यूनिट,
ए-४४ नारायणा, फेज-१, नई दिल्ली-११० ०२८ में मुद्रित
एवं जे.पी. जैन के द्वारा मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक प्रा. लि.,
४१ यू.ए., बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-११० ००७, के लिए प्रकाशित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

आज के युग में समय ने व्यक्ति को ज्योतिष जैसी विद्या के लिए भी केवल पुस्तकों पर ही निर्भर रहने को विवश कर दिया है। जैमिनि ज्योतिष पर हिन्दी में एक भी ग्रन्थ ऐसा उपलब्ध नहीं है जिसमें उदाहरण सहित सूत्रों की व्याख्या की गई हो। अंग्रेजी में केवल डॉ॰ बी वी रमन की पुस्तक में उदाहरण देकर इस विषय को समझाया गया है।

अभी तक मेरा अनुभव रहा कि ज्योतिष में विद्यार्थी ज्योतिष ग्रन्थों के अनुवाद में कोई रुचि नहीं लेते। किन्तु ज्योतिष में जैमिनि का प्रचार व प्रसार करने की मेरी इच्छा सदैव रही है।

भारतीय विद्याभवन में ज्योतिष-विशारद की प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रा श्रीमती जया भटनागर ने जैमिनि ज्योतिष में अनुसंधान कार्य करके अपना स्थान उत्तर भारत के उन गिने-चुने ज्योतिषियों में कर लिया है जो जैमिनि के आधार पर भविष्यवाणी करते हैं।

जैमिनि ज्योतिष में विशेष रुचि व उसमें प्रवीण होने के कारण डॉ॰ रमन की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद जया भटनागर द्वारा हो, यह मेरी इच्छा इस पुस्तक के अनुवादित होने पर पूर्ण हो गई है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक के सुन्दर अनुवाद द्वारा उन्होंने हिन्दी जगत् के ज्योतिष प्रेमियों को लाभान्वित किया है। जया भटनागर ने हमसे ज्योतिष सीखकर यह पुस्तक एक अनुपम भेंट के रूप में हिन्दी जगत् को दी है जिससे वह हर्ष व बधाई की पात्रा हैं।

—के॰ एन॰ राव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवेदन

हिन्दू ज्योतिष की विशालता का अनुभव प्रत्येक ज्योतिष विद्यार्थी को है। इसलिए यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि अर्थ, धर्म, काम व मोक्ष का चतुष्सार ज्योतिष में है।

उत्तर भारत में पाराशर पद्धति ही मुख्यतया प्रचलित है। किन्तु इस पद्धति की भी अपनी सीमाएँ हैं। उन सीमाओं का विस्तार जैमिनि पद्धति सरलता व सुगमता से कर सकती है।

चार वर्ष पूर्व भारतीय विद्याभवन में ज्योतिष-विशारद पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मैंने जैमिनि ज्योतिष का अध्ययन किया था। अध्ययन के उपरान्त जैमिनि की उपयोगिता व स्पष्टता ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

श्री के० एन० राव से जैमिनि ज्योतिष सीखकर यह आभास नहीं हुआ कि जैमिनि की जटिलता या प्रथम बार उसका पठन किया जा रहा है।

उत्तर भारत में जैमिनि पद्धति के संकुचित प्रयोग का कारण जैमिनि ज्योतिष पुस्तकों का अभाव व उसका हिन्दी भाषा में उपलब्ध न होना है। अतः अंग्रेजी की डॉ० बी०वी० रमन की सर्वलोकप्रिय पुस्तक "जैमिनि ज्योतिष" के अध्ययन का हिन्दी में अनुवाद करने का यह कार्य मैंने किया है।

आज के युग में जब गुरुमुखी विद्याएँ गुरु-शिष्य परम्परा में नहीं सीखी जा सकतीं तो मुझे ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता का अनुभव हुआ जिसमें उदाहरण सहित जैमिनि सूत्रों के रहस्यों को समझाया गया हो।

पाराशर पद्धति के सहायक रूप में यह जैमिनि पद्धति न केवल होरा शास्त्र में अपितु संहिता शास्त्र में भी ज्योतिषी की पूर्ण सहायता करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैमिनि ज्योतिष की कुछ आकर्षक बातें इस प्रकार हैं–

(क) दशाएँ लगाना सरल है।

(ख) राशि बल व ग्रह बल कम समय में सरलतापूर्वक किया जा सकता है जो कि पाराशर पद्धति में जटिल लगता है।

(ग) कारकों का फलित में मुख्य प्रयोग कुण्डली का वास्तविक स्तर ज्ञात करा देता है।

(घ) सम्पूर्ण भारत में आयु विचार में सभी होरा लग्न द्वारा जैमिनि का ही प्रयोग करते रहे हैं।

(ङ) भाव की अपेक्षा राशि व कारक पर अधिक बल है।

हिन्दी क्षेत्र में जैमिनि ज्योतिष की यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक प्रमाणित हो सके इस पर मैंने विशेष ध्यान दिया है और हिन्दी भाषा के ज्योतिषी इससे नये विषय को सरलतापूर्वक समझ सकें यही मेरी कामना है।

सादर भेंट सहित–

जया भटनागर
जी० डी० भटनागर
जी०-१७३, नानकपुरा
नई दिल्ली-११००२१

जया भटनागर
ज्योतिष-विशारद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
भूमिका	v
निवेदन	vii
अध्याय १. प्राथमिक विचार	**१-४**
जैमिनि तथा पाराशरी १; अन्तर, जैमिनि की गूढ़ता २; आदर्श कुण्डली ३	
अध्याय २. कारक	**५-१८**
कारक, प्राकृतिक कारक ५; जैमिनि कारक, आत्म कारक, अमात्य कारक, भ्रातृ कारक, मातृ कारक, पुत्र कारक ६; ज्ञाति कारक, दारा कारक, कारक का निर्धारण, अपवाद ७; उप-कारक, लग्नों के विभिन्न प्रकार, आरूढ़ लग्न ९; होरा लग्न, भाव लग्न १०; वर्णद लग्न ११; वर्णद अन्य राशियों के लिए, घटिका लग्न १२; निषेक और आधान लग्न, पाराशर पद्धति १३; समरसिंह पद्धति, विद्यमान पद्धति की असन्तोषजनक प्रकृति, प्राणपद, प्राणपद निकालने का तरीका १४; द्वार राशि, बाह्य राशि १५; पाक तथा भोग राशि, गुलिक, ब्रह्मा १६; अपवाद, ब्रह्मा का चुनाव, महेश्वर १७; रुद्र १८	
अध्याय ३. दृष्टि और अर्गला	**१९-२४**
दृष्टि की गणना, जैमिनि की दृष्टियाँ १९; दृष्टि की श्रेणियाँ, अर्गला २०; अर्गला का निर्माण, शुभ अर्गला, अशुभ अर्गला, अर्गला का विरोध २१; अर्गला का महत्त्व, अर्गला चक्र २२; आदर्श कुण्डली में अर्गला चार्ट २३	
अध्याय ४. ग्रह तथा राशि बल	**२५-३४**
बल के स्रोत, राशि बल के स्रोत, आत्म कारक बल २५; संयुक्त बल, स्थिति व दृष्टि बल, स्वामी द्वारा बल, विषम राशियों का बल २६; आत्म कारक की स्थिति से, ग्रह बल के स्रोत, अंश बल, मूल त्रिकोण बल २७; राशि बल का अंकीय माप २८; स्वामी का बल, मूल त्रिकोण बल, अंश बल २९; केन्द्र बल ३०; चर बल, दृग बल ३१; स्थिर बल ३२; कुल राशि बल, विशेष बल ३३; अपवाद ३४	

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय ५. दशा तथा भुक्ति ३५–५४

दशा के प्रकार, दशा का चयन ३५; चर दशा, विषम पद राशियाँ, समपद राशियाँ, दशाक्रम ३६; दशावर्ष ३७; दशा अवधि में बाद में अन्तर, द्विस्वामित्व के कारण अन्तर, द्विस्वामी की अपनी राशि से भुक्ति, मंगल–केतु संयुक्ति अन्य राशियों में, राहु व शनि की अन्य राशि में संयुक्ति, एक स्वामी अपनी राशि में दूसरा दूसरी राशि में ३८; दोनों स्वामी अन्य राशियों में ३९; चर दशा में भुक्ति, अन्तर्दशा की अवधि ४२; स्थिर दशा, दशा की अवधि, स्थिर दशा की गणना ४४; त्रिकोण दशा, त्रिकोण दशा की अवधि ४६; त्रिकोण दशा में अन्तर्दशा ४८; वर्णद दशा ४९; ब्रह्म दशा ५०; योगार्ध दशा ५२; निर्याण शूल दशा ५३; निर्याण फल शूल दशा, अन्य दशाएँ ५४

अध्याय ६. आयु का निर्धारण ५५–६४

साधारण विचार, जैमिनीय पद्धति, आयु की श्रेणियाँ ५५; पद्धति पहली, अल्पायु, मध्यायु, पूर्णायु, विरोधाभासी परिणामों की सन्धि ५६; आयु निर्धारण की अचूक गणना, सारांश ५७; पद्धति दूसरी–तीसरी, विचार, कक्षा वृद्धि ५८; कक्षा वृद्धि की परिस्थितियाँ, कक्षा ह्रास, कक्षा ह्रास की परिस्थितियाँ, राशि वृद्धि, राशि ह्रास ५९; टिप्पणी, मृत्यु की मुख्य अवधि ६१; मृत्यु की अन्तर्दशा, कुछ अपवाद ६३

अध्याय ७. कुण्डली विवेचन ६५–८२

प्राथमिक टिप्पणियाँ, कारकांश, भौतिक रूप ६५; चरित्र व मस्तिष्क ६६; वित्तीय विवरण ६७; स्वास्थ्य व रोग ६८; शिक्षा विवरणं ७०; माता–पिता, भाई–बहन ७१; विवाह ७२; महिलाओं के लिए योग ७३; सन्तान ७४; व्यवसाय ७५; मृत्यु के स्रोत, मृत्यु की प्रकृति ७७; जैमिनि में योग, राजयोग ७८; अरिष्ट योग ८१; मिश्रित योग ८२

अध्याय ८. घटना समय ८३–८९

साधारण टिप्पणियाँ ८३; परिणाम की प्रकृति ८४; पिता की मृत्यु ८५; माता की मृत्यु ८६; जातक की स्वयं की मृत्यु ८७; पत्नी की मृत्यु, अन्य सम्बन्धियों की मृत्यु ८८

अध्याय ९. सारांश ९०–१०९

सामान्य विचार, कारक ९०; विभिन्न प्रकार के लग्न ९३; दृष्टियाँ व अर्गलाएँ ९५; राशिफल ९७; दशा एवं भुक्ति ९८; आयु निर्धारण १०३; मृत्यु की अवधि १०५; कुण्डली का विवेचन १०६; घटना समय, योग १०८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय १

प्राथमिक विचार

१. जैमिनि तथा पाराशरी

ज्योतिष की जैमिनि पद्धति, जिस पर यह पुस्तक आधारित है, पाराशरी पद्धति से बिलकुल भिन्न है और जो पद्धति सम्पूर्ण भारत में प्रयुक्त हो रही है उससे भी भिन्न है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि जैमिनि व पाराशरी एक दूसरे से पूर्णतः भिन्न हैं या ये दो अलग-अलग पद्धतियाँ हैं। अपितु, यह मानना उचित है कि ज्योतिष विज्ञान में जैमिनि पद्धति पाराशरी की एक मुख्य शाखा है। पाराशर व वृद्धयवन के ज्योतिष कार्यों में निरन्तर जैमिनि सूत्रों का विशेष व विभिन्न स्तरों पर वर्णन है। यथा-प्रथम अध्याय में पाद १ सूत्र ५ में जैमिनि ने कहा है कि दृश्य ग्रह से ४, २, ११ भावों में अगर दृष्ट ग्रह हो तो अर्गला होती है। पाराशर ने साधारणतया कहा है कि ऐसा होता है। अपने होरा-शास्त्र में इसी प्रकार अर्गला के विवादास्पद विवरण में, कारकों के निर्धारण आदि में, आरूढ़ लग्न कारकांश के परिणाम में, आयु निर्धारण आदि में पाराशर व वृद्धयवन जैमिनि से पूर्णतः सहमत हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पाराशर व यवन जैमिनि के बाद के लेखक हो सकते हैं। लेकिन यह निष्कर्ष बेबुनियाद है क्योंकि पाराशर व्यास की पीढ़ी से सम्बन्ध रखते हैं और जैमिनि के बाद के नहीं हो सकते। भारत में ज्योतिष-ज्ञान का स्रोत पाराशर ही हैं। जैमिनि ने पाराशर की कुछ चीजों को लेकर अपनी बुद्धिमत्ता के अनुरूप नई दिशा दी है, एक नई पद्धति को विकसित किया है जो ज्योतिष विद्वानों में प्रचलित नहीं थी क्योंकि सिद्धान्तों को उन्होंने सूत्रों में प्रस्तुत किया था जिसकी अनेक व्याख्याएँ की जा सकती थीं। उसके बाद प्रेमनिधि व नीलकण्ठ आदि विद्वानों ने उन सूत्रों पर मूल्यवान् टिप्पणियाँ दी हैं, ताकि बाद के विद्वानों को उन्हें समझने में सरलता हो सके।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैमिनि पद्धति की अपनी विशिष्ट पहचान है। कारकों की प्रस्तावना की, आयु निर्धारण की विशेष पद्धति जो असाधारण है, ग्रहों के बल ज्ञात करने की सरलतम पद्धति, विभिन्न दशाओं के प्रकार, जो प्रत्यक्ष रूप में जटिल प्रतीत होते हैं। गर्भाधान कुण्डली पर बल देना, आरूढ़ लग्न की श्रेष्ठता और कारकांश को दी गई विशेष महत्ता और उसका किसी के जीविका निर्धारण में महत्त्व, आदि ने इस सम्पूर्ण पद्धति में अद्वितीय व मौलिकता का समावेश किया है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इसी कारण यह ज्योतिष-ज्ञान की भिन्न शाखा प्रतीत होती है, जबकि जैमिनि पद्धति पाराशर की ही शाखा व अंश है।

२. अन्तर

अनेक स्थलों पर पाराशर और जैमिनि के मतों में अन्तर भी दिखाई देते हैं। जैमिनि ने राशि को भाव के समानार्थक माना है, पाराशर मत से राशि एवं भाव में स्पष्ट अन्तर है। ग्रहों की आपसी दूरियों पर दृष्टियाँ निर्भर नहीं हैं। पाराशर में कारक स्थिर हैं और जैमिनि में परिवर्तनशील। पाराशरी में षड्बल की गणना विस्तृत है जबकि जैमिनि विशद गणनाओं को न लेकर ग्रहों के बल की सरल विधि बताते हैं। आयु निर्धारण में विभिन्न योगों का विवरण दशाओं की गणना व व्याख्या की विधि भी भिन्न है। वास्तव में प्रत्येक तरह से नवीन तथा परिष्कृत आधार को ही महर्षि ने ग्रहण किया है। ऐसा लगता है कि जैमिनि को ठीक प्रकार से समझने के लिए कुछ विशेष प्रकार की योग्यताएँ होनी आवश्यक हैं।

३. जैमिनि की गूढ़ता

ऋषि अपने कुछ विचारों में अस्पष्ट रहे हैं। उदाहरण के लिए अनेक दशाओं का उल्लेख करना। किन विशेष परिस्थितियों में विभिन्न दशाएँ प्रयुक्त हो सकती हैं, यह पाठक स्वयं अनुमान लगायें और जहाँ तक मैं देखता हूँ, चारों अध्यायों के किसी भी सूत्र में यह कहीं नहीं संकेत दिया गया है। मैं असावधान भी नहीं हूँ जो सुझाव यत्र-तत्र उपलब्ध हैं (उदाहरणतः अध्याय २ पाद ४ सूत्र १ में किसी) भाव के परिणाम के लिए किस विशेष दशा को प्राथमिकता दी गयी है इसका निर्देश स्पष्ट नहीं है। कुछ आधुनिक लेखकों ने प्रयोग द्वारा कुछ सूत्रों के नये संकेत प्राप्त करने के लिए अनावश्यक प्रयत्न किया है, लेकिन मैं भयभीत हूँ, यह संकेत उचित नहीं है। मेरा वाद-विवाद अनेक विद्वानों के साथ हुआ है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष की इस शाखा को मैंने पढ़ा है और साहित्य के इस विषय पर ऋषि सामान्यतया चर दशा को मान्यता देते हैं। (अनु० ७५) न केवल आयु निर्धारण के लिए अपितु किसी व्यक्ति की प्रत्येक जीवन-घटना के भविष्यफल के लिए भी यह स्वयं पाठक के निर्धारण पर निर्भर है कि वास्तविक प्रयोग में किस दशा से सन्तोषप्रद परिणाम मिलते हैं। जब भी मैंने किसी सूत्र कों कठिन, अस्पष्ट या द्व्यर्थक पाया है (शायद) अपनी अयोग्यता या असमर्थता से सूत्र का वास्तविक अर्थ समझने में पाराशर, वृद्धयवन या समकालीन जैमिनि साहित्य का सहारा लिया है।

पुस्तक का नाम ही सूचित करता है, यह अध्ययन विद्वानों का ध्यान आकर्षित करे कि जैमिनि के सिद्धान्तों का सारांश वही है जो मैंने समझा है।

अध्याय ३ पाद २ में ऋषि ने विभिन्न भावों के अनेक संयोग दिये हैं, लेकिन वह आधान लग्न से प्रयुक्त होंगे, परन्तु इस अध्ययन में मैंने उन्हें जन्मकुण्डली में प्रयुक्त करने का सुझाव दिया है, क्योंकि सभी शास्त्रीय कार्यों में, प्रश्न लग्न और आधान लग्न का संकेत है, जन्म लग्न को अपरिवर्तित रूप से मान्यता है।

४. आदर्श कुण्डली

जैमिनि की अंकीय दृष्टि ज्ञात करने के उद्देश्य से मैं कुण्डली प्रस्तुत करता हूँ। व्यक्ति जो १२-१८५६ में १२-२१ शाम को घटी १४-३० सूर्योदय के उपरान्त देशान्तर ८५ पूर्व अक्षांश १८° उत्तर में पैदा हुआ है उसका निम्न ग्रहों के स्पष्ट अंश, राशि व नवमांश कुण्डलियाँ हैं।

ग्रह	राशि	अंश	कला
रवि	कुम्भ	१	१२
चन्द्र	मेष	१८	२९
मंगल	तुला	०	५३
बुध	कुम्भ	८	२७
गुरु	कुम्भ	२१	३८
शुक्र	धनु	२०	३३
शनि	मिथुन	३	२०
राहु	मेष	६	९
केतु	तुला	६	९
लग्न	वृषभ	१३	९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	राहु चन्द्र उपपद	लग्न २	शनि
रवि बुध गुरु	राशि		आरूढ़ घटिका लग्न
शुक्र वर्णद लग्न		होरा लग्न मंगल ७ केतु	

	कारकांश लग्न गुरु	राहु होरा लग्न	
	नवमांश		
बुध	केतु घटिका लग्न	रवि शनि शुक्र, मंगल	चन्द्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय २

कारक

५. कारक

प्रत्येक ग्रह जीवन में कुछ घटनाओं का निर्देशक या कारक माना गया है। कारक के कार्य भाव के कार्यों के समान हैं। कारक जन्मपत्री विश्लेषण में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

६. प्राकृतिक कारक

पाराशर के अनुसार ग्रहों का कारकत्व स्थिर है, वह उनकी कुण्डली की स्थिति पर निर्भर नहीं होता है। निम्न कारक मुख्य हैं—

ग्रह	कारक
सूर्य	पिता
चन्द्र	माता
मंगल	भाई
बुध	व्यवसाय
बृहस्पति	सन्तान
शुक्र	पति/पत्नी
शनि	आयु
राहु	माँ की ओर के सम्बन्ध
केतु	पिता की ओर के सम्बन्ध

गोचर का परिणाम पता करने के लिए कारक मुख्य तत्त्व हैं। जब कोई भाव निर्बल हो, परन्तु उसका कारक सबल हो तो भाव का फल श्रेष्ठ कहा जायेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७. जैमिनि कारक

जैमिनि में प्रत्येक जन्मपत्री के अनुसार कारक बदलते रहते हैं। यह इस पद्धति की मुख्य बात है। कोई भी ग्रह किसी का भी कारक हो सकता है। कारक का निर्धारण किसी राशि में ग्रह के अंशों से होता है। जैमिनि में ७ मुख्य कारक हैं— १. आत्म, २. अमात्य, ३. भ्रातृ, ४. मातृ, ५. पुत्र, ६. ज्ञाति, ७. दारा।

८. आत्म कारक

मुख्य व सर्वोच्च ग्रह व निर्देशक प्रमुख होता है। जिस ग्रह की राशि में सबसे अधिक अंश होते हैं उसे आत्म कारक कहते हैं। आत्म कारक का शक्तिशाली या निर्बल होना जन्मपत्री में निर्बल व शक्तिशाली होने को दर्शाता है। इसलिए आत्म कारक की स्थिति का विशेष महत्त्व है। प्राकृतिक आत्म कारक सूर्य है।

९. अमात्य कारक

दूसरा महत्त्वपूर्ण अमात्य कारक है। राशि के अतिरिक्त जिस ग्रह के दूसरे स्थान पर अधिकतम अंश हों वह अमात्य कारक होता है। जहाँ कोई प्राकृतिक अमात्य कारक नहीं है वहाँ हम बुध को मान सकते हैं।

१०. भ्रातृ कारक

वह ग्रह जिसके अंश अमात्य कारक से कम हों वह भ्रातृभाव का कारक होता है। भाई व बहिनों से सम्बन्धित सभी घटनाएँ भ्रातृ कारक से देखी जाती हैं। मंगल भ्रातृभाव का नैसर्गिक कारक है।

११. मातृ कारक

मातृ भाव का कारक वह ग्रह होता है जिसके भ्रातृभाव के बाद अधिकतम अंश राशि में हो सकें। चन्द्र इस भाव का नैसर्गिक कारक है।

१२. पुत्र कारक

जिस राशि में मातृ कारक के उपरान्त अधिकतम अंश हों उसे सन्तान भाव का कारक कहते हैं। कुण्डली में सन्तान भाव का नैसर्गिक कारक बृहस्पति है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३. ज्ञाति कारक

पुत्र कारक से कम जिस ग्रह के अंश होते हैं वह सम्बन्धियों (ज्ञाति) का कारक होता है। रिश्तेदारों का नैसर्गिक कारक मंगल है।

१४. दारा कारक

सबसे कम अंशोंवाला ग्रह पति या पत्नी भाव का कारक होता है। प्राकृतिक रूप से दारा या कलत्र कारक शुक्र है।

१५. कारक का निर्धारण

उपरोक्त का निष्कर्ष-७ ग्रहों के भोगांश के राश्यादिमान से राशि को छोड़कर अंश, कला व विकला का ही इसमें विचार करते हैं : १. ग्रहों का इस स्थिति में अवरोह क्रम बनाकर उसको सारणीबद्ध करते हैं। २. जिस ग्रह के अंश अधिकतम होते हैं वह आत्म कारक कहलाता है। शेष का उपरोक्त क्रम रहता है। यह देखा गया है कि कारकों का क्रम बिलकुल वही है जो भावों का क्रम है, सिवाय अमात्य कारक के। वरना प्रथम भाव से सप्तम तक कारक व भाव समान हैं। इसमें द्वितीय भाव को धन व वित्त के लिए देखते हैं।

१६. अपवाद

कारक के निर्धारण में सामान्य नियम में कुछ अपवाद भी हैं। कई बार दो या अधिक ग्रहों के अंश समान होते हैं इसलिए वह एक ही स्वामित्व के अधिकारी हो जाते हैं। यह अधिकांशतः कम होता है, किन्तु ऐसा नहीं है कि बिलकुल होता ही नहीं है। इस प्रकार के अपवादों में जब दो या उससे अधिक ग्रह समान स्वामित्व ग्रहण करते हैं तो कुछ स्वामी खाली हो जाते हैं और इनकी जगह राहु तथा नैसर्गिक कारक ले लेते हैं। मान लीजिये सूर्य भ्रातृ कारक है तथा चन्द्र व मंगल के भी समान ही अंश हैं तब तीनों ग्रह भ्रातृ-कारक हो जाते हैं। इसका यह अर्थ है कि जो चन्द्र व मंगल का कारकत्व था, अब खाली है। इसमें चन्द्र को भ्रातृ कारक या मंगल को पुत्र कारक न मानकर सूर्य के कार्य को बाँटने से राहु को भ्रातृ कारक व गुरु, जो सन्तान का नैसर्गिक कारक है वहाँ पुत्र कारक होगा। मुश्किल से राहु को स्वामित्व के लिए तभी उम्मीदवार चुनते हैं जब दो या उससे अधिक ग्रहों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के समान अंश हों वरना राहु इस योग्य नहीं होता है। सूत्र सप्तानामष्टानां वा के दूसरे भाग में, जिसमें जैमिनि ने कारक निर्धारण विधि बताया है, सात ग्रह सूर्य से शनि तक और आठ ग्रह सूर्य से राहु तक, व्याख्याकारों ने इस भाग की भिन्न ढंग से व्याख्या की है। कुछ के अनुसार यहाँ ८ कारक (पितृ कारक को मिलाकर, जो जैमिनि के कई हिस्सों में नहीं है) कहे गये हैं। इस स्थिति में सूर्य से राहु तक आत्म आदि अन्य कारक अपने अंशों के अनुसार होते हैं। (राहु के अंश राशि के अन्तिम भाग से गिने जायेंगे) जबकि अन्य लोग सूर्य से शनि तक सात ही कारक मानते हैं। (पितृ कारक व्यक्त) राहु उस रिक्त स्थान को भरता है जो दो या अधिक ग्रहों के समान अंश होने पर उत्पन्न होता है। बाद का विचार अधिक उपयुक्त है क्योंकि इसमें पाराशर का भी पूर्ण सहयोग है। राहु को आठवां ग्रह केवल तभी मानना चाहिए जब दो ग्रहों के अंश समान हों।

उदाहरण १

आदर्श कुण्डली के कारक निर्धारित कीजिये।

ग्रहों के प्राप्त अंशों के अनुसार उनकी अवरोह क्रम में सूची बनायें।

ग्रह	राशि	अंश	कला
गुरु	कुम्भ (♒)	२१	३८
शुक्र	धनु (♐)	२०	३३
चन्द्र	मेष (♈)	१८	२९
बुध	कुम्भ (♒)	८	२७
राहु	मेष (♈)	६	९
केतु	तुला (♎)	६	९
शनि	मिथुन (♊)	३	२०
सूर्य	कुम्भ (♒)	१	१२
मंगल	तुला (♎)	०	५३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसमें गुरु के अधिकतम अंश हैं, वह आत्म कारक हुआ। उसके बाद अधिकतम शुक्र के अंश हैं वह अमात्य कारक है। शेष ग्रह निम्नांकित प्रकार से कारक होंगे।

कारक	स्वामी
आत्म कारक	गुरु (♃)
अमात्य कारक	शुक्र (♀)
भ्रातृ कारक	चन्द्र (☽)
मातृ कारक	बुध (☿)
पुत्र कारक	शनि (h)
ज्ञाति कारक	रवि (☉)
दारा कारक	मंगल (♂)

१७. उप-कारक

निम्न कारकों का निर्धारण उप-कारक के रूप में है, जो जैमिनि के व्याख्याकारों के अनुसार, घटनाओं के उचित निर्धारण में सहायक होता है। १. मंगल—भाई, बहन, सौतेली माँ तथा जीजा; २. बुध—मामा, भाभी, मौसी; ३. गुरु—दादा, दादी; और ४. शुक्र—सास, ससुर, नाना, नानी।

१८. लग्नों के विभिन्न प्रकार

भविष्यवाणी के लिए विभिन्न लग्नों की आवश्यकता होती है। वे हैं—

१. आरूढ़ लग्न, २. भाव लग्न, ३. वर्णद लग्न, ४. घटिका लग्न, ५. निषेक लग्न।

१९. आरूढ़ लग्न

लग्नेश लग्न से जितने भाव दूर हो उन्हें गिन लें और लग्नेश से उतने भाव गिनकर उस भाव को आरूढ़ लग्न या पाद लग्न कहते हैं। माना कि लग्न कुम्भ है और लग्नेश वृषभ में है जो लग्न से चतुर्थ भाव हुआ। अतः वृष से चतुर्थ भाव में स्थित सिंह आरूढ़ लग्न हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण २

उदाहरण कुण्डली में आरूढ़ लग्न निर्धारित कीजिये।

लग्न वृष है। लग्नेश शुक्र धनु में है जो लग्न से आठवां है। इसलिए धनु से आठवां लग्न कर्क आरूढ़ लग्न हुआ।

२०. होरा लग्न*

इष्ट घटी (जन्म समय घटी, पल में सूर्योदय से) में २.५ से भाग करके शेष में एक जोड़कर सूर्य या लग्न से गिनें, जन्म लग्न के सम या विषम होने के अनुसार, यह होरा लग्न बताता है। अंश में से शेष को घटाने पर ही लग्न का स्पष्ट अंश आ जायेगा।

उदाहरण ३

आदर्श कुण्डली में होरा लग्न निकालिये।

लग्न वृष — सम राशि

जन्म समय १४.५ घटी (सूर्योदय से)

जन्म समय (इष्ट घटी) को २.५ से भाग करें १४.५ ÷ २.५ = ५ लब्धि, शेष = ०.८

लग्न सम है लग्न से छठवां (५+१) तुला होरा लग्न। शेष ०.८ x ३० = २४°, होरा लग्न = तुला २४°

२१. भाव लग्न

सूर्य या लग्न में N + १ करने से यह राशि मिलेगी क्योंकि जन्म लग्न

---

* यह होरा लग्न गणना करने की विधि भाव लग्न आदि के लिए उचित नहीं है अगर स्पष्ट अंश लग्न के नहीं हैं। होरा लग्न के लिए प्रत्येक होरा और २.५ घटी एक राशि या ३०° के समान है। प्रत्येक घटी बराबर हैं १२°, गणित से जन्म घटी (सूर्योदय से) गुणा १२, सूर्य से गणना करने पर या लग्न से गणना पर निर्भर है कि लग्न सम है या विषम, इसीसे निकलता है होरा लग्न। उदाहरण ३ में होरा लग्न १४.५ x १२ = १७४९° लग्न से। गणित गणना से होरा लग्न की ४३.९ — १७४ = २१७.९° वृश्चिक ७.९ हुई। अगर हम लग्न से गिनते हैं जो लग्न राशि की १° से है, हमें मिलता है ३०—१७४ = २०४° = तुला २४°।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के सम या विषम के अनुसार १ N है। जन्म घटी को ५ से भाग देकर आया भागफल। शेष फल को भाव लग्न के अंश में से घटाने पर स्पष्ट भाव अंश आ जायेगा।

उदाहरण ४

आदर्श कुण्डली में भाव लग्न निकालिये।

जन्म लग्न वृष — सम राशि। जन्म घटी = १४.५

$\therefore$ N = $\frac{१४.५}{५}$ = २.९ भागफल, शेष = ०.९

$\because$ जन्म लग्न सम है, भाव तीसरा (N + १) जन्म लग्न से कर्क हुआ, शेष को ३० से गुणा करें हमें मिला २७° भाव लग्न।

भाव लग्न = कर्क २७°।

२२. वर्णद लग्न

अगर जन्म लग्न विषम राशि का है तो मेष राशि से जन्म लग्न तक सीधी गणना करते हैं। अगर जन्म लग्न सम राशि का है तो मीन से जन्म लग्न तक विपरीत गणना करते हैं। इसे ए करिये। इसी तरह होरा लग्न विषम है तो मेष से जन्म लग्न तक इसे बी करिये। अगर जन्म लग्न व होरा लग्न समान हैं अर्थात् दोनों विषम राशि की हैं या सम राशि की तो ए+बी करिये। अगर दोनों में से एक सम दूसरी विषम है तो ए+बी करिये और अगर इस प्रकार सी द्वारा जो राशि प्राप्त होगी उसे जन्म लग्न के विषम होने पर सीधी व सम होने पर मीन से विपरीत गणना करके उससे वर्णद लग्न बनेगी। १२ से अधिक होने पर १२ का अंश संख्या सी में भाग दे दीजिए।

उदाहरण ५

आदर्श कुण्डली में वर्णद लग्न ज्ञात कीजिये।

$\because$ जन्म लग्न वृष — सम राशि

होरा लग्न तुला — विषम राशि

$\therefore$ ए = ११ (मीन से जन्म लग्न तक विपरीत गणना करके)

बी = ७ (मेष से होरा लग्न तक सीधी गणना करके)

$\because$ जन्म लग्न सम राशि का तथा होरा लग्न विषम राशि का है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

∴ ए—बी = सी (१२ का गुणन करके)

११—७ = ४

क्योंकि जन्म लग्न सम राशि मीन से विपरीत गणना करके त्रतुर्थ आया; अतः धनु वर्णद लग्न है।

२३. वर्णद अन्य राशियों के लिए

जैसे हम लग्न के लिए वर्णद की गणना करते हैं उसी प्रकार ११ भावों के लिए उन्हें लग्न मानकर वर्णद निकालते हैं। अगर दो राशि का वर्णद चाहिए तो उसे लग्न मानकर होरा लग्न की दूसरी राशि को लग्न मानकर गणना की जा सकती है। और तीसरी के लिए वर्णद तथा होरा लग्न की ३ को लग्न मान लेते हैं। इसी तरह दूसरे भावों के लिए भी करते हैं।

उदाहरण ६

आदर्श कुण्डली में दूसरी राशि का वर्णद निकालिये।

दूसरी राशि मिथुन — विषम राशि है।

दूसरी होरा लग्न राशि — वृश्चिक, सम राशि है।

बी = ३ (मेष से लग्न तक सीधी गणना, दूसरी राशि)

बी = ५ (मीन से लग्न तक विपरीत गणना होरा लग्न की दूसरी राशि)

ए = ६ = ५—३ = २ दोनों का अन्तर

दूसरी राशि विषम है अतः मेष से सीधी गणना करने पर, वृष दूसरी राशि का वर्णद लग्न है। विभिन्न राशियों की वर्णद की गणना वर्णद दशा के लिए जरूरी है।

२४. घटिका लग्न

जन्म घटी को १२ से भाग करें। भागफल को छोड़कर शेषफल में जमा करें। जन्म लग्न से गिनने पर घटिका लग्न मिलता है। शेषफल का दशमलव के उपरान्त की संख्या को अंश में से घटाने पर स्पष्ट देशान्तर आता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण ७

आदर्श कुण्डली में घटिका लग्न ज्ञात कीजिये।

जन्म लग्न—वृष

जन्म समय घटी = १४.५

जन्मघटी को १२ से भाग करें

१४.५ ÷ १२ = २.५ शेषफल

पूर्ण संख्या है २, अपूर्ण संख्या ०.५। घटिका लग्न वह राशि है जो N + १ से आएगी = (२ + १) जो जन्म लग्न से ३ है अर्थात् कर्क। शेष भाग या अपूर्ण संख्या ०.५ अंश में से घटाने पर १५°।

घटिका लग्न = कर्क १५°

२५. निषेक और आधान लग्न

यह राशि गर्भाधान के समय उदय होती है। इसमें भी सर्वतः आधुनिक ज्योतिष के विद्यार्थियों द्वारा, जो पश्चिम की ओर ज्योतिष प्रेरणा के लिए देखते हैं, यह माना जाता है कि हमारे पूर्वजों की ज्योतिष पश्चिम में विकसित हुई थी। इस तरह की भ्रांति कुछ अज्ञानता के कारण तथा कुछ भ्रांतियों के पूर्व सह-सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकते थे इसके कारण उत्पन्न हुई हैं। यह अल्पज्ञानी विद्यार्थी के लिए निराशाजनक है कि हम बहुतायत में प्रसंग पाते हैं। जो लग्न तथा जन्म लग्न के सम्बन्ध में और उनके किस तरह निषेक लग्न विचारणीय हैं। किसी व्यक्तिगत भविष्यवाणी को भी पूर्णतः विश्वास के साथ प्रस्तुत करता है। मैं इस जैमिनि पद्धति में निषेक लग्न प्रस्तुत करना प्रासंगिक नहीं समझता। मैं इस विषय में केवल औपचारिक प्रसंग दे रहा हूँ जो पाराशर ने दिये हैं। विस्तृत जानकारी के लिए पाठक बृहत्पाराशर होरा पढ़ें।

२६. पाराशर पद्धति

जैमिनि ने जन्म समय से कैसे गर्भाधान समय ज्ञात करें, इसका कोई तरीका नहीं बताया है? इसीलिए मैं पाराशर का तरीका ले रहा हूँ। जो ऐसे है — सूर्य से माँदी की दूरी प्रथम भाव से नवम भाव की दूरी में जमा करें। सूर्य की राशि के अनुसार आदि से विपरीत गणना करने पर महीने का अन्तर आयेगा जो जन्म-समय व गर्भाधान के मध्य का होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२७. समरसिंह पद्धति

मनुष्य जातक में समरसिंह द्वारा आधान लग्न का उल्लेख किया गया है जिसमें कहा है कि लग्न के अंश तथा चन्द्र के अंश जब जन्मकुण्डली में समान हों तब गर्भावस्था के दिन २७३ होते हैं। जब चन्द्र विपरीत हो तो गर्भावस्था के दिन २५८ होते हैं।

२८. विद्यमान पद्धति की असन्तोषजनक प्रकृति

जन्म लग्न से आधान लग्न ज्ञात करने के सभी तरीके अपनी असमर्थता के कारण प्रश्नचिह्न लगाये हुए हैं। उसे सार्वभौमिक मान्यता दिलाने के लिए बहुत अनुसंधान कार्य करने की आवश्यकता है। बृहज्जातक में बराहमिहिर ने पाठ ४ में जन्म लग्न व आधान लग्न का संकेत दिया है। किसी भी प्रभावी व क्रमबद्ध तरीके के अभाव में हम आधान लग्न को जैमिनि के अध्याय ४ में कुण्डली पर लगा सकते हैं जो योग जैमिनि ने दिया है। जन्म समय से गर्भाधान के समय को निकालने का सिद्धान्त और गर्भाधान से जन्म समय निकालने की विधि खगोलीय जीवशास्त्र है और यह क्षेत्र अनुसन्धानकर्ता के लिए खुला है।

२९. प्राणपद

प्राणपद का सिद्धान्त उस समयावधि के नियम पर निर्भर है जिसके अनुसार मनुष्य, जानवर तथा सब्जियों का जन्म एक निश्चित अन्तराल के बाद होता है। परिणामतः यहाँ जानने योग्य सम्बन्ध हैं जन्म लग्न व प्राणपद राशि में। अच्छे ज्योतिषी उत्तर भारत में स्पष्ट जन्म समय के लिए प्राणपद लग्न को मुख्य आधार बनाते हैं। कोई भी एक तरीक़ा सर्वसम्मत या सर्वमान्य नहीं हुआ है। प्रत्येक कुण्डली में व्यक्तिगत सभी तथ्य चाहिए। पाराशर ने स्पष्ट कहा है कि जन्म समय संशोधन के लिए प्राणपद चन्द्र तथा गुलिक का विचार करना चाहिए।

३०. प्राणपद निक़ालने का तरीका

प्राणपद प्राप्त कर सकते हैं जन्म समय को विघटी में दुगुना करके (अ) सूर्य देशान्तर, (ब) सूर्य देशान्तर + २४०°, (स) सूर्य देशान्तर + १२०°। सूर्य का चर, स्थिर, द्विस्वभाव राशि में होना। ३००° का गुणनफल लेकर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण ८

आदर्श कुण्डली में प्राणपद ज्ञात कीजिये।

जन्म समय = घ० १४.३० = ८७० विघटी

सूर्य देशान्तर = ३०१° १२ और १° १२ कुम्भ में

(२ × जन्म समय विघटी में [+] सूर्य देशान्तर + २४०°)

= (२ × ८७० [+] ३०१° १२ + २४०°)

= १७४०° + ५४१° १२ = २२८१° १२

= ३६० का गुणनफल करके १२१° १२ प्राणपद लग्न = सिंह १° १२।

३१. द्वार राशि

वह राशि जिसमें दशा शुरू होती है या वह राशि जिसकी दशा का विचार करना है द्वार राशि है। माना कि मेष राशि की दशा मारक ज्ञात करने के लिए विचारणीय है या कोई और घटना के लिए भी, तो यह राशि द्वार राशि हुई।

३२. बाह्य राशि

लग्न से द्वार राशि जितने भाव दूर होगी बाह्य राशि द्वार राशि से उतने ही दूर होती है। माना कि लग्न कर्क है और मारक ज्ञात करने के लिए तुला राशि का विचार करना है, तब तुला द्वार राशि है। तुला लग्न से चतुर्थ है तो तुला से चतुर्थ अर्थात् मकर बाह्य राशि हुई। इसलिए लग्न से २ अगर द्वार है तो बाह्य तीसरी हुई।

अगर द्वार	३ है तो बाह्य हुई	पाँचवीं
अगर द्वार	४ है तो बाह्य हुई	सातवीं
अगर द्वार	५ है तो बाह्य हुई	नौवीं
अगर द्वार	६ है तो बाह्य हुई	ग्यारहवीं
अगर द्वार	७ है तो बाह्य हुई	पहली
अगर द्वार	८ है तो बाह्य हुई	तीसरी
अगर द्वार	९ है तो बाह्य हुई	पाँचवीं
अगर द्वार	१० है तो बाह्य हुई	सातवीं
अगर द्वार	११ है तो बाह्य हुई	नौवीं
अगर द्वार	१२ है तो बाह्य हुई	ग्यारहवीं
अगर द्वार	१ है तो बाह्य हुई	पहली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३३. पाक तथा भोग राशि

द्वार राशि को पाक राशि भी कहते हैं तथा बाह्य राशि को भोग राशि भी कहते हैं। ये दोनों राशियाँ आयु निर्धारण में काम आती हैं।

३४. गुलिक

गुलिक की स्थिति को जैमिनि ने व्यवसाय ज्ञात करने के लिए मुख्य बताया है। पाठक गुलिक को मान्दी के साथ न जोड़ें। गुलिक की स्थिति दिन को ८ भागों में विभक्त करने से मिलती है। दिन के पहले ७ भाग, ग्रहों से शासित हैं। पहला भाग उस वार के स्वामी का होता है। आठवें का कोई स्वामी नहीं होता। शनि के भाग में जो राशि उदय हो रही होती है वह गुलिक के भोगांशों को बताती है। माना कि शुक्रवार के दिन ३० घटी है और गुलिक की स्थिति ज्ञात करनी है। प्रत्येक भाग ३ १/४ घटी का होगा। पहले भाग का स्वामी वार का स्वामी शुक्र होगा। दूसरे भाग का ७ १/२ घटी तक शनि, इसलिए गुलिक का देशान्तर सूर्योदय के उपरान्त ७ १/२ तक होगा।

रात के जन्म में रात के अन्तराल को ८ भागों में विभक्त कर लें। पहले सात भाग सातों ग्रहों से शासित हैं, उस वार से पाँचवें वार के स्वामी से पहला भाग शुरू होगा। आठवें का कोई स्वामी नहीं है। यहाँ भी गुलिक की स्थिति शनि की अवधि समाप्त होने के बाद शुरू होगी।

उदाहरण ९

आदर्श कुण्डली में गुलिक का मान ज्ञात कीजिये।

दिन की अवधि — २८.४ घटी, ८ से भाग करने पर ३.५५ घटी, जन्मवार है मंगल।

गुलिक भाग होगा १४.१२ घटी से १७.४५ घटी तक

गुलिक की स्थिति शुरू होगी १७.४५ घटी से जो मिथुन ४° २६ है।

३५. ब्रह्मा

स्थिर दशा निकालने के लिए (श्लोक ९१) और मारक की अवधि के लिए ब्रह्मा मुख्य भूमिका निभाता है। ब्रह्मा वह ग्रह होगा जो निम्न विशेषताओं की पूर्ति करेगा—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१. आत्म कारक से ८वें भाव का स्वामी अगर वहाँ से आठवें हो तो वह ब्रह्मा की स्थिति के लिए उपयुक्त है।

२. लग्न और सप्तम भाव में जो अधिक बलवान् हो उसे पता करें तथा ए कहें। ए से ६, ८, १२ में से जो सबसे शक्तिशाली ग्रह हो उसे बी कहें। बी ही ब्रह्मा के लिए उपयुक्त होगा, अगर वह विषम राशि में राशि चक्र के आधे दृश्य भाग में है। लग्न से आधा दृश्य भाग होगा १२ से ७ भाव तक। सप्तम से दृश्य अर्धभाग ६ से लग्न तक, विपरीत गणना द्वारा होगा।

३६. अपवाद

अगर शनि, राहु या केतु श्लोक ३५ के अनुसार ब्रह्मा बनते हैं तो वह नाममात्र के ब्रह्मा होंगे और स्वयमेव अयोग्य हो जायेंगे। वास्तविक ब्रह्मा नाममात्र ब्रह्मा से छठा ग्रह होगा। इनकी गणना का क्रम होगा सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु।

३७. ब्रह्मा का चुनाव

जब दो या दो से अधिक ग्रह ब्रह्मा के लिए उपयुक्त हों तो उसे चुनें जिसके अंश सर्वाधिक हों। राहु के लिए उस राशि के अन्तिम बिन्दु से गणना करें। जब देशान्तर के कारण दो ग्रहों के समान अंश से दोनों ब्रह्मा के लिए योग्य हों तो राशि बल से चुनाव करें (देखें श्लोक ५२)।

उदाहरण १०

आदर्श कुण्डली में ब्रह्मा का चुनाव कीजिये।

लग्न व सप्तम में लग्न शक्तिशाली है = ए (उदाहरण १८)

लग्न से ६, ८, १२ के स्वामी शुक्र, गुरु, मंगल, बृहस्पति बलवान् हैं क्योंकि उनके देशान्तर अधिक हैं। (बी) गुरु विषम राशि में है तथा प्रत्यक्ष व दृश्य राशि चक्र में है। अतः गुरु ब्रह्मा है।

अन्य कोई ग्रह इस पद के योग्य नहीं है।

३८. महेश्वर

आत्म कारक से अष्टमेश महेश्वर होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगर आत्म कारक से अष्टमेश उच्च का हो या अपने भाव में हो तो महेश्वर आत्म कारक से अष्टमेश व द्वादशेश से बलवान् होगा।

अगर राहु या केतु आत्म कारक के साथ हों या आत्म कारक से आठवें हों तो सूर्य से छठा ग्रह महेश्वर होगा। जब दो या दो से अधिक ग्रह महेश्वर के लिए प्रतियोगी हों तो बलवान् का चुनाव करें।

उदाहरण ११

आदर्श कुण्डली में महेश्वर ज्ञात कीजिये।

आत्म कारक से अष्टमेश बुध है।

इसलिए वह महेश्वर है। न तो अष्टमेश उच्च का है न अपने घर का है, न ही राहु या केतु आत्म कारक के साथ हैं और न उससे आठवें हैं। यहाँ कोई और प्रतियोगी भी नहीं है।

३९. रुद्र

लग्न से अष्टमेश व द्वितीयेश में से जो बलवान् हो वह रुद्र होगा। अन्य जो कमजोर हो अगर अशुभ ग्रहों से देखा जाता हो तो नाममात्र का या प्रतिस्थापित रुद्र होता है।

उदाहरण १२

आदर्श कुण्डली में रुद्र बताइये।

लग्न के अष्टमेश व द्वितीयेश गुरु व बुध हैं। गुरु बुध से बलवान् है। अतः गुरु रुद्र है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय ३

दृष्टि और अर्गला

४०. दृष्टि की गणना

हिन्दू ज्योतिष के अनुसार दृष्टि की गणना सामान्यतया राशि से की जाती है। यहाँ तक कि दृगबल व दृष्टिबल को ज्ञात करने में भी दृष्टियों के कोणों का भी विचार किया जाता है। कोई भी ग्रह अपने से अगले ग्रह या भाव को, जो ३०° आगे है और ६०° पीछे है, उसे नहीं देखता। ग्रह के ३०° आगे से दृष्टि शुरू होकर ३००° तक जाती है।

४१. जैमिनि की दृष्टियाँ

जैमिनि पद्धति में दृष्टिकोणों को अनदेखा किया जाता है। सभी चर राशियाँ सिर्फ अपने से अगली को छोड़कर स्थिर राशियों को देखती हैं। सभी स्थिर राशियाँ अपने से पिछली को छोड़कर चर राशियों को देखती हैं। द्विस्वभाव राशियाँ द्विस्वभाव को देखती हैं। मेष राशि वृष के अतिरिक्त सिंह, वृश्चिक व कुम्भ को देखती है। इसी तरह वृष, मेष को छोड़कर कर्क, तुला व मकर को देखती है। विभिन्न दृष्टियों को आसानी से समझने के लिए सूचीबद्ध किया गया है —

दृश्य राशि	दृष्ट राशि	दृश्य राशि	दृष्ट राशि
मेष	सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ	तुला	कुम्भ, वृष तथा सिंह
वृष	कर्क, तुला तथा मकर	वृश्चिक	मकर, मेष तथा कर्क
मिथुन	कन्या, धनु तथा मीन	धनु	मीन, मिथुन तथा कन्या
कर्क	वृश्चिक, कुम्भ तथा वृष	मकर	वृष, सिंह तथा वृश्चिक
सिंह	तुला, मकर तथा मेष	कुम्भ	मेष, कर्क तथा धनु
कन्या	धनु, मीन तथा मिथुन		

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४२. दृष्टि की श्रेणियाँ

दूसरे शब्दों में चर राशि या उसमें ग्रह अपने से पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें भाव को देखेगा। स्थिर राशि या उसमें ग्रह अपने से तीसरे, छठें, नौवें भाव को देखेगा। द्विस्वभाव राशि या उसमें स्थित ग्रह अपने से चौथे, सातवें, दसवें को देखेगा। यही दृष्टि की श्रेणी कही जा सकती है।

(ए) चर राशियाँ	१२०°,	२१०°,	३००°
(बी) स्थिर राशियाँ	६०°,	१५०°,	२४०°
(सी) द्विस्वभाव राशियाँ	९०°,	१८०°,	२७०°

उदाहरण १३

आदर्श कुण्डली में दृष्टियाँ सारणीबद्ध कीजिये।

सूर्य कुम्भ स्थिर राशि में है, इसलिए मेष (राहु व चन्द्र को भी जो उसमें हैं) कर्क तथा तुला और मंगल व केतु को भी देखेगा। निम्न सारणी आदर्श कुण्डली में दृष्टियों की है।

दृश्य ग्रह	दृष्ट ग्रह	दृष्ट राशियाँ
सूर्य	राहु, चन्द्र, मंगल, केतु	मेष, कर्क, तुला
चन्द्र	सूर्य, बुध, गुरु	सिंह, वृश्चिक, कुम्भ
मंगल	सूर्य, बुध, गुरु, लग्न	कुम्भ, वृष, सिंह
बुध	सूर्य के समान	सूर्य के समान
गुरु	सूर्य के समान	सूर्य के समान
शुक्र	शनि	मीन, मिथुन, कन्या
राहु	चन्द्र के समान	चन्द्र के समान
केतु	चन्द्र के समान	मंगल के समान

४३. अर्गला

ग्रह व राशियाँ अपनी स्थिति के अनुसार दूसरी राशियों व ग्रहों को देखती हैं। अपनी स्थिति से ये दृष्टियाँ शुभ व अशुभ को, उस ग्रह व राशि से जो दूसरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थान पर स्थित ग्रहों को देख रहा हो, प्रभावित करती हैं। यह देखनेवाला या प्रभावित करनेवाला माध्यम अर्गला कहलाता है।

४४. अर्गला का निर्माण

देखनेवाले ग्रह से अगर चौथे, दूसरे, ग्यारहवें, पाँचवें स्थान में (केतु के अतिरिक्त) ग्रह हों तों वह अर्गला बनाते हैं। केतु से नवम ग्रह अर्गला होता है।

४५. शुभ अर्गला

नैसर्गिक शुभ ग्रह उपरोक्त कहे गए स्थानों में हों तो वह शुभ अर्गला होते हैं।

४६. अशुभ अर्गला

नैसर्गिक क्रूर ग्रह ४४ अनुच्छेद में हो तो अशुभ अर्गला या अवरोधकर्ता होता है।

नैसर्गिक क्रूर ग्रह तृतीय भाव में भी अर्गला हो सकते हैं। इस सूत्र की इस बिन्दु पर टीकाकारों द्वारा की गई व्याख्या न तो स्पष्ट है और न प्रभावी ही। सर्वसम्मत मत यही है कि अनेक क्रूर ग्रह तीसरे में हों तभी अर्गला होती है, एक या दो से अर्गला नहीं होती।

४७. अर्गला का विरोध

देखनेवाले ग्रह से अगर चौथे, दूसरे, ग्यारहवें, पाँचवें स्थान में ग्रह हो तो अर्गला उत्पन्न होती है और अगर दृश्य ग्रह से दसवें, बारहवें, तीसरे, नौवें भाव में ग्रह हों तो समाप्त हो जाती है। केतु के लिए ग्यारहवें स्थान में ग्रह हो तो अर्गला होती है तथा पाँचवें स्थान में ग्रह होने पर समाप्त हो जाती है।

इस रूप में वही तथ्य दुबारा लेकर हम कह सकते हैं कि चतुर्थ स्थान में ग्रह होने से अर्गला होती है और दसवें में भी होने से समाप्त हो जाती है; दूसरे भाव में ग्रह की स्थिति जो अर्गला बनाती है बारहवें भाव में ग्रह की स्थिति उसे समाप्त कर देती है। इसी तरह तीसरे की ग्यारहवें से तथा पाँचवें की नौवें की स्थिति से समाप्त हो जाती है। दूसरे शब्दों में चौथे, दूसरे, ग्यारहवें, पाँचवें से बनी अर्गला के विरोधी स्थान दसवें, बारहवें, तीसरे, नौवें हैं। यह देखा गया है कि तृतीय में क्रूर ग्रह से बनी अर्गला समाप्त नहीं होती। यह शुद्ध अशुभ अर्गला है जो अनेक ग्रहों की वहाँ स्थिति से बनती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निम्न सारणी अर्गला प्रश्न को सरल व स्पष्ट कर देती है —

अर्गला स्थान	विरोधी स्थान	अर्गला प्रकृति
४	१०	शुभ
२	१२	व
११	३	अशुभ
३	—	अशुभ
५	९	शुभ
९ केतु	५	व
		अशुभ

अगर अर्गला बनानेवाला ग्रह अर्गला काटनेवाले ग्रह से बलवान् हो या अंश अधिक हो तो अर्गला समाप्त नहीं होती।

४८. अर्गला का महत्त्व

शुभ परिणाम उस राशि की दशा में अवश्य मिलते हैं जिसमें शुभ अर्गला हो (देखें अनुच्छेद १२८)। अशुभ परिणाम उस राशि की दशा में अवश्य मिलते हैं जिसमें पाप अर्गला हो। अगर शुभ अर्गला हो और पदलग्न, लग्न, सप्तम में हों तथा समाप्त न होती हो तो व्यक्ति बहुत भाग्यशाली व धनी होता है।

४९. अर्गला चक्र

यह प्रत्येक राशि के अनुसार ग्रहों की स्थिति (अनुच्छेद ४४) को देखकर बनायी जा सकती है। एक कुण्डली में मेष से ग्रह ४ में है जो अर्गला बना रहा है तो हम ग्रह को अर्गला चक्र में मेष राशि में रख सकते हैं।

उदाहरण १४

आदर्श कुण्डली में अर्गला व उनकी प्रभावहीनता या समाप्ति को निकालिये।

सूर्य आदर्श कुण्डली में लेने पर हमें चौथे तथा दूसरे भाव रिक्त मिलते हैं। तीसरा भाव अधिक क्रूर ग्रह से भरा नहीं है। पंचम में शुक्र शुभ अर्गला बना रहा है। पंचम में शनि अशुभ अर्गला बना रहा है और सूर्य से नवम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में मंगल होने से वह समाप्त हो गयी है। एकादश में शुक्र की शुभ अर्गला तृतीय में चन्द्र व केतु से समाप्त हो गई है। शनि से (३.२०) तथा शुक्र (२०.३३) से बनी अर्गला के अंश उनके समाप्तकर्ता ग्रह मंगल (०.५३) तथा चन्द्र (१८.२९) से अधिक होने के कारण अर्गला समाप्त नहीं हुई है।

५०. आदर्श कुण्डली में अर्गला चार्ट

जो ग्रह कोष्ठक में नहीं हैं वे अर्गला बना रहे हैं तथा जो कोष्ठक में हैं वे अर्गला समाप्त कर रहे हैं। जो ग्रह (बड़े अक्षरों में) लिखे हैं वे वास्तव में अपनी विरोधी प्रभावशक्ति रखते हैं। मेष राशि से सूर्य, बुध व गुरु अर्गला बना रहे हैं जिसको शनि पूरी तरह समाप्त नहीं कर सका है। वृष राशि से शनि अर्गला बना रहा है और चन्द्र उसे समाप्त कर रहा है। चन्द्र शनि से बलवान् है क्योंकि उसके देशान्तर अधिक हैं। यहाँ अर्गला पूर्णतः समाप्त है। मिथुन से अर्गला बन रही है। (ए) राहु और चन्द्र (बी) मंगल व केतु। राहु व चन्द्र से बनी अर्गला समाप्त नहीं हो रही है, लेकिन मंगल व केतु से बनी अर्गला (मिथुन से पाँचवीं) सूर्य से कट रही है। (बुध व गुरु से भी) जो मिथुन से नौवें हैं। लेकिन वास्तव में अर्गला पूरी तरह नहीं कट रही है क्योंकि केतु गुरु से और अर्गला विनाश करनेवाला बुध मंगल से बलवान् है।

ग्रहों की आदर्श कुण्डली में अर्गला

ग्रह	अर्गलाकर्ता ग्रह	अर्गला समाप्तकर्ता
सूर्य	शनि, शुक्र	मंगल, केतु, चन्द, राहु
चन्द्र	सूर्य, बुध+, गुरु+	शनि
मंगल	सूर्य, बुध+, गुरु+	शनि
बुध	सूर्य के समान	सूर्य के समान
गुरु	सूर्य के समान	सूर्य के समान
शुक्र	चन्द्र+, राहु+, केतु+, मंगल	सूर्य, बुध, गुरु
शनि	चन्द्र+, राहु+, केतु+, मंगल	सूर्य, बुध, गुरु
राहु	चन्द्र, राहु, केतु, मंगल	सूर्य, बुध, गुरु
केतु	शनि	सूर्य, बुध, गुरु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरणतः मंगल, रवि, बुध व गुरु पाँचवें में हैं, जबकि नौवें में ग्रह हैं फिर भी वह पूरी तरह अर्गला समाप्त नहीं करता क्योंकि वह निर्बल या प्रभावहीन है।

नोट — *सप्तम में सूर्य बुध व गुरु से बनी अर्गला जातक को धनी, भाग्यशाली व सौभाग्यवान् बनाती है।*

पृष्ठ संख्या २३ की टिप्पणी —

* धन चिह्नवाले ग्रह जो अर्गला बना रहे हैं वह अर्गला समाप्त नहीं हो रही है क्योंकि उसे काटनेवाला ग्रह निर्बल है या समाप्ति स्थान पर नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय ४

ग्रह तथा राशि बल

५१. बल के स्रोत

पाराशर में, एक ग्रह का बल अंकों से ज्ञात कर सकते हैं जिसे छह प्रकार से ज्ञात किया गया है। यह पूरे विस्तार के साथ मेरी पुस्तक 'ग्रह तथा भाव बल' में वर्णित है इसलिए उसका यहाँ मैं वर्णन नहीं करना चाहता। षड्बल की गणना में अनेक हिसाब हैं। दूसरी तरफ जैमिनि ने उन कठिन गणनाओं को छोड़कर ग्रह व भाव बल के लिए जो सिद्धान्त बतलाये हैं वे सरल हैं। आयु ज्ञात करने के लिए ग्रह व भाव बल मुख्य भूमिका निभाते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि जैमिनि ने राशियों के बल पर अधिक जोर दियां है जो एक या अधिक ग्रह के उसमें रहने मे आती है। जैमिनि ने राशि और भाव के मध्य भेद को नहीं माना है। इन दोनों का अर्थ जैमिनि सिद्धान्त में समानार्थक है।

५२. राशि बल के स्रोत

जैमिनि सूत्र के अध्याय २ पाद ३ में ग्रह व राशि के बल का संकेत मिलता है। सम्बन्धित सूत्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि राशि बल छह श्रेणियों में वर्गीकृत है : (१) आत्म कारक बल, (२) संयुक्त बल, (३) दृष्टि या स्थिति बल, (४) स्वामी बल, (५) विषम राशि बल, (६) आत्म कारक की स्थिति से बल। हम इन सब को स्पष्ट वर्णित करेंगे। मेरा अपना संशोधित तरीका है जो अनुच्छेद ६२ में पाठक पढ़ेंगे।

५३. आत्म कारक बल

कुण्डली में आत्म कारक सबसे विशेष ग्रह होता है जिस राशि में वह हो वह सबसे बलवान् होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५४. संयुक्त बल

यह किसी राशि में ग्रह की स्थिति या अनुपस्थिति से उत्पन्न होता है और इससे राशि बल मापा जाता है।

(ए) जिस राशि में ग्रह नहीं है उसकी अपेक्षा वह राशि बलवान् होती है जिसमें ग्रह हैं।

(बी) जिस राशि में जितने अधिक ग्रह हों, वह उस राशि से बलवान् होगी जिसमें उससे कम ग्रह हैं।

(सी) अगर राशियों में ग्रहों की संख्या समान हो तो उनका बल उनके उच्च, मूल, त्रिकोण, मित्र, शत्रु व समभाव से देखें। जो ग्रह उच्च का होगा वह सबसे बलवान् होगा, मूल त्रिकोणवाला उससे कम बलवान् होगा, अपने भाव में बलवान् होगा, मित्र के घर में उससे कम बलवान् होगा, सम राशि में उससे कम, जो शत्रु भाव या नीच राशि में होगा वह सबसे कम बलवान् होगा। अगर दो राशियों में दो-दो ग्रह हैं और उनमें से एक में एक नीच का तथा दूसरे में एक उच्च का हो तो जिस राशि में उच्च का ग्रह है वह बलवान् होगी।

(डी) अगर ए, बी, सी में से भी दो राशियों का बल समान है तो उनका बल चर, स्थिर व द्विस्वभाव प्रकृति से देखते हैं। चर राशि से स्थिर राशि बलवान् होती है तथा स्थिर से द्विस्वभाव राशि बलवान् होती है।

५५. स्थिति व दृष्टि बल

राशियाँ गुरु, बुध और अपने स्वामी से युक्त अथवा दृष्ट होकर बलवान् होती हैं।

५६. स्वामी द्वारा बल

दो राशियों में अनुच्छेद ५९, ६० के अनुसार जिसका स्वामी अधिक बलवान् है वही राशि दूसरी की अपेक्षा अधिक बलवान् होती है।

५७. विषम राशियों का बल

दो विषम राशियों में जब बल मापने का प्रश्न आये तो जिसके दोनों तरफ कोई भी ग्रह हो वह बलवान् होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५८. आत्म कारक की स्थिति से

वह राशि जिसका स्वामी आत्म कारक से केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम में हो उसे क्रमशः पूर्ण, आधा व सबसे कम बल मिलता है।

५९. ग्रह बल के स्रोत

ग्रह बल के दो स्रोत हैं : (१) अंश बल, (२) मूल त्रिकोण बल।

६०. अंश बल

अंश का अर्थ भोगांश तथा बल का अर्थ शक्ति है। ग्रह जिसके अंश (राशि के शुरू से) दूसरे ग्रह से अधिक हों वह बलवान् होता है। माना कि सूर्य के अंश २५° मेष में तथा मंगल के १८° कर्क में हैं। इस स्थिति में सूर्य मंगल से बलवान् है।

६१. मूल त्रिकोण बल

ग्रह के शत्रु क्षेत्र, नीच, सम, मित्र क्षेत्र, स्वराशि, मूल त्रिकोण एवं उच्च राशि में होने से मूल त्रिकोण बल होता है।

जो ग्रह उच्च का हो वह सबसे बलवान् तथा जो नीच का हो वह सबसे निर्बल होता है। उच्च से नीच तक बल अवरोह क्रम में घटता है —

उच्च, मूल त्रिकोण, स्वराशि, मित्र-राशि, सम-राशि, शत्रु-राशि, नीच-राशि ग्रह के बल को ज्ञात करने के लिए उपरोक्त नियम ध्यान में रखें। सामान्यतः ज्योतिष में प्रत्येक को सिद्धान्तों का विशेष अध्ययन करना चाहिए। उन्हें स्मरण रखना चाहिए और अनेक जन्मपत्रियों पर लगाकर अपना प्रयोगात्मक अभ्यास पूरा रखना चाहिए।

उदाहरण १५

आदर्श कुण्डली में राशि बल ज्ञात करें।

(१) मेष तथा तुला

(ए) दोनों राशियों में दो-दो ग्रह हैं तथा दोनों चर हैं।

(बी) दोनों गुरु व बुध से दृष्ट हैं।

(सी) चन्द्र मेष में सम राशि में है तथा मंगल तुला में सम राशि में है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(डी) मेष का स्वामी मंगल तथा तुला का स्वामी शुक्र आत्म कारक से आपोक्लिम व पणफर में है। तुला मेष से बलवान् है।

(ई) तुला का स्वामी शुक्र मेष के स्वामी मंगल से बलवान् है। अतः मेष से तुला बलवान् है।

(२) मिथुन और धनु

(ए) दोनों में एक-एक ग्रह हैं तथा दोनों द्विस्वभाव हैं।

(बी) मिथुन शुक्र से दृष्ट है जो मित्र है। धनु सम ग्रह शनि से दृष्ट है।

(सी) शनि मिथुन मित्र राशि में है, शुक्र सम भाव में है।

(डी) बुध मिथुन का स्वामी आत्म कारक से केन्द्र में है। धनु का स्वामी गुरु स्वयं आत्म कारक है।

(ई) धनु का स्वामी गुरु मिथुन से बलवान् है। अतः धनु मिथुन से बलवान् है।

(एफ) कुम्भ में सबसे अधिक ग्रह हैं और आत्म कारक भी हैं। सूर्य व बुध भी वही हैं। इसलिए यह सबसे बलवान् राशि है।

६२. राशि बल का अंकीय माप

ऊपर मैंने राशि स्रोत को स्पष्ट रूप से बता दिया है। कुछ पद्धतियाँ जो पाराशर ने बताई हैं उनको छोड़कर सभी पर विचार कर लिया है। क्रमबद्ध करके यह कहना कठिन होगा कि कौन-सी राशि सबसे बलवान् है और कौन-सी सबसे निर्बल। जैमिनि सिद्धान्त की दशा भविष्यवाणी की तकनीक राशि तथा राशि बल पर निर्भर है। ५२ से ६१ तक के अनुच्छेद जैमिनि की पद्धति से हटे हुए हैं, सही अर्थों में पाराशरी सिद्धान्तों को ग्रहण किया है। मैंने विचार करके संख्यासूचक राशि बल को ज्ञात करने का संशोधित निम्न तरीका निकाला है। पाठक ध्यान रखें कि यह विधि बल को ज्ञात करने का सम्भव समाधान है और इसे वे, जो जैमिनि विचार से हटना नहीं चाहते हैं छोड़ सकते हैं। यह अपने गुण के अनुसार दिया गया है। अनुच्छेद ५२ से ६१ में स्पष्ट विवरण है कि राशि बल बनता है।

(१) स्वामी के बल से (२) राशि के अपने बल से जो — (ए) चर स्थिर व द्विस्वभाव राशि प्रकृति से जिसे मैंने चर बल कहा है, (बी) वह राशि जो गुरु,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध या अपने स्वामी से दृष्ट है, (सी) राशि जिसमें एक से अधिक ग्रह हैं — स्थित बल। इसलिए हम कह सकते हैं राशि का कुल बल है, (ए) उसका स्वयं का बल जमा, (बी) स्वामी का बल। हम यहाँ दोनों अलग-अलग लेंगे।

६३. स्वामी का बल

जहाँ तक स्वामी के बल का सम्बन्ध है यह माना जाता है कि बल बनता है। (१) उच्च राशि में अपने भाव आदि में जिसे मैंने मूल त्रिकोण बल कहा है। (२) अंश प्रमाण में — अंश बल और (३) आत्म कारक से केन्द्र त्रिकोण पणफर या आपोक्लिम में — केन्द्र बल।

६४. मूल त्रिकोण बल

पाठक इस मूल त्रिकोण बल को मेरी पुस्तक 'ग्रह व भाव बल' में देख सकते हैं। मूल त्रिकोण बल से, जहाँ ग्रह की स्थिति मित्र, शत्रु, अपने भाव आदि में जो सप्तवर्ग के लिए जरूरी है से, मिलाएँ नहीं।

यहाँ केवल सूर्य चार्ट से प्रसंग है। राशि का स्वामी (उसका बल मिलेगा) अगर उच्च स्थान मूल त्रिकोण अपने घर आदि में हो। हम इन विभिन्न स्थितियों की संख्या में कीमत लगा सकते हैं षष्ठ्यंशांश —

उच्च	६०.००
मूल त्रिकोण	४५.००
स्वभाव	३०.००
मित्रक्षेत्री	२२.५०
समक्षेत्री	१५.००
शत्रुक्षेत्री	७.४०
नीच	३.७५

६५. अंश बल

किसी ग्रह का भोगांश उसका अंश कहलाता है। अनुच्छेद ६० के अनुसार जिस ग्रह के अंश अधिक हों वह उस ग्रह से बलवान् कहलायेगा जिससे उसके अंश कम हैं। उसी सिद्धान्त को बढ़ाकर हम कह सकते हैं कि जिस ग्रह के सर्वाधिक अंश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हों वह सबसे बलवान् होता है और जिसके सबसे कम हों वह सबसे निर्बल होता है। बल अंश के अनुसार कम होता जाता है। छाया ग्रहों के अतिरिक्त, सातों ग्रहों का स्वामित्व १२ राशियों पर बल निर्धारण के लिए किया जाता है। जिस ग्रह के सर्वाधिक अंश होते हैं वह सबसे बलवान् होता है। उसे हम ६० षष्टचंश अंश बल में तथा सबसे निर्बल को ३.७५ इकाई देते हैं। बाकी ग्रहों को निम्न मूल्य दिये जाते हैं।

१. ग्रह जो राशि में सबसे आगे हों	=	६०.०० षष्टचंश
२. उससे कम	=	४५.०० षष्टचंश
३. उससे कम	=	३०.०० षष्टचंश
४. ऊपर वाले से कम	=	२२.५० षष्टचंश
५. उससे कम	=	१५.०० षष्टचंश
६. उससे कम	=	७.५० षष्टचंश
७. सबसे कम	=	३.७५ षष्टचंश

६६. केन्द्र बल

अनुच्छेद ५८ में कहा गया है कि राशि जिसका स्वामी केन्द्र पणफर आपोक्लिम में हो आत्म कारक से वह पूर्ण बली, साधारण बली व निर्बल होती है। इसलिए हम निम्न केन्द्र बल ले सकते हैं।

ए	ग्रह आत्म कारक से केन्द्र में	६०
ए	ग्रह आत्म कारक से पणफर में	३०
ए	ग्रह आत्म कारक से आपोक्लिम में	१५

उदाहरण १६

आदर्श कुण्डली में विभिन्न ग्रहों का मूल त्रिकोण बल, अंशबल, केन्द्र बल ज्ञात करो।

सूर्य — (ए) यह कुम्भ में है शत्रु भाव उसका मूल त्रिकोण बल ७.५।

(बी) अंश से सूर्य ज्ञाति कारक (बी) है उसका अंश बल ७.५० इकाई।

(सी) सूर्य केन्द्र में है (१) आत्म कारक से केन्द्र बल ६०.०० इकाई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुल बल सूर्य का

मूल त्रिकोण	=	७.५
अंश	=	७.५
केन्द्र	=	६०.०
कुल		७५.० षष्ठ्यंश

शेष ग्रहों का भी इसी प्रकार बनाकर हम बल सारणी पाते हैं।

ग्रह	मूल त्रिकोण बल	अंश बल	केन्द्र बल	कुल
सूर्य	७.५० (शत्रु)	७.५०	६०.००	७५.००
चन्द्र	१५.०० (सम)	३०.००	१५.००	६०.००
मंगल	१५.०० (सम)	३.७५	१५.००	३३.७५
बुध	१५.०० (सम)	२२.५०	६०.००	९७.५०
१ गुरु	१५.०० (सम)	६०.००	६०.००	१३५.००
शुक्र	१५.०० (सम)	४५.००	३०.००	९०.००
१ शनि	२२.०० (मित्र)	१५.००	३०.००	६७.५०
१				
१				

६७. चर बल

अनुच्छेद ५४ (डी) में यह स्पष्ट है कि द्विस्वभाव राशियाँ स्थिर से और स्थिर राशि चर से बलवान् होती हैं। इसलिए हम बल का मान निम्नलिखित ज्ञात कर सकते हैं —

द्विस्वभाव राशि — ६० षष्ट्यंश
स्थिर राशि — ३० षष्ट्यंश
चर राशि — १५ षष्टचंश

६८. दृग बल

यह अनुच्छेद ५५ से सम्बन्धित है। राशि अगर अपने स्वामी से दृष्ट (या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संयुक्त) हो, बृहस्पति या बुध से भी वह बलवान् हो जाती है इसलिए हम कह सकते हैं कि राशि दृष्ट या संयुक्त हो।

गुरु, दृक् बल मिलेंगे ६० इकाई
बुध, दृक् बल मिलेंगे ६० इकाई
अपने स्वामी से दृक् बल मिलेंगे ६० इकाई

६९. स्थिर बल

वह राशि अधिक बलवान् होगी जिसमें दो ग्रह हैं, उसकी अपेक्षा जिसमें एक ग्रह है। तीन ग्रह जिसमें होंगे वह दो ग्रहवाली से बलवान् होगी। यहाँ ७ ग्रह व दो उपग्रह हैं। ऐसी स्थिति बहुत कम आती है कि ७ ग्रह व राहु या केतु एक राशि में हों। इसलिए हम बलमान निम्न संख्याओं में दे सकते हैं।

जब ८ ग्रह एक राशि में हों	=	१६५	षष्ट्यंश
जब ७ ग्रह एक राशि में हों	=	१५०	षष्ट्यंश
जब ६ ग्रह एक राशि में हों	=	१३५	षष्ट्यंश
जब ५ ग्रह एक राशि में हों	=	१२०	षष्ट्यंश
जब ४ ग्रह एक राशि में हों	=	१०५	षष्ट्यंश
जब ३ ग्रह एक राशि में हों	=	९०	षष्ट्यंश
जब २ ग्रह एक राशि में हों	=	७५	षष्ट्यंश
जब १ ग्रह एक राशि में हो	=	६०	षष्ट्यंश
जब ० ग्रह एक राशि में हो	=	—	षष्ट्यंश

मेष से —

(ए) चर बल — यह चर राशि है उसका चर बल १५ षष्ट्यंश है।

(बी) दृक् बल — यह बुध व गुरु दोनों से दृष्ट है कुल दृक् बल १२० षष्ट्यंश।

(सी) स्थिर बल — दो ग्रह चन्द्र व राहु मेष में हैं। इसलिए स्थिर बल ७५ षष्ट्यंश।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निम्न राशि की स्वयं के बल की आदर्श कुण्डली में सारणी है।

राशि	चर बल	दृक् बल	स्थिर बल	राशि का बल
मेष	१५.००	६०.००	७५.००	२१०.००
वृष	३०.००	६०.००		३०.००
मिथुन	६०.००	—	६०.००	१२०.००
कर्क	१५.००	६०.००	—	१३५.००
		६०.००		
सिंह	३०.००	—	—	३०.००
कंन्या	६०.१५	—	—	६०.००
तुला	१५.००	६०.००	७५.००	२११.००
		६०.००		
वृश्चिक	३०.००	—	—	३०.००
धनु	६०.००	—	६०.००	१२०.००
मकर	१५.००	—	—	१५.००
कुम्भ	३०.००	६०.००	९०.००	२४०.००
मीन	६०.००	६०.००	—	६०.००

७०. कुल राशि बल

कुल राशि बल का जोड़ है राशि का कुल बल तथा उसके स्वामी का बल। अतः आदर्श कुण्डली में मेष का कुल बल —

उदाहरण १७

स्वामी बल	=	३३.७५	षष्ट्यंश
राशि बल	=	२१०.००	षष्ट्यंश
कुल		२४३.७५	षष्ट्यंश

७१. विशेष बल

उपरोक्त बल में उस राशि को ६० षष्ट्यंश का विशेष बल मिलेगा जिसमें आत्म कारक हो। यह सामान्यतः एक ही राशि को मिलता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण १८

आदर्श कुण्डली में कुल राशि बल ज्ञात कीजिये।

राशि	स्वामी बल	राशि बल	कुल राशि बल
मेष	३३.७५	२१०.००	२४३.७५
वृष	९०.००	३०.००	१२०.००
मिथुन	९७.५०	१२०.००	२१७.५०
कर्क	६०.००	१३५.००	१९५.००
सिंह	७५.००	३०.००	१०५.००
कन्या	९७.५०	६०.००	१५७.५०
तुला	९०.००	२१०.००	३००.००
वृश्चिक	३३.७५	३०.००	६३.७५
धनु	१३५.००	१२०.००	२५५.००
मकर	६७.५०	१५.००	८२.५०
कुम्भ	६७.५०	२४०.००+६०	३६७.५०
मीन	१३५.००	६०.००	१९५.००

विशेष बल

आदर्श कुण्डली में कुल राशि बल अवरोह क्रम में।

कुम्भ	३६७.५०	बलवान्	१
तुला	३००.००		२
धनु	२५५.००		३
मेष	२४३.७५		४
मिथुन	२१७.५०		५
मीन	१९५.००		६
कर्क	१९५.००		
कन्या	१५७.५०		७
वृष	१२०.००		८
सिंह	१०५.००		९
मकर	८२.५०	निर्बल	१०
वृश्चिक	६३.७५		

७२. अपवाद

ऋषि ने स्पष्ट कहा है कि किंसी विशेष फलादेश के लिए राशि बल का निर्णय राशि स्वामी के अंशों से ज्ञात करना चाहिए। आदि उपरोक्त विधि उपयोग नहीं करनी चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय ५

दशा तथा भुक्ति

७३. दशा के प्रकार

पाराशरी की तरह जैमिनि में भी अनेक दशाओं का वर्णन है। पाराशर दशा पद्धति ग्रह व उनकी नक्षत्र स्थिति पर पूर्णतः निर्भर है किन्तु जैमिनि दशा राशि से होती है। जैमिनि की दशा गणना में कोई भी भ्रमित हो सकता है। गणना की पद्धति को अपनाकर ही कोई दशा व भुक्ति निकाल सकता है। थोड़ी-सी असावधानी पूरी दशा को अव्यवस्थित कर सकती है तथा पाठक को भयंकर त्रुटि की ओर ले जा सकती है। इसलिए प्रत्येक को भविष्यवाणी करने से पूर्व सावधानीपूर्वक दशा गणना को देखना चाहिए।

(१) चर, (२) स्थिर, (३) त्रिकोण दशा, (४) शूल दशा, (५) रवि दशा, (६) केन्द्र दशा, (७) वर्णद दशा, (८) उडू दशा, (९) नवमांश दशा, (१०) ब्रह्म दशा, (११) योगार्द्ध दशा, (१२) दृग दशा, (१३) नक्षत्र दशा, (१४) मण्डूक दशा।

७४. दशा का चयन

ऋषि ने कोई निश्चित संकेत नहीं दिया है कि किस उद्देश्य के लिए कौन-सी दशा का प्रयोग करना चाहिए। औपचारिक प्रसंग इधर-उधर हैं, जैसे माना कि मृत्यु किसी विशेष त्रिकोण दशा में होती है, हमें विशेष घटना के लिए उपयुक्त दशा के चयन का निर्देश देती है। अधिकांश पाठक सावधान रहें, पाराशर ने अनेक दशाएँ बतायी हैं। लेकिन गौरव का स्थान विंशोत्तरी दशा को दिया है और अभ्यास के लिए सावधान किया है। मेरे दादा स्वर्गीय प्रो॰ बी॰ सूर्यनारायण राव मुझे कहा करते थे कि चर व त्रिकोण दशा सभी कुण्डलियों में लग सकती हैं और सभी विशेष मानवीय घटनाओं का नवमांश दशा में पूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुद्धता से सही समय जाना जा सकता है। आयु निर्धारण के लिए उनका चयन चर दशा या निर्याण शूल दशा था, क्योंकि ज्योतिष प्रयोगात्मक विज्ञान है, यह ध्रुव सत्य है। उपयोगिता की दृष्टि से इस या उस दशा की विधि किसी विशिष्ट पाठक के लिए नहीं कही जा सकती। उसकी पसन्द ही मुख्य है। इसका चयन उन पाठकों पर छोड़ दिया गया है जो स्वयं अपने अभ्यास से सीखते हैं या उस ज्ञानी विद्वान् से सीखते हैं जो इस विषय में जीवनभर का अध्ययन रखता है। मैं स्वयं चर व स्थिर दशा की ओर झुकता हूँ। यह निष्कर्ष मेरे अपूर्ण स्वाध्याय पर आधारित है।

इसलिए मैं उपरोक्त सभी दशाएँ जो इस पुस्तक में वर्णित हैं उन्हें विस्तार से कहूँगा। विस्तार से मैं चर दशा को तथा संक्षेप में त्रिकोण दशा, स्थिर दशा, राशि दशा, ब्रह्म दशा, वर्णद दशा और निर्याण शूल दशा को लूँगा।

७५. चर दशा

यह दशा लगता है ऋषि को विशेष प्रिय थी। इसमें राशियों को दो वर्गों में बाँटा गया है जो विषम पद और समपद दशाक्रम की गणना के उद्देश्य से किया है जिससे दशावर्ष पता चल सके।

७६. विषम पद राशियाँ

मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक, धनु ये विषम पद की राशियाँ हैं।

७७. सम पद राशियाँ

कर्क, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ, मीन ये सम पद की राशियाँ हैं। स्पष्टता के लिए हम ७६ अनुच्छेद को सव्य वर्ग व ७७ अनुच्छेद को अपसव्य वर्ग कहेंगे।

७८. दशाक्रम

अगर लग्न से नवम भाव सव्य वर्ग राशि को बताता है तो दशाक्रम सीधा अथवा घड़ी की दिशा में होता है, पहली दशा लग्न की राशि से शुरू होती है। जब लग्न से नवम भाव की राशि अपसव्य वर्ग की हो तो विपरीत अथवा घड़ी की विपरीत दिशा से दशा गणना होती है, पहली दशा लग्न राशि की होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरणतः जहाँ मेष व (घ) कर्क लग्न हैं। पहले में लग्न से नवम धनु जो सव्य वर्ग की राशि है। अतः पहली दशा मेष एवं अगली दशा वृष आदि की होगी। दूसरे में कर्क लग्न से नवम भाव में मीन है जो अपसव्य वर्ग की राशि है। अतः पहली व अगली दशाएँ क्रमशः कर्क, मिथुन, वृष आदि की होंगी।

७९. दशावर्ष

चर दशावर्ष समयावधि निश्चित नहीं है। राशि के अनुसार उसका स्वामी कहाँ है उसके अनुसार ही यह बदलती रहती है। राशि के दशावर्ष हैं N–१ जहाँ N हैं दूसरी उस राशि से उसके स्वामी तक (राशि में), सव्य तथा अपसव्य वर्ग के अनुसार उस राशि विशेष से सीधी या विपरीत गणना कर लें। एक चार्ट लेते हैं जिसमें लग्न मेष है, लग्नेश कुम्भ सिंह में है, वृश्चिक में शुक्र, सिंह में चन्द्र है। लग्न से नवम जो धनु सव्य वर्ग का है। दशा की शुरुआत लग्न से होती है, सीधी होगी। अतः लग्न मेष है, इससे पहली दशा लग्न बड़ी राशि की होगी, जैसे मेष। लग्नेश मंगल सिंह में है। मेष भी सव्य वर्ग का है। गणना सीधे क्रम में मेष से सिंह तक, हमें मिला N = ५। अतः मेष के दशावर्ष होंगे वर्ष ४ (N–१)। दूसरी दशा वृष लेकर वह सव्य वर्ग में आती है। उसका स्वामी शुक्र वृश्चिक में है। इसलिए दूरी वृष से वृश्चिक तक (N) सीधे क्रम में ७ है और वृष का दशावर्ष (N–१) = ६ वर्ष। अगली दशा मिथुन की भी इसी तरह गणना करेंगे। अब अगली दशावर्ष निकालने हैं। कर्क अपसव्य वर्ग में आता है। चन्द्र राशि का स्वामी सिंह में है। कर्क से विपरीत दिशा में गणना करेंगे जो इसमें होंगे १२ (N) और कर्क दशा ११ वर्ष (N–१)। अब कुण्डली लेते हैं जहाँ लग्न मकर है, शनि, गुरु और मंगल, सिंह, मेष तथा कन्या में हैं। लग्न से नवम जो कन्या है अपसव्य वर्ग का है। हमेशा की तरह पहली दशा लग्न से आरम्भ होगी। (मकर दशा) और दूसरी दशाएँ विपरीत दिशा में चलेंगी। लग्न से धनु, वृश्चिक। मकर के दशावर्ष ज्ञात करने के लिए उसका स्वामी शनि सिंह में है। मकर अपसव्य वर्ग में है, हमें मिला ६ (N) मकर से शनि तक विपरीत दिशा में गणना करके। मकर के दशावर्ष हैं ५ (N–१) अगली दशा धनु की सव्य वर्ग तथा उसका स्वामी बृहस्पति मेष में है। इसलिए धनु से सीधे क्रम में गणना मेष तक करेंगे, हमें मिला N–५। दशावर्ष धनु के होंगे ४ (N–१)। इसी तरह अन्य राशियों के दशावर्ष ज्ञात किये जा सकते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८०. दशा अवधि में बाद में अन्तर

साधारणतः दशा अवधि ७९ अनुच्छेद के तरीके के अनुसार बताई जाती है। लेकिन अवधि में वृद्धि या ह्रास उसके स्वामी की शुभ या अशुभ स्थिति पर भी निर्भर करता है। अगर राशि अपने स्वामी से युक्त है, तो दशावर्ष १२ होंगे। अगर राशि का स्वामी उच्च है तो दशावर्ष जो ७९ अनुच्छेद से आये हैं उनमें १ वर्ग बढ़ जायेगा। अगर राशि का स्वामी नीच वर्ग का है तो दशावर्ष १ वर्ष कम हो जायेगा।

८१. द्विस्वामित्व के कारण अन्तर

जैमिनि पद्धति में यह देखा गया है कि कुम्भ तथा वृश्चिक में दो ग्रहों का स्वामित्व है। केतु तथा मंगल का वृश्चिक पर तथा राहु व शनि का कुम्भ पर स्वामित्व है। कुम्भ व वृश्चिक के दशावर्ष ज्ञात करने में उनके द्विस्वामित्व के कारण कुछ विशेष तथ्य विचारणीय हैं।

८२. द्विस्वामी की अपनी राशि से भुक्ति

अगर केतु और मंगल या शनि और राहु अपने भाव में हों तो कुम्भ व वृश्चिक के दशावर्ष १२ होंगे।

८३. मंगल केतु संयुक्ति अन्य राशियों में

अगर मंगल व केतु अपनी राशि के अतिरिक्त संयुक्त हों तो शीघ्र क्रम से (वृश्चिक सव्य वर्ग का है) वृश्चिक से उस राशि तक गणना करें। दशावर्ष अनुच्छेद ७५ के अनुसार होंगे।

८४. राहु व शनि की अन्य राशि में संयुक्ति

अगर राहु व शनि की कुम्भ के अतिरिक्त अन्य राशि में युति है तो विपरीत क्रम से, क्योंकि कुम्भ अपसव्य वर्ग का है। कुम्भ से उस राशि तक गणना करें। दशावर्ष कुम्भ के अनुच्छेद ७९ के अनुसार होंगे।

८५. एक स्वामी अपनी राशि में दूसरा दूसरी राशि में

दो स्वामियों में से एक (मंगल या केतु, शनि या राहु) अपनी राशि में और दूसरा अन्य राशि में है तो पहले को छोड़ दूसरे को मान्यता दें। अगर मंगल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृश्चिक में हो और केतु मीन में तो मंगल को छोड़कर केतु को लें। वृश्चिक दशावर्ष केतु के अनुसार अनुच्छेद ७९ से निर्धारित होंगे।

८६. दोनों स्वामी अन्य राशियों में

जब मंगल व केतु (शनि और राहु) विभिन्न राशियों में हों तो जो किसी और के साथ हो उसे लें। अगर दोनों स्वामी एक ग्रह के साथ हों तो जो अधिक ग्रहों के साथ हों उसे लें। जब दोनों स्वामी समान ग्रहों के साथ हों तो जिसका राशि बल में चर, स्थिर, द्विस्वभाव हैं। अगर दोनों स्वामियों का बल समान हो राशि बल में, तो उसको लें जिसके अधिक वर्ष आ रहे हैं। अगर जो अधिक वर्ष दे रहा हो वह परम नीच हो दूसरा उच्च हो तो दूसरे को लें, दशावर्ष में अनुच्छेद ८० के अनुसार १ वर्ष बढ़ा दें।

उदाहरण १९

आदर्श कुण्डली में चर दशा तथा उसके वर्ष ज्ञात कीजिये।

दशाक्रम — लग्न से नवम मकर है। यह अपसव्य वर्ग का है। इसलिए पहली दशा लग्न में आरम्भ होगी वृष, मेष, मीन, कुम्भ, मकर आदि।

दशाक्रम — प्रथम राशि दशा वृष से। यह सव्य वर्ग है। (अनुच्छेद ७६) इसलिए गणना का क्रम सीधा होगा। वृष का स्वामी शुक्र जो धनु में है वृष से आठवीं (n) है इसलिए वृष के दशावर्ष n–१ और ७ वर्ष। मेष से अगली दशा राशि यह सव्य वर्ग की है। गणना सीधे क्रम में होगी। मेष का स्वामी मंगल तुला में है। ७वीं (n) मेष से। अतः मेष के दशावर्ष ७–१ = ६ वर्ष हैं। तीसरी दशा मीन की। यह अपसव्य वर्ग की है। अतः गणना विपरीत क्रम में होगी। मीन का स्वामी गुरु मीन से दूसरे में। (विपरीत गणना से) अतः मीन की दशा २–१ = १ वर्ष। कुम्भ में, दो स्वामीवाली राशि। राहु व शनि ये दोनों कुम्भ में हैं। राहु चन्द्र के साथ है। (अनुच्छेद ८६) से राहु की प्रमुखता है। कुम्भ अपसव्य वर्ग की है। कुम्भ से गणना करने पर राशि के वर्ष ११ हुए। अतः कुम्भ दशावर्ष ११–१ = १० वर्ष। वृश्चिक से दूसरी द्विस्वामित्व राशि, मंगल व केतु संयुक्त हैं। (अनुच्छेद ८३) के अनुसार सीधे क्रम से (गणना करने पर वृश्चिक सव्य वर्ग की है) वृश्चिक से तुला तक जहाँ मंगल व केतु संयुक्त हैं। हमें n = १२ मिला, अतः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृश्चिक के दशावर्ष १२–१ = ११ हुए। आदर्श कुण्डली में अन्य राशियों की इस प्रकार गणना करने पर कोई भी राशि उच्च, नीच या अपने स्वामी से युक्त नहीं है। इसलिए यहाँ वृद्धि या ह्रास किसी दशा अवधि में नहीं हुआ।

दशा	वर्ष
वृष	७.००
मेष	६.००
मीन	१.००
कुम्भ	१०.००
मकर	७.००
धनु	२.००
वृश्चिक	११.००
तुला	२.००
कन्या	७.००
सिंह	६.००
कर्क	३.००
मिथुन	८.००

उदाहरण २०

एक व्यक्ति ८ अगस्त १९१२ को ७/३५ शाम, बंगलौर में पैदा हुआ है। ग्रहों की स्थिति निम्न है। उनकी चर दशा ज्ञात कीजिये।

राहु		चन्द्र, शनि	
लग्न			सूर्य
			मंगल, बुध, शुक्र
	गुरु		केतु

दशाक्रम — उपरोक्त कुण्डलियों में लग्न से नवम तुला है। राशि सव्य वर्ग की है। अतः प्रथम दशा लग्न कुम्भ से शुरू होगी और सीधे क्रम में चलेगी कुम्भ, मीन, मेष आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशावर्ष — प्रथम दशा राशि को ले रहे हैं। यथा कुम्भ, यह राशि द्विस्वामित्व की है। शनि व राहु न तो संयुक्त हैं और न अपनी राशि में हैं। वे विभिन्न राशियों में हैं। इसलिए अनुच्छेद ८६ लगाकर, हम शनि को लेंगे क्योंकि वह एक ग्रह के साथ है। कुम्भ अपसव्य वर्ग की है। इसलिए गणना (विपरीत दिशा) में कुम्भ से शनि तक, हमें मिला n=१०। इसलिए कुम्भ की दिशा १०–१ = ९ वर्ष। मीन से अगली राशि दशा — यह भी अपसव्य वर्ग की है। उसका स्वामी गुरु वृश्चिक में है। मीन से गणना (विपरीत दिशा में) गुरु तक हमें मिला ५=n। इसलिए मीन के दशावर्ष ५–१ = ४। कर्क से, उसका स्वामी वृष में है। कर्क से चन्द्र विपरीत दिशा में, कर्क अपसव्य वर्ग का है। तब हमें मिला n=३। इसलिए (n–१) = २। क्योंकि कर्क का स्वामी उच्च में वर्ग है इसलिए २ वर्ष की अवधि में १ वर्ष बढ़ जायेगा (अनुच्छेद ८०)। इसलिए कर्क की दशावर्ष है ३ वर्ष। वृश्चिक राशि से द्विस्वामित्ववाली राशि है, मंगल व केतु जो इस कुण्डली में विभिन्न राशियों में हैं, प्राथमिकता मंगल को दी जायेगी क्योंकि वह अन्य ग्रहों के साथ है और केतु अकेला है। वृश्चिक से मंगल तक (सीधे क्रम में क्योंकि वृश्चिक सव्य वर्ग की है) हमें n=१० मिले वृश्चिक की दशावधि १०–१ = ९ वर्ष।

इसी प्रकार गणना करके निम्न राशि दशावर्ष प्राप्त हुए।

दशा	वर्ष
कुम्भ	९००
मीन	४००
मेष	४००
वृष	३००
मिथुन	२००
कर्क	३००
सिंह	१००
कन्या	१००
तुला	१०००
वृश्चिक	९००
धनु	११००
मकर	८००

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८७. चर दशा में भुक्ति

अन्तर्दशा की गणना के लिए क्रम वहीं से ज्ञात करेंगे जो विधि यहाँ मुख्य दशा से प्रथम दशाक्रम निकालने की है, प्रथम दशा के बाद उत्तरोत्तर दशाओं का। उस राशि का जिसकी अन्तर्दशा निकालनी है, उसमें नवम राशि अगर सव्य वर्ग की है तो दशाक्रम सीधा होगा, पहली दशा उस राशि से दूसरी राशि की होगी जिसकी यहाँ दशा है। अगर नवम भाव अपसव्य वर्ग का है तो भुक्ति विपरीत दशा से शुरू होगी। उस दशा से दूसरी राशि की प्रथम अन्तर्दशा होगी। माना कि वृष राशि की अन्तर्दशा चाहिए। वृष से नवममकर अपसव्य वर्ग का है। अतः प्रथम अन्तर्दशा दूसरी राशि (विपरीत दशा से) वृष से हुई मेष दूसरी, तीसरी अन्य दशाएँ होंगी, मेष, मीन, कुम्भ आदि और अन्तिम दशा स्वयं वृष की होगी। माना कि मीन राशि की अन्तर्दशा चाहिए। मेष से नवम सव्य वर्ग की है। अतः दशाक्रम सीधा होगा। प्रथम अन्तर्दशा दूसरी राशि (सीधे क्रम) वृष की हुई और अन्तिम मेष राशि की अन्तर्दशा होगी।

८८. अन्तर्दशा की अवधि

अवधि की संख्या १२ है, महादशा की १/१२ अन्तर्दशा की अवधि होगी। आदर्श कुण्डली में वृष के दशावर्ष ७ वर्ष हैं तो अन्तर्दशा या भुक्ति प्रत्येक राशि की ७ महीने होगी।

उदाहरण २१.

आदर्श कुण्डली में चर दशा की भुक्ति मेष व वृष राशियों की निकालिये। वृष से नवम अपसव्य वर्ग है, भुंक्ति क्रम विपरीत दिशा से होगा। वृष से दूसरी राशि मेष से प्रथम दशा अन्तर्दशा होगी। निम्न वृष राशि की अन्तर्दशा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा	भुक्ति	वर्ष	मास	दिन
वृष	मेष	०	७	०
वृष	मीन	०	७	०
वृष	कुम्भ	०	७	०
वृष	मकर	०	७	०
वृष	धनु	०	७	०
वृष	वृश्चिक	०	७	०
वृष	तुला	०	७	०
वृष	कन्या	०	७	०
वृष	सिंह	०	७	०
वृष	कर्क	०	७	०
वृष	मिथुन	०	७	०
वृष	वृष	०	७	०
		७	०	०

अगली मेष की दशा से — नवम मेष से सव्य वर्ग है इसलिए दशाक्रम सीधा रहेगा। प्रथम भुक्ति वृष की होगी, मेष से दूसरी। प्रत्येक भुक्ति की अवधि १/१२ (०-६-०), मेष राशि की दशा (६-०-०) की। मेष राशि की अन्तर्दशा होगी —

दशा	भुक्ति	वर्ष	मास	दिन
मेष	वृष	०	६	०
मेष	मिथुन	०	६	०
मेष	कर्क	०	६	०
मेष	सिंह	०	६	०
मेष	कन्या	०	६	०
मेष	तुला	०	६	०
मेष	वृश्चिक	०	६	०
मेष	धनु	०	६	०
मेष	मकर	०	६	०
मेष	कुम्भ	०	६	०
मेष	मीन	०	६	०
मेष	मेष	०	६	०
		६	०	०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८९. स्थिर दशा

नाम के अनुसार स्थिर दशा में अवधि निश्चित होती है वह परिवर्तित नहीं होती। स्थिर दशा मारक या मृत्यु निर्धारण के लिए महत्त्वपूर्ण होती है।

९०. दशा अवधि

स्थिर दशा की गणना के लिए बारह राशियों को तीन वर्गों में बाँटा जाता है, चर, स्थिर व द्विस्वभाव प्रकृति के अनुसार। स्थिर राशियों, चर राशियों व द्विस्वभाव राशियों की दशा अवधि ८, ७, ९ उत्तरोत्तर होती है। निम्न सारिणी से स्पष्ट है —

राशि	स्थिर	दशावधि
मेष	७	वर्ष
वृष	८	वर्ष
मिथुन	९	वर्ष
कर्क	७	वर्ष
सिंह	८	वर्ष
कन्या	९	वर्ष
तुला	७	वर्ष
वृश्चिक	८	वर्ष
धनु	९	वर्ष
मकर	७	वर्ष
कुम्भ	८	वर्ष
मीन	९	वर्ष
	९६	वर्ष

९१. स्थिर दशा की गणना

दशा आरम्भ करने के लिए दो प्रकार के विचार हैं। एक विचार से स्थिर दशा लग्न या सप्तम में जो बलवान् हो उससे शुरू होती है। इस तथ्य से पाराशर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहमत नहीं हैं। जैमिनि ने सूत्र (ब्रह्मादिरेवा) ४ (अध्याय ११, पाद १११) में स्वयं स्पष्ट किया है कि स्थिर दशा ब्रह्मा स्थित राशि से शुरू होती है (अनु० ३५) पाराशर ने स्पष्ट रूप से इस विचार की पुष्टि की है। अतः पहली स्थिर दशा ब्रह्मा स्थित राशि से शुरू होगी और अन्य उसके बाद से क्रमबद्ध रूप में। यहाँ विद्वानों का यह सुझाव भी है कि प्रथम स्थिर दशा शेष ब्रह्मा ग्रह की शेष अंश गणना से प्राप्त की जा सकती है, किन्तु यह व्याख्याकारों द्वारा स्वीकृत नहीं है। कुछ कहते हैं कि प्रथम दशा राशि विषम हो तो दशाक्रम सीधा होगा और समराशि में विपरीत क्रम होगा।

उदाहरण २२

आदर्श कुण्डली में स्थिर दशा ज्ञात कीजिये।

ब्रह्मा ग्रह गुरु कुम्भ में है इसलिए प्रथम दशा ८ वर्ष की उसी राशि से शुरू होगी। अगली दशाओं का क्रम मीन, मेष आदि होगा। निम्न प्रकार —

राशि	वर्ष		
प्रथम दशा कुम्भ	८	०	०
मीन	९	०	०
मेष	७	०	०
वृष	८	०	०
मिथुन	९	०	०
कर्क	७	०	०
सिंह	८	०	०
कन्या	९	०	०
तुला	७	०	०
वृश्चिक	८	०	०
धनु	९	०	०
मकर	७	०	०
	९६	०	०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९२. त्रिकोण दशा

लग्न पंचम व नवम में जो सबसे बलवान् हो, उससे दशा आरम्भ होगी। सव्य वर्ग में दशाक्रम सीधा व अपसव्य वर्ग में दशाक्रम विपरीत होगा। अगर प्रथम राशि सव्य वर्ग की है तो उसमें की दशाएँ (सीधे क्रम में) निम्न प्रकार चलेंगी —

दूसरी दशा	प्रथम से पाँचवीं
३ में	नौवीं
४	दूसरी
५	६
६	१०
७	३
८	७
९	११
१०	४
११	८
१२	१२

माना कि पहली दशा शुरू होती है मिथुन से। दूसरी दशा होगी दूसरा त्रिकोण (पाँचवाँ) तुला, तीसरी दशा कुम्भ (नौवीं), चौथी दशा कर्क (दूसरी) इसी प्रकार आगे।

अगर प्रथम राशि अपसव्य वर्ग की है तो उपरोक्त क्रम से शुरू होगी लेकिन विपरीत दिशा में। अगर प्रथम दशा कर्क की है तो तीसरी दशा उससे पाँचवीं (विपरीत दिशा की गणना से) मीन की, तीसरी उससे नवम (वृष से) चौथी, दूसरी से (मिथुन से)।

९३. त्रिकोण दशा अवधि

त्रिकोण दशा की अवधि ज्ञात करने के लिए वही तरीका लगायेंगे ज़ो चर दशा के लिए था, सीधे क्रम व विपरीत क्रम में (राशि के सव्य या अपसव्य वर्ग के अनुसार) राशि से उसके स्वामी के मध्य राशियों से दशावर्ष गिनें। अगर कर्क

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के दशावर्ष चाहिए और चन्द्र सिंह में है, कर्क अपसव्य वर्ग का है अतः विपरीत गणना करें। चन्द्र १२ (४) वें स्थान में है, इसलिए दशावर्ष ११ (४-१) हुए।

उदाहरण २३

आदर्श कुण्डली में त्रिकोण दशा का क्रम व अवधि ज्ञात कीजिये।

लग्न, पंचम व नवम में पाँचवीं राशि बलवान् है जिसका संख्या बल १५७.५ इकाई (उदाहरण १८) है। इसलिए प्रथम त्रिकोण दशा शुरू होगी कन्या से। कन्या अपसव्य वर्ग की है, इसलिए दशाक्रम विपरीत होगा। दशा अवधि वही होगी जो चर दशा की है, उनका गणना सिद्धान्त समान है। प्रथम दशा कन्या की होगी, दूसरी दशा वृष (पहली से पाँचवीं विपरीत क्रम में), तीसरी मकर (नवम), चौथी सिंह (दूसरी) इसी प्रकार अन्य भी। हमने दशा की निम्न सारणी बनाई है —

आदर्श कुण्डली में त्रिकोण दशा

राशि	वर्ष		
कन्या	७	०	०
वृष	७	०	०
मकर	७	०	०
सिंह	६	०	०
मेष	६	०	०
धनु	२	०	०
कर्क	३	०	०
मीन	१	०	०
वृश्चिक	११	०	०
मिथुन	८	०	०
कुम्भ	१०	०	०
तुला	२	०	०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४. त्रिकोण दशा में अन्तर्दशा

महादशा वर्ष १/१२ अन्तर्दशा की दशावधि होती है। दशा के क्रम के अनुसार ही अन्तर्दशा का उत्तरोत्तर क्रम चलता है। अगर वह राशि जिसकी अन्तर्दशा चाहिए सव्यवर्ग की है तो दशा क्रम सीधा होगा, प्रथम दशा उस राशि की होगी, दूसरी दशा उससे पाँचवीं की, तीसरी दशा उससे नौवीं की चौथी उससे दूसरी की, आदि सीधे क्रम में इसी प्रकार। अगर उस राशि की अन्तर्दशा हो जो अपसव्य वर्ग की है तो उपरोक्त क्रम ही चलेगा, किन्तु विपरीत दिशा से कर्क राशि से लेकर। यह अपसव्य वर्ग की है, दूसरी अन्तर्दशा होगी पाँचवीं की (विपरीत से) मीन की, तीसरी अन्तर्दशा नौवीं की (विपरीत दिशा से) वृश्चिक आदि की।

उदाहरण २४

आदर्श कुण्डली में धनु व मकर की त्रिकोण अन्तर्दशा ज्ञात कीजिये।

धनु सव्य वर्ग की है। इसलिए गणना सीधे क्रम में होगी। प्रथम अन्तर्दशा धनु की दूसरी मेष की (पाँचवीं) तीसरी सिंह की आदि।

धनु की महादशा २ वर्ष की है इसलिए प्रत्येक अन्तर्दशा २ महीने की होगी।

धनु की त्रिकोण अन्तर्दशा

दशा	भुक्ति	वर्ष	मास	दिन
धनु	धनु	०	२	०
धनु	मेष	०	२	०
धनु	सिंह	०	२	०
धनु	मकर	०	२	०
धनु	वृष	०	२	०
धनु	कन्या	०	२	०
धनु	मिथुन	०	२	०
धनु	कुम्भ	०	२	०
धनु	तुला	०	२	०
धनु	मीन	०	२	०
धनु	कर्क	०	२	०
धनु	वृश्चिक	०	२	०
		२	०	०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मकर की त्रिकोण दशा में, अवधि ७ वर्ष की है; प्रत्येक अन्तर्दशा की अवधि ०-७-० हुई। मकर अपसव्य वर्ग की है इसलिए अन्तर्दशा की गणना विपरीत क्रम में होगी। प्रथम अन्तर्दशा मकर की, दूसरी कन्या की (मकर से पाँचवीं) तीसरी वृष की आदि।

मकर दशा में त्रिकोण अन्तर्दशा

दशा	भुक्ति	वर्ष	मास	दिन
मकर	मकर	०	७	०
मकर	कन्या	०	७	०
मकर	वृष	०	७	०
मकर	धनु	०	७	०
मकर	मेष	०	७	०
मकर	सिंह	०	७	०
मकर	वृश्चिक	०	७	०
मकर	कर्क	०	७	०
मकर	मीन	०	७	०
मकर	तुला	०	७	०
मकर	मिथुन	०	७	०
मकर	कुम्भ	०	७	०
		७	०	०

९५. वर्णद दशा

यह लग्न तथा वर्णद लग्न के सम्बन्ध पर निर्भर करती है। वर्णद लग्न कैसे निकालते हैं यह हम पहले ही बता चुके हैं अनु० २२ में। इसी तरह २, ३ व अन्य भावों के लिए भी वर्णद निकालते हैं। अगर लग्न विषम है तो दशाक्रम सीधा होगा, सम में विपरीत। वर्णद दशा शुरू करने के लिए विभिन्न व्याख्याकारों ने विभिन्न विचारधाराएँ बताई हैं, लेकिन मैं ज्योतिष विद्यार्थियों को नहीं कहूँगा कि वह इन पुस्तकों के विरोधाभास में जाएँ। कुछ के अनुसार लग्न और होरा लग्न में जो बलवान् हो उससे दशा शुरू करनी चाहिए। मैं अपने लिए संकेत सूत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६ पाद ३, अध्याय ४ से लेता हूँ जिसमें जैमिनि ने कहा है कि लग्न विषम होने पर सीधे व सम में १२ से विपरीत गणना लग्न से ही करें। दशा की गणना सीधे या विपरीत लग्न की राशि प्रकृति पर निर्भर करती है। अगर लग्न मेष है और वर्णद लग्न कन्या है तब प्रथम वर्णद दशा मेष की ६ वर्ष की होगी। दूरी लग्न से वर्णद लग्न तक राशि में होगी। दूसरी ओर वृष लग्न तथा वर्णद लग्न कन्या हो तो प्रथम वर्णद दशा मेष की ८ वर्ष की होगी, दूरी लग्न से बारहवें भाव से वर्णद लग्न तक। विषम राशि में दूसरी वर्णद दशा दूसरी राशि की होगी, उसकी अवधि लग्न से वर्णद की दूसरी राशि तक होगी सीधे गणना क्रम से। सम राशि लग्न में दूसरी दशा तीसरी राशि लग्न से या बारहवें से दूसरी राशि (विपरीत दिशा से), दूसरी राशि संख्या के अनुसार लग्न तथा दूसरी वर्णद लग्न से विपरीत गणना क्रम में दशा की अवधि होगी।

कुल जोड़, लग्न विषम हो तो दशाक्रम सीधा होगा। वर्णद दशा की अवधि लग्न व वर्णद के मध्य राशि संख्या सीधे क्रम में विषम लग्न में होगी। लग्न सम हो तो दशाक्रम विपरीत होगा व दशा अवधि लग्न से बारहवें से वर्णद तक होगी।

उदाहरण २५

आदर्श कुण्डली में कुछ वर्णद दशा ज्ञात कीजिये।

उदाहरण ५ में वर्णद लग्न धनु है तथा दूसरी वर्णद वृष। जन्मलग्न सम है अतः दशाक्रम विपरीत होगा और गणना बारहवें मेष से होगी। पहली वर्णद दशा मेष (वृष से बारहवीं) की। जन्मलग्न के बारहवें से वर्णद तक (विपरीत क्रम में) हमें वर्णद दशा ५ वर्ष की मिली। इसी प्रकार दूसरी दशा मीन की होगी। दूसरी वर्णद वृष की होगी। जन्मलग्न से बारहवें से वृष तक, वर्णद की दूसरी राशि भी मीन वर्णद की तरह १२ की है।

x मेष वर्णद	५	०	०
मीन वर्णद	१२	०	०

९६. ब्रह्म दशा

अगर लग्न विषम है तो दशा ब्रह्म राशि से सीधे क्रम में शुरू होगी। अगर लग्न सम राशि में है तो ब्रह्म राशि से सातवें से विपरीत क्रम में शुरू होगी। दशा की अवधि दशा विपरीत है या सीधी इसकी अपेक्षा, उस राशि का षष्ठेश के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्य राशियों की संख्या जितनी होगी उसमें जब मेष लग्न हो और ब्रह्म वृश्चिक में हो, मंगल कन्या में तो दशाक्रम ब्रह्म राशि से सीधा होगा क्योंकि लग्न विषम है। वृश्चिक से षष्ठेश, दशा शुरू होगी वृश्चिक से ग्यारहवें से, वृश्चिक दशा अवधि ११–१ = १० वर्ष।

स्थिर दशा तथा ब्रह्म दशा में अन्तर यह है कि स्थिर दशा में अवधि स्थिर है बेशक ब्रह्म से शुरू हो, ब्रह्म दशा में ब्रह्म से शुरू होगी या सातवें से किन्तु अवधि अनिश्चित है।

उदाहरण २६

आदर्श कुण्डली में ब्रह्मदशा ज्ञात कीजिये।

लग्न वृष सम राशि है। ब्रह्म कुम्भ में है। इसलिए पहली दशा सिंह (ब्रह्म से सातवीं) लग्न से विपरीत दिशा में शुरू होगी। जैसे — सिंह, कर्क आदि। सिंह से षष्ठेश शनि सिंह से ग्यारहवें हैं। इसलिए सिंह की अवधि (११–१) १० वर्ष है। उससे अगली का षष्ठेश गुरु है कर्क से आठवें है। इसलिए कर्क की दशा ७ वर्ष है। इसी प्रकार अन्य राशियों का निम्न प्रकार है —

आदर्श कुण्डली में ब्रह्म दशा

सिंह	१०	०	०
कर्क	७	०	०
मिथुन	४	०	०
वृष	७	०	०
मेष	१०	०	०
मीन	११	०	०
कुम्भ	२	०	०
मकर	१	०	०
धनु	१२	०	०
वृश्चिक	११	०	०
तुला	४	०	०
कन्या	९	०	०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ के अनुसार दशा अवधि के लिए लग्न के विषम या सम के अनुसार सीधा या विपरीत क्रम होता है।

१७. योगार्ध दशा

प्रथम दशा लग्न या सप्तम में जो बलवान् हो उससे शुरू होती है। प्रथम दशा के विषम या सम के अनुसार सीधा या विपरीत क्रम चलता है। योगार्ध दशा की अवधि चर और स्थिर के योग से आधी होती है।

उदाहरण २७

आदर्श कुण्डली में योगार्ध दशा की अवधि व क्रम ज्ञात कीजिये।

लग्न व सप्तम में लग्न बलवान् है क्योंकि वृष का कुल बल वृश्चिक से अधिक है। इसलिए पहली योगार्ध दशा वृष की होगी। प्रथम राशि सम है इसलिए दशाक्रम विपरीत होगी जैसे — वृष, मेष आदि। अवधि योगार्ध की होगी

$\frac{1}{2}$ (वृष की चर दशा + वृष की स्थिर दशा)

= $\frac{1}{2}$ (७.०.० + ८.०.०) वर्ष = ७$\frac{1}{2}$ वर्ष

इसी प्रकार निम्न योगार्ध दशा व उसकी अवधि गणना है।

वृष	७	६	०
मेष	६	६	०
मीन	५	०	०
कुम्भ	९	०	०
मकर	७	०	०
धनु	५	६	०
वृश्चिक	९	६	०
तुला	४	६	०
कन्या	८	०	०
सिंह	७	०	०
कर्क	५	०	०
मिथुन	८	६	०
	८३	०	०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ विद्वानों के अनुसार स्त्रियों के लिए लग्न या सप्तम में बलवान् का विचार न करके सातवें से ही शुरू करनी चाहिए।

१८. निर्याण शूल दशा

जैमिनि ज़्योतिष के विद्यार्थी इस दशा पद्धति को पूर्ण महत्त्व देते हैं। व्याख्याकारों के द्वारा निर्याण शूल दशा की गणना पद्धति तथा उसका अभिप्राय अस्थिर या संदिग्ध है। इसलिए मैं सबसे लोकप्रिय तरीका दे रहा हूँ। अगर लग्न विषम हो तो दशा लग्न से शुरू होगी। अगर लग्न सम राशि है तो दशा सप्तम से शुरू होगी। दशा लग्न के विषम व सम होने पर सीधी व विपरीत होगी। प्रत्येक दशा की अवधि ९ वर्ष होगी।

उदाहरण २८

आदर्श कुण्डली में निर्याण शूल दशा की गणना कीजिये।

लग्न वृष सम है।

दशा सातवें से शुरू होगी जो वृश्चिक है और विपरीत दिशा में चलेगी जैसे — तुला आदि।

दशा अवधि ९ वर्ष है। निम्न दशाक्रम है —

वृश्चिक	९	०	०
तुला	९	०	०
कन्या	९	०	०
सिंह	९	०	०
कर्क	९	०	०
मिथुन	९	०	०
वृष	९	०	०
मेष	९	०	०
मीन	९	०	०
कुम्भ	९	०	०
मकर	९	०	०
धनु	९	०	०
	१०८	०	०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९९. निर्याण फल शूल दशा

यह मुख्यतः जातक की मृत्यु के फलित के लिए देखी जाती है। प्रत्येक दशा ९ वर्ष की है। मारक राशि से सातवीं से यह शुरू होती है और लग्न के सम या विषम होने पर यह सीधे या विपरीत चलती है और मारक उस समय कहलायेगी जब मारक राशि आ जायेगी, यह तब आती है जब आयु ५४ से ६३ हो। जबकि यह पूर्णायु कुण्डली पर लागू नहीं होती।

१००. अन्य दशाएँ

जैंमिनि ने अन्य भी अनेक दशाएँ बता रखी हैं जैसे — मण्डूक दशा, नक्षत्र दशा, शूल दशा, दृग दशा आदि। जो मैं इसमें नहीं दे रहा हूँ। पाराशर ने भी अनेक दशाएँ बताई हैं किन्तु विंशोत्तरी या अष्टोत्तरी ही प्रचलन में हैं। इन दोनों में सबसे प्रचलित विंशोत्तरी है। इसी तरह जैमिनि ने भी, अनेक दशाओं का वर्णन किया है, कभी-कभी किसी विशेष दशा को विशेष भाव के फलित करने के लिए संकेतित किया है, चर दशा, त्रिकोण दशा तथा स्थिर दशा, भली प्रकार अध्ययन द्वारा हमें सभी घटनाओं को फलित करने योग्य बना देती हैं। यह विद्यार्थियों के अन्वेषणात्मक मस्तिष्क पर है कि वह विभिन्न दशाओं को लगाकर सबसे सन्तोषजनक हल को ढूढ़ें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय ६

आयु का निर्धारण

१०१. साधारण विचार

आयु निर्धारण हमेशा कठोर नारियल तोड़ना है। अनेक पद्धतियाँ, फलित तथा होरा में प्रचलित हैं किन्तु होरा या गणितीय पद्धति कठिनाई से वास्तविक व्यवहार में आती है। फलित से, मारक का निर्धारण तथा गोचर स्थिति से किसी की सम्भावित जीवन, अवधि को बताने की अपेक्षा की जा सकती है।

१०२. जैमिनीय पद्धति

जैमिनि ने आयु के लिए अनेक पद्धतियाँ दी हैं, अनेक अध्यायों में उनके नियम बिखरे हुए हैं, उनका सुव्यवस्थित नियोजन न होने से विद्यार्थी भ्रान्ति में रहता है। इन पृष्ठों में, मैं उन सिद्धान्तों को ही सम्वाद रूप से लूँगा जो मेरे विचार में, सुरक्षात्मक रूप से पूर्णतः फल प्रदान करते हैं। मैं फिर पाठकों को याद दिलाऊँगा कि यह पुस्तक जैमिनीय सिद्धान्तों की पुस्तकबद्ध प्रस्तुति नहीं है अपितु अनिवार्य सिद्धान्तों के सन्तोषजनक प्रयोग के बाद का सार संग्रह है। जैमिनि द्वारा बताई गई अनेक पद्धतियाँ मेरे द्वारा श्रेणीबद्ध की गई हैं, जो सुविधा अनुसार मेरे द्वारा तीन प्रकार की कही गई हैं — ए, बी, सी।

१०३. आयु की श्रेणियाँ (पारिभाषिक)

सभी ज्योतिषी आयु को तीन विभिन्न श्रेणियों में बाँटते हैं जो हैं — अल्पायु, मध्यायु, पूर्णायु। किन्तु विभिन्न लेखकों के अनुसार परिभाषायें बदलती रहती हैं। सबसे अधिक सर्वमान्य श्रेणी जैमिनि की है — अल्पायु ३२ वर्ष तक, मध्यायु ३३ से ६४ तथा दीर्घ ६५ से १०० वर्ष।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०४. पद्धति पहली

तीनों श्रेणियों में आयु निर्धारण के दो तत्त्व हैं : (ए) लग्नेश तथा आठवां, (बी) लग्न तथा चन्द्र, (सी) लग्न तथा होरा लग्न।

१०५. अल्पायु

अल्पायु होगी अगर (ए) समीकरण के दो तत्त्वों (अनुच्छेद १०४) में एक चर तथा दूसरा द्विस्वभाव हो, (बी) दोनों स्थिर में हों, (सी) एक द्विस्वभाव व दूसरा चर में हो। गणना तीनों समीकरणों से करनी चाहिए। आयु में ३२ वर्ष तक अल्पायु होती है।

१०६. मध्यायु

अगर दोनों तत्त्व मध्यायु में (ए) एक चर एक स्थिर में हो (बी) एक स्थिर व एक चर में हो (सी) दोनों द्विस्वभाव में हों। गणना तीनों समीकरणों से करनी चाहिए। मध्यायु की अवधि ६४ वर्ष है।

१०७. पूर्णायु

यह होता है (ए) दो तत्त्वों में से दोनों घर में हों (बी) एक स्थिर व एक द्विस्वभाव में हो (सी) एक द्विस्वभाव व एक स्थिर में हो। तीनों तत्त्वों के द्वारा ही गणना की जाती है। पूर्णायु को अनेक १३० वर्ष मानते हैं, दूसरे १२० वर्ष, लेकिन जैमिनि सिद्धान्तों के लिए हम १६० वर्ष मान रहे हैं।

१०८. विरोधाभासी परिणामों की सन्धि

अगर दो या तीनों ही मत जीवन की एक ही अवधि बता रहे हों तो वह स्वीकार्य होगी। अगर सभी तत्त्व अलग-अलग अवधि बता रहे हों तो लग्न तथा होरा लग्न से जो आयु आयेगी उसे प्राथमिकता मिलती है और जब तीन विभिन्न अवधि आ रही हों और चन्द्र लग्न या सप्तम में हो तो आयु की लग्न तथा चन्द्र से जो अवधि आयेगी वह मानी जायेगी। इस तरीक़े से प्राप्त आयु को (ए) कहेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०९. आयु निर्धारण की अचूक गणना

जीवन की अवधि ज्ञात करने के उपरान्त — अल्पायु, मध्यायु और पूर्णायु कौन-सी जातक की है, उसके जीवन में आयु के कितने वर्ष व्यतीत करने हैं इसकी गणना की जाती है। माना कि मध्यायु आ रही है : पूरे ६६ वर्ष उसे मिलेंगे, लग्नेश और आठवां उन राशियों के शुरू में स्थिर हो तो। अगर वह उन राशियों में जिसमें स्थित है आखिरी अंशों में हो तो वह शून्य वर्ष देंगे और मृत्यु अल्पायु के करीब ही हो जायेगी। अगर वह मध्य में है तो उसके द्वारा दिये गये वर्ष तीनों नियमों से अलग-अलग ज्ञात किये जा सकते हैं। दो तत्त्वों (लग्नेश + आठवाँ) के द्वारा दिये गये वर्षों के जोड़ को दो से भाग करने पर वास्तविक आयु के वर्ष उस विशेष आयुर्दाय में कितने हैं यह पता चल सकता है।

अगर पूर्णायु आ रही है लग्नेश और आठवाँ २५° और १२° अपनी-अपनी राशियों में हैं। लग्नेश राशि के प्रथम अंक से २५° दूर है। १.१ वर्ष प्रति अंश की दर से तो कमी इस स्थिति में २५ x १.१ = २७.५ वर्ष यह कहना भी उचित है कि ५.५ (३३–२७.५) वर्ष अपने क्षेत्र में पूर्णायु के देगा। इसी तरह, अष्टमेश अपनी राशि से १२° दूर आ गया है इसमें उसे १२ x १.१ = १३.२ वर्ष देगा या १९.८ (३३–१३.२) वर्ष की कमी करेगा अपने पूर्ण क्षेत्र से। दोनों स्वामी के क्षेत्र के जोड़ के आधे के समान वास्तविक आयु आयेगी।

$$\frac{१९.८+५.५}{२}$$ = १२.६५ वर्ष। यह ६६ वर्ष में जोड़ी जायेगी जहाँ से पूर्णायु शुरू होती है और कुल आयु ६६ + १२.६५ = ७८.६५ वर्ष होगी।

११०. सारांश

निम्न पद्धति आयु की गणना में सहायक हैं —

अल्पायु (३°–x) = १.१

मध्यायु ए + (३०°–x) = १.१

पूर्णायु बी + (३०°–x) = १.१

यहाँ x = ग्रह के अंश एक राशि में

ए = अल्पायु

बी = मध्यायु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१११. पद्धति दूसरी

(ए) अष्टमेश और सप्तम से अष्टमेश में जो बलवान् हो जैसे — स्वामी, केन्द्र, पणफर या आपोक्लिम में हो तो जीवन की अवधि भी दीर्घ, मध्य व अल्प होगी। इस प्रकार प्राप्त आयु को पद्धति (बी) कहेंगे।

११२. पद्धति तीसरी

उपरोक्त पद्धति को आत्म कारक से अष्टमेश में और आत्म कारक से सप्तम से अष्टमेश में जो बलवान् हो उससे जीवन की अवधि ज्ञात करें। इस प्रकार आयु निर्धारण को (सी) कहेंगे। अगर आत्म कारक लग्न से नौवें में है तो अल्पायु पूर्णायु हो जायेगी आदि, किन्तु मध्यायु वही रहेगी।

यहाँ पर III पाद २ में एक सुझाव है कि आयु निर्धारण में, लग्न तथा आत्म कारक एक समान नहीं समझने चाहिए जैसे लग्न तथा चन्द्र को।

११३. विचार

पाराशर की तरह आयु निर्धारण के जैमिनि ने भी अनेक तरीके दिये हैं। लेकिन यहाँ कोई संकेत नहीं है कि यह विशेष तरीका किसी विशेष कुण्डली में लग सकता है। यह मुझे पता लगा, इसलिए इस विशेष बिन्दु को मैं निम्न प्रकार अपनाता हूँ।

जीवन की अवधि को संकेत ए, बी तथा सी द्वारा ज्ञात करके उससे जो बहुमत में हो उसे बताओ। अगर पद्धति एक अल्पायु, पद्धति दूसरी मध्यायु और पद्धति तीसरी मध्यायु बताती है तो वही जातक की मध्यायु है। अगर पद्धति १, २ और ३ अलग-अलग अवधि बता रही हैं तो ए, बी और सी में होरा लग्न और आत्म कारक में जो बलवान् हो उसके अनुसार कहो।

११४. कक्षा वृद्धि

इसका अर्थ है आयु की अवधि में वृद्धि, अल्पायु का मध्यायु और मध्यायु का दीर्घ आयु होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११५. कक्षा वृद्धि की परिस्थितियाँ

कक्षा वृद्धि तब होती है जब निम्न परिस्थितियों में से एक भी विद्यमान रहती है (ए) लग्न तथा सप्तम शुभ ग्रहों के मध्य स्थित हो, (बी) आत्म कारक या उससे सप्तम शुभ ग्रहों के मध्य हो, (सी) जब शुभ ग्रह लग्न या सप्तम या त्रिकोण में हो, (डी) जब आत्म कारक के साथ या उससे त्रिकोण में शुभ ग्रह हो, (ई) जब आत्म कारक शुभ हो नीच का न हो, उच्च का हो, (एफ) अशुभ ग्रह के साथ न हो, गुरु के आस-पास या त्रिकोण में शुभ ग्रह हो, (जी) जब गुरु लग्न या सप्तम में हो और अशुभ दृष्टि या युति न हो।

११६. कक्षा ह्रास

इसका अर्थ है कि विशेष आयु की अवधि अपने से निम्न स्तर पर आ गई है, पूर्णायु का मध्यायु और मध्यायु का अल्पायु होना।

११७. कक्षा ह्रास की परिस्थितियाँ

कक्षा ह्रास तब होगा जब (ए) अष्टमेश लग्न से या सप्तम से आत्म कारक के साथ हो, (बी) जब लग्न और सप्तम अशुभ ग्रहों के मध्य हो या अशुभ ग्रह त्रिकोण में हो, (सी) जब आत्म कारक या उससे सप्तम अशुभ ग्रहों के मध्य हो या त्रिकोण में अशुभ ग्रह हो, (डी) यह अशुभ ग्रह आत्म कारक हो और नीच का हो या अशुभ ग्रहों के साथ हो।

११८. राशि वृद्धि

इसका तात्पर्य है आयु में राशि द्वारा वृद्धि। अगर कक्षा वृद्धि में शुभ ग्रहों के लिए कहे गए स्थान (अनुच्छेद ११५) पूर्ण चन्द्र या शुक्र से युक्त हों तो आयु में राशि दशा द्वारा वृद्धि होती है।

११९. राशि ह्रास

किसी राशि दशा द्वारा आयु में कमी का अर्थ राशि ह्रास है। राशि ह्रास तब होता है जब शनि उन स्थानों पर हो जो कक्षा ह्रास के लिए कहे गए हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण २९

आदर्श कुण्डली में आयु ज्ञात कीजिये।

पद्धति १

(१) लग्नेश व अष्टमेश द्विस्वभाव में व स्थिर में है — अतः पूर्णायु

(२) लग्न तथा चंन्द्र स्थिर व चर में है — मध्यायु

(३) लग्न तथा होरा लग्न स्थिर व चर में है — मध्यायु

समान्य अवधि है मध्यायु जो दो तत्त्वों से आई है, वही स्वीकार्य है। ऐसी कुण्डली मध्यायु की है — (ए)

पद्धति २

लग्न से अष्टमेश गुरु है।
सप्तम से अष्टमेश बुध है।
राशि बल में गुरु, बुध से अधिक बलवान् है।
गुरु केन्द्र में है।
जीवन की अवधि होगी = पूर्णायु (बी)

पद्धति ३

आत्म कारक से अष्टमेश बुध है।
आत्म कारक के सप्तम से अष्टमेश-गुरु है।
गुरु अधिक बलवान् है बुध से।
गुरु स्वयं आत्म कारक होकर केन्द्र में है लग्न से
जीवन की अवधि पूर्णायु (सी)

लग्न से नवम में आत्म कारक नहीं है। इसलिए आगे संशोधन की आवश्यकता नहीं है।

२ व ३ पद्धति से कुण्डली पूर्णायु श्रेणी की है।

कोई कक्षा वृद्धि या कक्षा ह्रास भी नहीं है क्योंकि दोनों के तत्त्वों से विरोध साम्य हो गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृद्धि के लिए —

(ए) आत्म कारक शुभ है।

(बी) आत्म कारक स्वयं गुरु है।

ह्रास के लिए —

(ए) लग्न से अष्टमेश आत्म कारक है।

(बी) लग्न व सप्तम अशुभ प्रभाव के मध्य हैं।

१२०. टिप्पणी

आयु निर्धारण के लिए अनेक पद्धतियाँ लगाते हुए, कुण्डली के सामान्य बल पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आदर्श कुण्डली में आत्म कारक की बलवान् स्थिति की ओर ध्यान देना चाहिए। वह लग्न से केन्द्र में है और कुण्डली में सबसे बलवान् है क्योंकि वह बलवान् राशि में है। जब आत्म कारक इस प्रकार बलवान् स्थिति में है, अन्य तत्त्व कुछ भी हो, जातक की पूर्ण आयु होगी।

१२१. मृत्यु की मुख्य अवधि

मृत्यु की अनुमानित अवधि के लिए अनेक योगों का वर्णन किया गया है। कुछ विद्वानों का यह विचार है कि जैमिनि ने जो दशा तकनीक बनाई है उसमें से किसी एक से भी आयु निकाली जा सकती है। कुछ कहते हैं कि मृत्यु निर्धारण के लिए केवल शूल दशा लगानी चाहिए। यहाँ कुछ का विचार यह भी है कि मारक अवधि के लिए नवमांश दशा व स्थिर दशा का प्रयोग किया जा सकता है। यह हमारा निंजी मत है और यह अपने मूल्य के कारण किया जा सकता है, मारक, स्थिर व शूल दशा के निर्धारण में सफलता के साथ प्रयुक्त हो सकता है। मैं नीचे कुछ चुने हुए सिद्धान्त मारक निर्धारण के लिए दे रहा हूँ।

(ए) आत्म कारक या लग्न से सप्तम में राहु, केतु या शनि हो। पहले, दूसरे, तीसरे भाव में मृत्यु होती है। यह तब होगा जब जीवन की अवधि मध्यायु हो, प्रथम भाव मध्यायु में मृत्यु होगी अगर शनि प्रथम भाग में हो, राहु सप्तम में हो तो मध्यायु के द्वितीय भाव में, केतु सप्तम में हो तो तृतीय भाव में होगी। यह सिद्धान्त तीनों परिस्थितियों में लागू होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(बी) आठवें भाव के त्रिकोण राशि की दशा में मृत्यु होती है।

(सी) शनि जब आठवें में हो तो मृत्यु आठवीं राशि की दशा में होगी, यहाँ नवमांश दशा का प्रसंग है।

(डी) अगर अष्टम राशि पर मिश्रित प्रभाव हो — शुभ व साथ-साथ अशुभ तो आठवीं राशि की दशा में मृत्यु होगी।

(ई) मृत्यु उस राशि की दशा में होगी जो मृत्यु से प्रभावित होगी (स्थिर दशा में) वह दशा उस समय आ रही हो जब जातक की जीवन अवधि निश्चित हो जाए। अगर व्यक्ति पूर्णायु हो और मृत्यु प्रभावित राशि पूर्णायु से पहले आ रही हो तो मृत्यु नहीं होगी।

(एफ) मृत्यु उस दशा राशि में भी सम्भव है (१) जो अशुभ प्रभाव के मध्य हो (२) जिससे आठवें या बारहवें में अशुभ ग्रह हों।

(जी) आठवीं या बारहवीं राशि जिस पर निर्बल चन्द्र और शुक्र की दृष्टि हो उस राशि दशा में मृत्यु हो सकती है।

(एच) अगर लग्न से आठवें या दूसरे में अशुभ ग्रह या चन्द्र हों, आत्म कारक या चन्द्र से तब मृत्यु प्रभावी राशि से पूर्व की राशि दशा में मृत्यु होगी।

(आई) सूर्य और शुक्र से छठीं राशि की दशा में भी मृत्यु सम्भव है।

(जे) आयु ब्रह्म से महेश्वर तक विस्तृत होती है स्थिर दशा से।

(के) चन्द्र जिस राशि में है उसमें भी मृत्यु सम्भव है।

(एल) महेश्वर जिस राशि में है उस राशि दशा में मृत्यु हो सकती है, स्थिर गणना से, महेश्वर जिस राशि में है उससे १, ५, ९, राशि की अन्तर्दशा में।

(एम) आत्म कारक से ६, ८, १२ में जिसका स्वामी सबसे बलवान् हो वह मारक जिस राशि में स्थित हो उसकी दशा में मृत्यु होगी।

(एन) उपरोक्त में अगर दो या तीन मारक हों तो उसे चुनें जिसकी राशि दशा उस राशि में जहाँ वह स्थित है, जीवन अवधियों के अनुकूल हो। माना कि तीन राशि मारक हैं सभी का बल समान है, जातक की पूर्णायु है और दो की दशा उससे पहले आ जाती है। तब मारक दशा वह होगी जो पूर्णायु के समय आयेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२२. मृत्यु की अन्तर्दशा

(ए) मारक दशा में आत्म कारक से ६, ८, १२ में जो सबसे बलवान् हो उसकी अन्तर्दशा में मृत्यु होगी, जैसे उस ग्रह की स्थित राशि दशा में।

(बी) चन्द्र की राशि दशा में।

(सी) मारक राशि के स्वामी और उनसे ६ की नवमांश राशि की अन्तर्दशा में। माना कि मारक राशि कर्क है। नवमांश में उसका या उससे ६ का स्वामी चन्द्र व गुरु है। वह अगर मीन व तुला नवमांश में है तो मारक दशा में मृत्यु मीन व तुला की अन्तर्दशाओं में हो सकती है।

१२३. कुछ अपवाद

जब द्वार और बाह्य राशियाँ प्रभावित होती हैं तो मृत्यु उनकी अपनी नवमांश दशा में हो जाती है।

अगर लग्न से अष्टमेश उच्च का है तो एक नवमांश राशि दशा का लाभ हो जाता है जो ९ वर्ष है। इस परिस्थिति में, मृत्यु उस नवमांश राशि की दशा में होगी जो लग्नेश व अष्टमेश से त्रिकोण में है या उनके स्वामी की नवमांश दशा में होगी।

उदाहरण ३०

आदर्श कुण्डली में मारक राशि ज्ञात कीजिये।

अनुच्छेद १२१ और १२२ में जो सिद्धान्त दिया है उसे प्रयोग करने पर (बी) अष्टम भाव से त्रिकोण राशियाँ हैं धनु, मेष व सिंह। मृत्यु इन तीनों में से सबसे बलवान् में होगी जो धनु है (उदा० १८)।

(एफ) वृष अशुभ प्रभाव के मध्य है इसलिए वृष मृत्यु प्रभावी राशि है। धनु अष्टम में अशुभ ग्रह युक्त है। इसलिए वह मृत्यु प्रभावी राशि है।

(जी) मृत्यु धनु (८वीं या मेष १२ वीं) की दशा में हो सकती है किन्तु मेष पर निर्बल चन्द्र व शुक्र की दृष्टि से खाली है और (बृहस्पति, सूर्य व बुध से दृष्ट है) इसलिए यह मारक नहीं हो सकती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनु दृष्टिरहित है (शनि के अतिरिक्त) और शुक्र से युक्त है। अतः मारक प्रभाव शक्ति सम्पन्न है।

(ए) कन्या व कर्क भी मृत्यु प्रभावी राशि हैं।

(सी) कुम्भ भी मृत्यु दे सकती है क्योंकि यह चन्द्र और महेश्वर से युक्त है।

(डी) तृतीयेश (मंगल) षष्ठेश (चन्द्र) अष्टमेश (बुध) बारहवें (शनि) आत्म कारक में से सबसे बलवान् बुध है (उदाहरण १६) वह कुम्भ में है अतः कुम्भ मारक राशि हैं।

अतः निम्न राशियों में मृत्यु प्रभावी हैं —

(ई) धनु

(एफ) वृष, धनु

(जी) धनु

(आई) कन्या व कर्क

(के) कुम्भ

(एम) कुम्भ

धनु इन सबमें सबसे अधिक मृत्यु कारक राशि है जो अपनी दशा में मृत्यु दे सकती है। अन्तर्दशा में (अनुच्छेद १२२) सबसे बलवान्, षष्ठेश (चन्द्र) २२ १ (शुभ) व बारहवाँ (शनि) आत्म कारक से गुरु है। कुम्भ की अन्तर्दशा (गुरु स्थित राशि) धनु की महादशा (स्थिर दशा गणना) में मृत्यु होगी।

धनु दशा (स्थिर दशा) आती है ८१ वर्ष से और कुम्भ युति शुरू होती है जब जातक ८१ वर्ष ६ महीने का है। वह अपने ८२वें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय ७

कुण्डली विवेचन

१२४. प्राथमिक टिप्पणियाँ

कुण्डली विवेचन ज्योतिष का सबसे कठिन कार्य है। इसमें जैमिनि की पहुँच अद्वितीय है। मैंने विभिन्न अध्यायों में बिखरे हुए योगों को भावों के अनुसार एकत्र किया है।

१२५. कारकांश

अनुच्छेद ८ में हमने देखा कि आत्म कारक वह ग्रह है जिसके किसी राशि में सबसे अधिक अंश होते हैं। कारकांश आत्म कारक का नवमांश है।

१२६. भौतिक रूप

जैमिनि सूत्रों में कहीं भी यह नहीं लिखा है कि उदय होती हुई राशि से व्यक्ति का रूप या चरित्र पता चल सकता है, जबकि हम राशि तत्त्व को पूर्ण महत्त्व देते हैं। बाह्य रूप, रंग आदि कारकांश स्वामी के द्वारा ज्ञात किए जा सकते हैं, नवमांश स्वामी और वर्णद लग्न से और अन्तिम से विशेष रूप से रंग ज्ञात होता है। ग्रह जो लग्न, नवमांश लग्न व वर्णद लग्न और कारकांश में हो वह अपनी विशेषताएँ व्यक्ति को देता है।

ग्रहों के रंग वही लिये जायेंगे जो ज्योतिष में साधारण सिद्धान्तों में हैं। जब लग्न में, नवमांश लग्न, कारकांश और वर्णद में केतु व शनि हो तो रंग हल्का लाल होगा, राहु व शनि–काला, शनि व शुक्र–काला, शनि व गुरु–सुनहरा, शनि व बुध–नीला, शनि व मंगल–रक्त, सुवर्ण या गाजरी पीला, शनि व चन्द्र–सफेद।

प्राणपद (अनुच्छेद ३०) कन्या में है जो देता है लाल रंग और नम्रता व नाजुकता, मकर में–लाली रंग, सिंह–कुरूपता। व्यक्ति वृद्ध लगता है अगर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नारूढ़ संकेत सूर्य से शनि तक है तो लाल, सफेद, गाजरी, हरा, पीला, मिश्रित व काला रंग आदि ११.३। बृहत् जातक (१) से केतु दूसरे में हों (अनुच्छेद १९) १ उपपद के सप्तमेश से शनि दूसरे में हो तो व्यक्ति को बहुत कुरूप बना देता है। बुध व शुक्र दूसरे या पाँचवें में कुरूप जबड़ा व होंठ देता है।

उदाहरण ३०

आदर्श कुण्डली में जातक के शारीरिक स्वरूप का निर्णय —

लग्नेश शुक्र है, कारकांश का स्वामी मंगल है, नवमांश का स्वामी मंगल है, वर्णद लग्नेश शुक्र है। अतः मंगल व शुक्र मुख्य ग्रह हैं, इसलिए जातक मंगल व शुक्र की विशेषताएँ लिये हुए है जो साफ रंग, स्वरूप, शरीर, आँखें, सुन्दर शरीर रचना, नम्रता व नाजुकता लिये हुए है।

१२७. चरित्र व मस्तिष्क

प्राणपद लग्न कुम्भ है जो दम्भी व छली बनाता है। वह निराश व खिन्नचित्त हो जाता है अगर चन्द्र और राहु पाँचवें को देखते हों। वह कमजोर और विनाशक प्रकृति का होगा और चन्द्र व राहु लग्न से ९ या आत्म कारक से नौवें हों। अगर लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो फुर्तीला, क्रोधी, कामुक प्रवृत्ति का होगा। आध्यात्मिक व निर्णायक प्रवृत्ति होगी अगर कारकांश मीन का है। व्यक्ति अपराध कर्म करेगा और हठी होगा अगर केतु कारकांश में सूर्य, राहु कारकांश में मंगल से दृष्ट हो तो विनाशक प्रवृत्ति देंगे। अगर कारकांश से दसवां बुध के अतिरिक्त अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति दृढ़निश्चयी होगा। कारकांश से तीसरे में अशुभ ग्रह वीर बनाते हैं। अगर कारकांश में पाँचवें और नौवें में अशुभ ग्रह हो किन्तु शुभ दृष्ट हो तो वह श्रेष्ठ कार्य करनेवाला होता है। कारकांश में या पाँचवें में शनि हो तो सभा में घबराहट देता है। कारकांश में दूसरे में केतु हो और अशुभ दृष्टि युक्त हो तो अभिव्यक्ति का अभाव होता है या अस्पष्ट वक्ता होता है।

उपपद आरूढ़ राशि है, लग्न से बारहवें की, दूसरे शब्दों में हम आरूढ़ बारहवें भाव की भी अनुच्छेद १९ के अनुसार निकाल सकते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगर पंचमेश आत्म कारक या लग्न, लग्न को देखें तो व्यक्ति बहुत विद्वान् होता है। आत्म कारक से या लग्न से चतुर्थेश लग्न या आत्म कारक को देखें तो जीवन खुशहाल रहता है। लग्न से द्वादशेश या आत्म कारक से अगर लग्न को (या आत्म कारक को) देखें तो खर्चीला बना देता है।

उदाहरण ३२

आदर्श कुण्डली की मानसिक विशेषताएँ बताइये।

लग्न मंगल से दृष्ट है — फुर्तीली व कामुक प्रवृत्ति। पंचमेश बुध आत्म कारक के साथ है — जातक बहुत बुद्धिमान् है। उसका जीवन खुशहाल था क्योंकि लग्न से चतुर्थेश जो सूर्य है वह आत्म कारक के साथ है। जातक अपने चरित्र के लिए प्रसिद्ध था। वह मधुर, क्षमावान् था और प्रगतिशील व उत्तरदायित्व के कार्य करता था। लग्नेश का आत्म कारक की राशि में होना तथा कारकांश का बलवान् होना तथा पंचमेश की आत्म कारक सें युति की ओर ध्यान दें।

१२८. वित्तीय विवरण

कुण्डली के सामान्य बल पर ज्योतिष के साधारण सिद्धान्तों का प्रयोग करके किसी की वित्तीय स्थिति ज्ञात की जा सकती है।

लग्नारूढ़ से ग्यारहवां अगर उच्च या मित्र ग्रहों द्वारा युक्त हो तो वह अधिक सम्पत्ति देता है। कानूनी या प्रश्नचिह्न (वाद) वाले माध्यम के द्वारा आय होती है यह ग्यारहवें ग्रह या ग्रहों के शुभ या अशुभ पर निर्भर है। अगर आरूढ़ लग्न शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो जातक धनी होगा। अगर आरूढ़ लग्न से दूसरे में शुक्र हो, चन्द्र या गुरु हो। अगर नवें की आरूढ़ राशि केन्द्र त्रिकोण, तीसरी या ग्यारहवीं आरूढ़ लग्न से हो तो व्यक्ति अधिक धन कमाता है तथा भाग्यशाली होता है। आरूढ़ राशि नौवें की अगर ६, ८, १२ आरूढ़ लग्न से हो तो धन कमाने में कठिनाई होगी व बहुत गरीब होगा। अधिक सम्पत्ति होगी अगर लग्नावस्था (व लग्न) और आरूढ़ नवें भाव की अशुभ अर्गला में न हो (अनुच्छेद ४५, ४६ देखें) और शुभ अर्गला में हों। गरीबी उस दशा में होगी अगर आत्म कारक (या लग्न) से आठवाँ आत्म कारक (या लग्न) को देखें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि कारकांश से नौवें राहु हो तो बदनाम औरत के कारण सम्पत्ति का विनाश होता है। अगर दूसरे भाव लग्नावस्था के शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट या लग्नारूढ़ के स्वामी या योग कारक ग्रहों (अनुच्छेद १४०) से दृष्ट हों तो अच्छी वित्तीय स्थिति होती है। सबसे अधिक उत्तम वित्तीय स्थिति होगी अगर आत्म कारक (आत्म कारक राशीश) और उससे दूसरे स्वामी के मध्य युति या दृष्टि हो।

उदाहरण ३३

आदर्श कुण्डली में वित्तीय स्थिति ज्ञात कीजिये।

लग्नारूढ़ जो कर्क है मंगल की अर्गला में है किन्तु दसवें चन्द्र की स्थिति के कारण कट गई है। शनि की लग्न में अर्गला चन्द्र व राहु की बारहवें में स्थिति के कारण समाप्त हो गई है। नवें में शुभ अर्गला है और वह किसी से कट नहीं रही है। लग्नारूढ़ से दूसरा चन्द्र (राहु भी) दृष्ट है जो लग्नारूढ़ का स्वामी है। आत्म कारक से दूसरा भाव शनि से दृष्ट है जो आत्म कारक राशि का स्वामी है। इसलिए इसकी वित्तीय स्थिति बहुत अच्छी है। आरूढ़ लग्न पर गुरु की दृष्टि की ओर ध्यान दें, जो आत्म कारक है, नैसर्गिक शुभ है और सूर्य आरूढ़ लग्न से दूसरे भाव का स्वामी है। नवें की आरूढ़ लग्नारूढ़ से तीसरे भाव में है। व्यक्ति ने बहुत कमाया था। आत्म कारक से अष्टमेश बुध, आत्म कारक के साथ है। यही कारण था कि उसने अपनी सारी कमाई खर्च कर दी।

१२९. स्वास्थ्य व रोग

व्यक्ति प्रायः स्वस्थ रहता है अगर आठवां भाव नवमेश से दृष्ट हो। भूचक्र राशि जिस अंग को प्रभावित करती है वह शुभ प्रभाव में रहने पर उसे विकसित या अविकसित कर देती है अशुभ प्रभाव के कारण जैमिनि के अनुसार लग्न व अन्य भाव बताते हैं, क्रमशः सिर, गर्दन, मुख, बाँहें, पेट, जाँघ, पृष्ठ, लिंग, पैर, आँखें व कान। सूर्य और लग्न में जो बलवान् हो वह देहं को बताता है। चन्द्र व लग्न में जो बलवान् हो, वह हृदय को बताता है, अगर पितृ कारक और मातृ कारक देह से सूर्य हो तो जीवन के उत्तरार्ध में शरीर में कष्ट होता है। आत्म कारक की किसी विशेष नवमांश में स्थिति (कारकांश) किसी सीमा तक कष्ट व खतरे के विषय में आत्म कारक की विभिन्न नवमांश में स्थिति के परिणाम बता सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेष	— बिल्लियों, चूहों आदि से डर
वृष	— बैल, घोड़ों आदि चौपायों से डर
मिथुन	— छूत के रोगों से बीमारी
कर्क	— जल से उत्पन्न रोग, कुष्ठ रोग
सिंह	— कुत्ते व सुवा दाँतों वाले जानवरों से डर
कन्या	— अग्नि, चर्मरोग, मोटापन
तुला–वृश्चिक	— जानवरों, पतंगों व रेंगनेवालों से भय
धनु	— वाहन दुर्घटना, ऊँचे से गिरना
मकर	— मछलियों, जंगली जानवरों, औरतों व आत्माओं से भय
कुम्भ	— मानसिक असन्तुलन, पागलपन
मीन	— जलीय रोग, पैरों में सूजन, जलोदर।

आत्म कारक अशुभ दृष्टि या युति से रहित हो तो व्यक्ति स्वस्थ होता है। अगर चन्द्र कारकांश में मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति जटिल रोगों से ग्रसित होता है। निम्न योग रोगों के विषय में बताते हैं। रोग का स्तर भावित ग्रह के बल द्वारा तथा मुक्ति शुभ दृष्टि से ज्ञात करें।

(ए) अण्डकोष में सूजन या हर्निया — कारकांश में गुलिक और बुध से दृष्ट।

(बी) कान में कष्ट — कारकांश में केतु व अशुभ युति या दृष्टि।

(सी) सफेद कुष्ठ — कारकांश से चौथे में चन्द्र शुक्र से दृष्ट।

(डी) काला कुष्ठ — कारकांश से चौथे में चन्द्र केतु से दृष्ट।

(ई) क्षय रोग — मंगल व राहु कारकांश में पाँचवें में चन्द्र मंगल को देखें तो रोग असाध्य।

(एफ) गाँठ या व्रण — कारकांश में चौथे में मंगल हो, या वहाँ छाले, चर्मरोग या कटाव होगा।

(जी) जलोदर — कारकांश से चौथे में केतु हो।

(एच) लग्नारूढ़ से सातवें में अगर राहु या केतु हो तो वायु या गैस की कठिनाई होती है। सबसे मुख्य तत्त्व लग्न, आत्म कारक की स्थित राशि, कारकांश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और इन सबसे छठवां भाग। आत्म कारक से छठे में अशुभ प्रभाव व कारकांश से भी अधिक चिन्ताजनक परिणाम आते हैं जितने लग्न से छठे से नहीं आते। किन्तु सापेक्ष अशुभ प्रभाव तीनों उपरोक्त तत्त्वों का लेकर ही उससे छठे का विचार करें।

उदाहरण ३४

आदर्श कुण्डली में जातक के स्वास्थ्य की प्रकृति ज्ञात कीजिये।

आठवाँ भाव नवमेश शनि से दृष्ट है। जातक सामान्यतः स्वस्थ था। कारकांश से छठवां चन्द्र से युत है और उससे पंचमेश शुभ ग्रह है। आत्म कारक से छठे में बुध की दृष्टि है और आत्म कारक गुरु की भी। जातक कभी भी जटिल बीमारी या अस्वस्थता से ग्रसित नहीं हुआ। आत्म कारक से नौवां दो अशुभ केतु व मंगल से युक्त है। नौवां पैर होता है। तुला दशा (स्थिर) में उसके बाएँ पैर में सूजन आ गई और यह मृत्यु तक रही।

१३०. शिक्षा विवरण

पाराशर के अनुसार, शिक्षा को चौथे भाव से देखते हैं। जैमिनि का मत शिक्षा के विषय में कोई विशेष विस्तृत नहीं है। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के लिए उन्होंने कुछ योग ही दिए हैं। यह पाठक पर है कि वह उनको उनके प्रयोग के अनुसार लगा लें। कारकांश में या उससे पाँचवें में गुरु व्याकरण, वेद, वेदांग में प्रवीण बनाता है। कारकांश में या उससे पाँचवें में बुध मीमांसक बनाता है। कारकांश में या उससे पाँचवें में मंगल कानूनी शिक्षा देता है। जब चन्द्र कारकांश में या उससे पाँचवें में हो तो वह संगीतज्ञ या साहित्यवेत्ता बनाता है। कारकांश में या उससे पाँचवें में केतु गणित में प्रवीण करता है। उपरोक्त योगों में गुरु की दृष्टि उसे विस्तृत ज्ञानी बनाती है।

उदाहरण ३५

आदर्श कुण्डली में शिक्षा के विषय में बताइये।

कारकांश में पाँचवां चन्द्र से युत व बुध से दृष्ट है। यह साहित्यवेत्ता और संगीतप्रेमी बनाता है। पंचमेश का आत्म कारक के साथ होना ध्यान करें। पाराशर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद्धति से शिक्षा का भाव मुख्य रूप से फलदायक है चतुर्थेश, पंचमेश व गुरु की दृष्टि से।

१३१. माता-पिता

साधारण पितृ कारक व मातृ कारक का निर्धारण अनुच्छेद ११ के अनुसार किया जाता है। आरूढ़ लग्न में चतुर्थेश का, मातृ कारक का उत्तम स्थिति में होना अच्छी व दीर्घ आयु माता के लिए जरूरी है। अगर आरूढ़ लग्न से नौवां तथा पितृ कारक अशुभ प्रभाव में न हो तो पिता दीर्घायु होते हैं।

१३२. भाई-बहन

उपपद से तृतीय भाव छोटे भाई व बहनों का तथा उपपद से ग्यारहवां भाव बड़े भाई व बहनों का होता है। उपपद से तीसरा व ग्यारहवां (उपपद के स्वामी) राहु या शनि से युक्त हो तो भाइयों की मृत्यु होती है।

अगर उपपद या उसके स्वामी से तीसरा या ग्यारहवां शुक्र से युक्त हो तो माता का गर्भपात होता है। उपपद या उसके स्वामी से तीसरे या ग्यारहवें मंगल, बुध और चन्द्र हों तो व्यक्ति के अनेक भाई व बहन होते हैं। उपपद से या उसके स्वामी से ग्यारहवां मंगल और शनि से दृष्ट हो तो बड़े भाई मर जाते हैं। अगर तीसरा अशुभ प्रभाव में हो तो छोटा भाई मर जाता है। मंगल उपपद या उसके स्वामी से तीसरे हो व शनि से दृष्ट हो तो व्यक्ति के अतिरिक्त भाई को मार देता है। जातक के ग्यारहवें और तीसरे उपपद से उसके स्वामी या केतु से युक्त हो तो उसीके अनुसार बड़ी या छोटी बहनें होती हैं।

इसका कोई विशेष निष्कर्ष नहीं है कि भाई-बहनों की वास्तविक संख्या क्या होगी। इसके लिए हमें साधारण सिद्धान्तों पर जाना पड़ेगा और संख्या के लिए तीसरे और ग्यारहवें भाव या भ्रातृ कारक के नवमांश का विचार करना पड़ेगा।

उदाहरण ३६

आदर्श कुण्डली में भाई-बहन व माता-पिता का विचार कीजिये।
माता-पिता—पितृ कारक सूर्य है।
मातृ कारक बुध है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आरूढ़ लग्न से नौवां शनि व शुक्र से दृष्ट है और पितृ कारक स्वयं मंगल, केतु, राहु व चन्द्र से दृष्ट है। पितृ कारक सूर्य स्वयं आत्म कारक है। पितृभाव भी अच्छी स्थिति में है। पिता जातक के ३७ वर्ष के होने पर मृत्यु को प्राप्त हुए। आरूढ़ से चौथा मंगल व केतु की स्थिति तथा सूर्य की दृष्टि से प्रभावित है। उसका दोष् बुध व गुरु की दृष्टि से अवश्य नियन्त्रण में है। आरूढ़ से आठवें में मातृ कारक बुध स्वयं अशुभ है और मंगल व केतु से प्रभावित भी है। माता की मृत्यु तुला (शूल दशा) में हो गयी थी। आरूढ़ से चतुर्थ तुला का प्रभावित होना देखिये।

भाई — भ्रातृ कारक चन्द्र है। उपपद लग्न मेष है। उससे तीसरा अशुभ शनि से युक्त है और ग्यारहवां एक शुभ व दो अशुभ से। उसका एक बड़ा भाई है। शनि ग्यारहवें का स्वामी है।

१३३. विवाह

जैमिनि के अनुसार विवाह का विवेचन करना, उपपद से शुरू होता है। निम्न सभी भोग उपपद से विचारणीय हैं। लेकिन हम कहते हैं कि उपपद और दारा कारक से दूसरा व सातवां भाव भी देखें। पति या पत्नी आकर्षक व घरेलू होंगे अगर दूसरा भाव शुभयुक्त हो और शुभ षड्वर्ग में हो या कारकांश से सातवें गुरु व चन्द्र हों। पत्नी उच्च घराने या निम्न घराने की दूसरे स्वामी के उच्च, शुभ राशि, नीच व शत्रुक्षेत्री होने पर निर्भर करती है। दूसरे भाव में उच्च का ग्रह हो तो जातक की अनेक पत्नियाँ होंगी। यदि कारकांश से सातवें भाव में बुध हो तो पत्नी विद्वान् होगी। जातक विदेशी पत्नी लायेगा अगर कारकांश से सातवें में चन्द्र हो। अगर दूसरा भाव अशुभ दृष्टि, युति, राशि में हो, तो पत्नी शीघ्र मर जाती है। इस विशेष योग में सूर्य की गणना नहीं होती। कारकांश से सातवें में शनि का योग हो तो पत्नी, पति से अधिक आयु की होगी। कारकांश से सातवें में राहु हो तो व्यक्ति विधवा से शादी या संबंध रखता है। मंगल व सूर्य इस योग में बताते हैं कि पत्नी में विकार है। पत्नी की मृत्यु उस दशा में नहीं होगी अगर दूसरा भाव सूर्य से युक्त या सिंह राशि में हो। शुभ ग्रहों की दृष्टि उपरोक्त योग में होने से योग समाप्त हो जाता है उपपद से दूसरे भाव में उच्च का ग्रह होने से या मिथुन राशि होने से अनेक पत्नियाँ होती हैं। अगर दूसरे भाव में आत्म कारक या उसी का स्वामी हो तो पत्नी की मृत्यु जीवन के उत्तरार्ध में होती है। दूसरे में शनि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व राहु हो तो व्यक्ति षड्यन्त्र के कारण पत्नी को छोड़ देता है। निम्न योगों में पत्नी रोगिणी व अनेक रोगों से ग्रसित रहती है —

उपपद से दूसरे में शुक्र व केतु हों या देखते हों — मासिक व गर्भाशय विकृति, बुध व केतु हड्डियों में जकड़न, शनि, सूर्य व राहु हानिकारक रोग, शनि व मंगल दूसरा बुध व मिथुन होने पर—पीनास रोग, मंगल व शनि—दूसरा मेष व वृश्चिक—पीनास रोग, शुक्र व शनि — दूसरा बुध व मंगल की राशि—कान में कष्ट, शुक्र व राहु दूसरा राशि मंगल व बुध की — दाँत के रोग; शनि व राहु — दूसरी राशि तुला व कन्या — वायु रोग।

उपरोक्त भोगों में शुभ दृष्टि से अशुभ प्रभाव कम हो जाता है। विवाह कष्टकारक हो जायेगा अगर उपपद और आत्म कारक दोनों प्रभावित हों।

उदाहरण ३७

आदर्श कुण्डली में सप्तम भाव (पत्नी भाव) का विवेचन कीजिये।

पत्नी का कारक मंगल है।

उपपद से दूसरी शुभ राशि है और द्वितीयेश शुभ (या सम) राशि में है। पत्नी आदरणीय परिवार से थी। दूसरा भाव प्रथम श्रेणी के क्रूर ग्रहों से दृष्ट है पत्नी बहुत शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। यह तथ्य सही नहीं है कि दारा कारक मंगल शुभ राशि में शुभ दृष्ट है। (सूर्य भी शुभ है)। पत्नी जातक के अड़तालीसवें वर्ष तक जीवित रही। ध्यान दें कि उपपद से दूसरा मंगल से दृष्ट है, पत्नी गर्भपात में अधिक खून बहने से मरी।

१३४. महिलाओं के लिए योग

बुध से या लग्न से नवमांश कुण्डली में अगर गुरु त्रिकोण में हो तो वह चरित्रवान् व पति भक्त होगी। यही परिणाम शुक्र के लग्न में होने से होगा। लग्न से केतु त्रिकोण या लग्न में हो (नवमांश से) तो महिला को मलिन व घृणित बना देता है। वह व्यवस्थित प्रकार से तथा उच्च मननशील होगी अगर चन्द्र नवमांश में वृष में हो और बुध व शुक्र नवमांश में लग्न से चौथे में हो। शनि जब नवमांश लग्न में हो या उससे त्रिकोण में हो तो महिला आकृति में पुरुष जैसी होगी, नारीत्व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौन्दर्य, नाजुकता कम होगी। महिला बदला लेनेवाली, मलिन, हठी, आलसी होगी — अगर केतु नवमांश लग्न या उससे त्रिकोण में हो। अगर मंगल लग्न को दृष्ट करे तो महिला अत्यधिक कामुक व क्रोधी होगी। वह अधम कार्य करनेवाली, मैथुन करनेवाली व अधोगतिवाली होगी, अगर नवमांश लग्न राशि जन्म लग्न राशि से बारहवीं या नौवीं हो। होरा लग्न में शुक्र व चन्द्र की स्थिति महिला को शृंगारप्रिय व कामी बना देते हैं। होरा लग्न का नवमांश केतु में संयुक्त व क्रूर ग्रह से दृष्ट हो तो वह वृद्ध समान व्यवहार करेगी। महिला क्रूर हृदय व अधोगतिवाली होगी कि पति की हत्या भी कर दे अगर उपपद से आठवां मंगल व केतु से दृष्ट हो।

नवमांश लग्न से सूर्य त्रिकोण में हो तो विधवा बना देता है। आत्म कारक से या लग्न से या वर्णद लग्न से तीसरे चन्द्रमा निश्चित विधवा बनाता है। होरा लग्न से आठवें मंगल व केतु की स्थिति अवश्य जल्दी विधवा बनाती है।

१३५. सन्तान

उपपद से पाँचवां तथा लग्न से पाँचवां भाव भी सन्तान से सम्बन्धित है। सभी योग इस अनुच्छेद के इन्हीं दोनों से सम्बन्धित हैं। कहे अनुसार हम उपपद के स्वामी से पाँचवें भाव के द्वारा भी बच्चों का विवेचन करते हैं।

उपपद से ग्यारहवां भाव और उपपद स्वामी से पाँचवां भाव सम राशि हो तो अनेक सन्तानें होती हैं। भविष्यवाणी की जा सकती है कि व्यक्ति की अनेक सन्तानें होंगी अगर उपपद से पाँचवां विषम राशि है और उपपद या उसके स्वामी से सूर्य व राहु सातवें में हो। उपपद से पाँचवां अगर चन्द्र से युक्त हो तो केवल एक सन्तान होगी। व्यक्ति के एक सन्तान नहीं होगी अगर सातवें स्वामी के नवमांश में हो तो जब अशुभ प्रभाव कम हो तो जीवन में बाद में बच्चे होंगे। उपपद से सातवें या ग्यारहवें मंगल या शनि स्थित हो तो सन्तान गोद ली हुई होती है। अगर नवमांश कुण्डली में लग्न से बुध त्रिकोण में हो तो पत्नी बाँझ होती है।

उदाहरण ३८

आदर्श कुण्डली में सन्तान सम्बन्धी जानकारी प्राप्त कीजिये।

उपपद में पाँचवां विषम राशि है। उपपद से पंचमेश ग्यारहवें में है और उत्तम बलवान् है। व्यक्ति के अनेक सन्तानें हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३६. व्यवसाय

पाराशरी में, दशम से व्यवसाय, प्रसिद्धि तथा सम्मान देखते हैं। लेकिन जैमिनि में कारकांश की व्यवसाय की प्रकृति बताने में मुख्य भूमिका है जिसमें व्यक्ति बढ़ना चाहता है। जबकि व्यवसाय की विशेष प्रकृति ज्ञात करना कठिन है लेकिन जैमिनि द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों का सावधानीपूर्वक अन्वेषण सम्भव बनाता है। उस सिद्धांत द्वारा व्यवसाय के चयन में कोई निश्चित संकेत देकर निम्न योग कारकांश पर प्रयुक्त हो सकते हैं। अगर कारकांश या उससे दसवां किसी ग्रह से युक्त न हो तो कारकांश से दशमेश की नवमांश में स्थिति से व्यवसाय ज्ञात करें।

कारकांश में सूर्य राजनैतिक नेतृत्व और राजकीय सेवा देता है। पूर्ण चन्द्र व शुक्र कारकांश में लेखक, उपदेशक और वह जो अपनी जीविका ज्ञान विस्तार से करते हैं। जब आत्म कारक के अंशों में मंगल हो तो व्यवसाय प्रेस, फैक्टरी, रसायन, अग्नि और धातु से सम्बन्धित होगा। बुध किसी को व्यापारी, मूर्तिकार, कलाकार, कपड़े का व्यापारी और शास्त्रीय विद्या में प्रवीण करता है। बृहस्पति कारकांश में धार्मिक विषयों का गूढ़ विद्वान् और दार्शनिक बनाता है। कारकांश में शुक्र लेखक, शासक, मुन्शी और सरकारी अधिकारी बनाता है। शनि किसी को विख्यात व्यापारी बनाता है। कारकांश राहु हो तो व्यक्ति धनुर्विद्या से जीविका चलाता है या दवाई, ठग विद्या या मशीन निर्माण से या मैकेनिक होगा। केतु किसी की जीविका धोखाधड़ी या नीच कर्म द्वारा बताता है। कारकांश में राहु व सूर्य बिना अशुभ प्रभाव के संकेत करते हैं। डाक्टर जो जहरीली दवा का प्रयोग करे या दवाखाना और नशीली वस्तुएँ कोई ठगने की कला से जीविका चलायेगा। अगर कारकांश राशि गुलिक की राशि हो (अनुच्छेद ३४ देखें) और चन्द्र से दृष्ट हो तो व्यक्ति अपने त्यागपूर्ण व्यवहार और अन्य धार्मिक कार्यों से जीविका अर्जित करेगा अगर कारकांश में केतु हो और शुक्र से दृष्ट हो। कारकांश को सूर्य व शुक्र देखें तो वह विदेश सचिव या राजा का कर्मचारी बनाता है। दसवें में सूर्य केवल बृहस्पति से दृष्ट हो तो व्यक्ति चौपायों की रक्षा करता है। (जैसे डेरी फार्म चलाकर।)

कारकांश से तीसरे और छठे में क्रूर ग्रह हों तो खेती या बागवानी देते हैं। कारकांश से नौवें किसी विशाल सम्पत्ति व भूमि से आय देता है। अगर चन्द्र कारकांश में हो और शुक्र से दृष्ट हो तो वह रसायनविद्या देता है। व्यक्ति डाक्टर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होगा अगर कारकांश में चन्द्र बुध से दृष्ट हो। अगर शनि कारकांश में या उससे चौथे में हो तो व्यक्ति अस्त्र-शस्त्र विद्या में प्रवीण होगा और अपना व्यवसाय पुलिस या सेना में चुनेगा। कारकांश में या उससे चौथे में केतु घड़ीसाज बनाता है। उपरोक्त स्थिति में राहु मशीन बनानेवाला या खदान खोदने का व्यवसाय देता है। कारकांश से चौथे में सूर्य या मंगल व्यक्ति को अनेक शस्त्रों से जीविका देते हैं। कारकांश से पाँचवें या लग्न में चन्द्र व गुरु संकेत करते हैं कि व्यक्ति प्रसिद्ध लेखक, सम्पादक व साहित्यिक या समाचार-पत्र का लेखक या सम्पादक होगा। उपरोक्त योग में गुरु के स्थान पर शुक्र हो तो व्यक्ति सामान्य लेखक, साहित्यिक या सम्पादक होगा। कोई महान् कवि या साहित्यकार होगा अगर शुक्र अकेला कारकांश में हो या उससे पाँचवें में हो। गुरु उपरोक्त योग में हो तो सभी प्रकार के ज्ञान को देता है और व्यक्ति एक साहित्यिक होगा। व्यक्ति सरकार में उच्च अधिकारी होता है अगर गुरु या शुक्र लग्नेश या सातवें से पाँचवें में हों। लग्नेश से या पाँचवें से क्रूर ग्रह तीसरे या छठे में हों तो वह सेनापति होता है, अगर कारकांश पर शुभ व अशुभ प्रभाव समान हो तो प्रजाति का नेता होता है।

उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट है कि कारकांश की स्थिति एवं ग्रहों की स्थिति विशेष भाव में व्यवसाय या जीविका का निर्धारण करती है। योग का बलाबल ग्रहों व राशियों के शुभ या अशुभ अर्गला के अनुसार सबल या निर्बल होता है। सावधानीपूर्वक किया गया सूत्रों का अध्ययन विभिन्न ग्रहों से निम्न व्यवसाय देता है।

१. सूर्य —राष्ट्रपति, राजा, मन्त्री व अन्य उच्च श्रेणी की सरकारी सेवाएँ।
२. चन्द्र —मन्त्री तथा सरकार का उच्च अधिकारी।
३. मंगल —सेनापति, वैज्ञानिक तथा अग्नि उद्योग।
४. बुध —दर्शन का प्राध्यापक, लेखक, कलाकार, मूर्तिकार, जुलाहा, सम्पादक, समाचार-पत्र का लेखक, विद्वान्, अधिकारी।
५. गुरु —पुजारी, जज, दर्शन का अध्यापक, नेता।
६. शुक्र —सरकारी अधिकारी, निदेशक, सचिव, नेताओं का प्रतिनिधि।
७. शनि —साधारण व सामान्य व्यवसाय, शस्त्रों का निर्माण, कठोर वस्तु का व्यापारी, प्रकाशक, सुरक्षा कर्मचारी आदि।
८. राहु —चोर, सुरक्षा कर्मचारी, डाक्टर व वैद्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९. केतु —नौकर, श्रमिक, वाहन चालक, मैकेनिक, ईंट बनानेवाला, राज मिस्त्री।

उदाहरण ३९

आदर्श कुण्डली में व्यवसाय ज्ञात कीजिये।

कारकांश में या उससे दसवें कोई ग्रह नहीं है। कारकांश से दशमेश सूर्य, शुक्र व मंगल के साथ है और राहु व केतु से दृष्ट है। कारकांश से दशमेश की बलवान् स्थिति तथा उसकी उपरोक्त बताए गए ग्रहों से युति व्यवसाय का निर्धारण करेगी जो — शनि—व्यापारी, मंगल—प्रेस (प्रकाशन) आदि, शुक्र—साहित्यकार, अतः अनेक व्यवसाय निर्देशित हैं।

१३७. मृत्यु के स्रोत

हम अनुच्छेद १०१ तथा १२३ में पहले ही वर्णन कर चुके हैं कि आयु निर्धारण व मृत्यु में प्रभावी राशियों का। इस अनुच्छेद के विषय में, मैं उन परिस्थितियों को लेखबद्ध करूँगा जिनमें वास्तव में मृत्यु होगी, जैसे — अन्तिम समय, प्राकृतिक, घातक या शान्तिपूर्ण मृत्यु। जैमिनि में से मैंने वही सिद्धान्त दिएं हैं और यह पाठकों पर है कि वह अपने अभ्यास या योग्यता से विश्वास प्राप्त करें।

१३८. मृत्यु की प्रकृति

जैमिनि के व्याख्याकारों के अनुसार दृष्ट मरण का अर्थ मृत्यु का कारण अग्नि, विस्फोट, भूकम्प, भूस्खलन, ज्वालामुखी संबंधी, ऊँचाई से गिरना आदि। शुभ मरण या प्राकृतिक मृत्यु जो मृत्यु ज्वर या अन्य बीमारियों से हो। लग्न के आत्म कारक से तीसरे अशुभ ग्रह हों तो व्यक्ति की अप्राकृतिक मृत्यु होती है। शुभ ग्रह प्राकृतिक मृत्यु देते हैं। यहाँ भी शुभ दृष्टि अशुभ प्रभाव को कम करती है तथा अशुभ प्रभाव शुभ स्थिति को बदलकर मृत्यु की प्रकृति बदल देते हैं। निम्न योगों में जब ग्रह का प्रभाव लेंगे तभी स्वयमेव दृष्टि को भी देखेंगे।

लग्न से या आत्म कारक से तीसरा भाव जब सूर्य से संयुक्त (या दृष्ट) होगा तो मृत्यु सरकारी आदेश से होगी, जैसे — फाँसी, सरकलम आदि। मंगल — अग्नि, अस्त्र, घाव। शनि व गुलिक — जहर, साँप के काटे से, डूबने या कैद से। चन्द्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व गुलिक — अपच भोजन, कठोर पथ्य। राहु व सूर्य के कारकांश में होने से मृत्यु साँप के काटे से होती है।

लग्न से या आत्म कारक से तीसरे भाव में चन्द्र हो (दृष्ट हो) तो मृत्यु उपभोग से होती है : शनि — वायु रोग, सन्धिवात, केतु—जलोदर व अन्य जलीय रोग, गुरु—अपचय, उल्टी, कफ, शुक्र—लिंग व स्त्री रोग, दंश रोग। जब अनेक ग्रह तीसरे भाव से सम्बन्धित हों तो मृत्यु अनेक जटिल व समीकरणीय रोगों से होती है।

जब मृत्यु भाव जो आत्म कारक भी है लग्न से तीसरा शुभ ग्रह युक्त हो तो मृत्यु पवित्र स्थान में होती है जैसे — मंदिर, चर्च या मस्जिद के पास। अगर तीसरे में अशुभ ग्रह हों तो मृत्यु बुरे वातावरण में होती है जहाँ पर पाप घटित हो चुके हैं। जातक मृत्यु के समय होश में होगा या बेहोश यह तीसरे भाव में गुरु, शुक्र अथवा अन्य ग्रहों की युति एवं दृष्टि से ज्ञात होगा।

उदाहरण ४०

आदर्श कुण्डली में मृत्यु का स्रोत ज्ञात कीजिये।

तृतीय कर्क है शुभ राशि और उसमें कोई ग्रह नहीं है। व्यक्ति की प्राकृतिक मृत्यु होगी। तीसरे को तीन ग्रह देख रहे हैं — सूर्य, बुध, व सबसे बलवान् गुरु हैं। उसकी मृत्यु कफ के विकार के कारण हुई थी और वह अन्तिम समय में होश में था।

१३९. जैमिनि में योग

सुविधा के लिए, मैं सुझाव दूँगा कि जैमिनि पद्धति के योगों के अनुसार तीन विभिन्न श्रेणियाँ हैं जो राज योग, अरिष्ट योग, मिश्रित योग जिसमें संन्यास योग, वाहन योग आदि हैं।

१४०. राजयोग

जब जन्म लग्न, होरा लग्न व घटिका लग्न एक ही ग्रह से दृष्ट हों तो शक्तिशाली राजयोग बनता है और व्यक्ति राजा या उसके समान होता है। अगर एक या दो लग्न दृष्ट हों तो योग नहीं बनता। यह स्पष्ट नहीं है कि तीनों लग्न एक ही ग्रह से दृष्ट हों या विभिन्न ग्रहों से।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजयोग उस समय बनता है, अगर राशि, नवमांश, द्रेष्काण तथा लग्न व समय संयुक्त हों या किसी ग्रह से दृष्ट हों। व्यक्ति राजा होता है। योग के घनत्व में कमी आ जायेगी, अगर दृष्टि या युति सभी छह तत्त्वों में न हो। अगर एक ही ग्रह दृष्ट करता है तो योग अति उत्तम होता है।

राजयोग उस समय भी बन सकता है जब या तो नवमांश में या द्रेष्काण में लग्न, होरा लग्न, घटिका लग्न दृष्ट हो (संयुक्त हो) किसी ग्रह के द्वारा। उपरोक्त सभी में सभी बलवान् राजयोग में तीनों तत्त्व हों न कि एक या दो ग्रह से सम्बन्ध हो। व्याख्याकारों ने स्पष्ट किया है कि अगर एक तत्त्व (लग्न, होरा लग्न या घटिका लग्न ही सम्बन्धित) है तो योग साधारण होगा। अनेक व्याख्याकारों ने कहा है (लग्न, होरा लग्न, घटिका लग्न) एक ही ग्रह से दृष्ट होने चाहिए।

जब मंगल, शुक्र व केतु आपस में एक दूसरे को देखते हों या एक दूसरे से तीसरे हों तो साधारण तरह का राजयोग होगा जो वैज्ञानिक कहलाता है, जातक की प्रसिद्धि व महत्ता बताता है।

राजयोग निम्न स्थितियों में बनते हैं —

(१) जब आत्म कारक से दूंसरा, चौथा, पाँचवां समान बल का हो या शुभ युत हो।

(२) आत्म कारक से तीसरा व छठा समान बल का हो और क्रूर ग्रह से युक्त हो।

(३) अगर लग्नेश से या सप्तमेश से दूसरा, चौथा, पाँचवां शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, अगर प्रभाव मिश्रित हो तो वह शासक होगा लेकिन वास्तविक शासक नहीं होगा।

कारकांश में शुक्र की स्थिति बहुत शुभदायक है, यह कहा गया है कि वह बहुत भाग्य व जीवन देता है।

निम्न राजयोग भी विभिन्न श्रेणियों की राजनैतिक प्रसिद्धि और अपनी क्षमता के अनुसार पद देता है —

(क) लग्नेश व पाँचवाँ संयुक्त हो और उच्च व नीच के अपने नवमांश में हो तो महान् शासक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) जब योग लग्नेश व पाँचवें, सातवें में हो तो वह अपनी प्रतिभा को जीवन के उत्तरार्ध में प्रकट करता है।

(ग) शुक्र, मंगल व केतु आत्म कारक राशि में या उससे दूसरे या नवें में—राजा।

(घ) लग्न, सातवें, नौवें की बलवान् स्थिति—राजनैतिक शक्ति।

(ङ) लग्न व सप्तम में समान ग्रह—राजयोग बनाते हैं किन्तु वह जीवन के उत्तरार्ध में फलदायक होता है।

(च) लग्न व चौथें में समान ग्रह—प्रसिद्धि व सम्मानकारक होते हैं।

(छ) चन्द्र व शुक्र लग्न और ग्यारहवें में या लग्न या सप्तम में शुभ प्रभाव में—शासक।

(ज) राजयोग जीवन के पूर्वार्ध में — अगर बुध व शुक्र लग्न व ग्यारहवें में हों या लग्न या सातवां शुभ दृष्टियुक्त हो।

(झ) चन्द्र व शुक्र संयुक्त या आत्म कारक को देखें या उससे दसवें हों।

(ञ) चन्द्र सातवें में शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट—राजा का कर्मचारी।

(ट) त्रिकोण व केन्द्र शुभ ग्रह से रहित—राजा का नौकर।

(ठ) शुभ ग्रह या शुभ वर्गों में ग्रह आत्म कारक की राशि में या उससे दसवें में — शुभ राजयोग देता है।

(ड) चन्द्र गुरु से चौथे या ग्यारहवें नवमांश में प्रसिद्धि व अधिकारी।

(ढ) जन्म राशि में शुभ ग्रह और दसवां व ग्यारहवां नवमांश में — स्पष्ट बलवान् राजयोग।

(ण) लग्न व आत्म कारक राशि उच्च ग्रह से संयुक्त या दृष्ट—शासक।

(त) नवमांश राशि आत्म कारक की लग्न या जन्म राशि हो था शुक्र से युक्त हो — उच्च राजयोग।

(थ) आरूढ़ लग्न में नौवें की नवमांश राशि में समान शुभ ग्रह — राजनैतिक शक्ति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(द) आत्म कारक या आरूढ़ लग्न से तीसरे व छठे में क्रूर ग्रह — शासक। हमें जैमिनि द्वारा कहा गया है कि हम राजयोग का अध्ययन करें, जब आरम्भिक बिन्दु निश्चित रूप से पता न हो, लग्न से आत्म कारक और पाँचवें से।

जैमिनि द्वारा दिए गए राज़योग अभी तक परीक्षित नहीं किए गये हैं क्योंकि यह तरीका संदेहास्पद था। यह पाठकों पर है कि वे अनुभव करें, विभिन्न योगों को प्रयोगात्मक उदाहरणों में लगाएँ और देखें कि कहाँ तक वे घटित होते हैं।

उदाहरण ४१

आदर्श कुण्डली में अगर कोई राजयोग हो तो वर्णन कीजिये।

निम्न राजयोग उपस्थित हैं —

(क) जन्म लग्न मंगल व केतु से दृष्ट है। होरा लग्न व घटिका लग्न भी उन्हीं ग्रहों से दृष्ट है जैसे — शुक्र, सूर्य तथा बुध—अतः शक्तिशाली राजयोग है।

(ख) नवमांश लग्न, होरा लग्न व घटिका लग्न में शुक्र, राहु व केतु उत्तरोत्तर है एक शक्तिशाली राजयोग।

(ग) दसवें केन्द्र को छोड़कर, अन्य सभी केन्द्र व त्रिकोण शुभ ग्रह से रहित हैं।

(घ) कारकांश और जन्म राशि समान है।

यह पाठक की रुचि के लिए है कि जातक ने राजयोग के सभी आशीर्वादों का लाभ उठाया है कुछ प्रबन्ध शक्ति में कमी से।

१४१. अरिष्ट योग

ये दुर्भाग्य की ओर संकेत करते हैं। लेकिन मैंने इस भाग में उन योगों को भी लिया है जो पैशाची या खूनी प्रकृति के हैं। निम्न योग विशेष ध्यान देने योग्य हैं।

केतु कारकांश में — चोर, राहु व सूर्य कारकांश में मंगल से दृष्ट—दूसरे के घरों को जलाकर खुश होना, केतु कारकांश में बुध व शनि से दृष्ट—नपुंसक, कारकांश में नौवें में शुक्र व मंगल का षड्वर्ग प्रबल हो तो अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्री से सम्भोग। कारकांश से नौवां गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो व्यक्ति भार्याशासित होता है। जन्म लग्न आरूढ़ से दूसरे या आठवें में क्रूर ग्रह हो —

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुर्भाग्य व गरीबी। लग्नारूढ़ से बारहवें में बुध — मुकदमेबाजी में हानि। समान ग्रह अगर दूसरे व बारहवें में, पाँचवें व नौवें में, बारहवें व छठें में, दसवें व चौथे में कैद। समान ग्रह संख्या दूसरे व नौवें में — महान दुर्भाग्य। आरूढ़ पाँचवें भाव में राहु हो सूर्य से दृष्ट — दृष्टिहीनता। कारकांश में शनि षड्वर्ग हो कारकांश शनि से युक्त हो, राहु या अन्य क्रूर ग्रह — अवैध सन्तान। कारकांश में गुलिक से व्यक्ति को दूसरों को जहर लेने की सलाह देनेवाला या स्वयं जहर खाकर मरनेवाला।

१४२. मिश्रित योग

यहाँ जो योग दिए गये हैं वे उनके लिए हैं जो केवल राजनैतिक रुचि न रखकर अन्य वस्तुओं में जिज्ञासु हैं।

अगर चन्द्र व शुक्र परस्पर दृष्टि डालें या चन्द्र शुक्र से तीसरे या दोनों दूसरे में हों तो व्यक्ति वाहन और घोड़े रखता है। कारकांश से चौथे पर चन्द्र व शुक्र की दृष्टि हो तो व्यक्ति को सुन्दर घर होगा। कारकांश से चौथे में राहु व शनि हो तो पत्थर से बना घर देंगे जबकि मंगल व केतु ईंट से बना घर देते हैं। जब सूर्य चौथे में हो तो फूँस की झोपड़ी विकसित ढाँचे में देगा।

उपपद से दूसरे में क्रूर ग्रह व्यक्ति को तपस्वी बनाते हैं। चन्द्र व सातवाँ शुभ ग्रह से युक्त हो तो व्यक्ति महन्त व धार्मिक मुखिया होगा।

अगर आत्म कारक कुम्भ नवमांश में हो तो व्यक्ति जनता के लिए तालाब, बाग, बगीचे लगवाता है। कारकांश मीन का हो तो भी दान कार्य करता है। कारकांश से बारहवां शुभ ग्रह हो तो व्यक्ति को मोक्ष मिलता है या कारकांश मेष या धनु केतु से मुक्त हो तो, कारकांश में सूर्य, चन्द्र, शुक्र, मंगल, बुध, गुरु व केतु हो तो व्यक्ति की शिव, गौरी, लक्ष्मी, षड्मुख, विष्णु, साम्बशिव, दुर्गा व गणपति में उत्तरोत्तर भक्ति होती है। कारकांश स्थिर हो और शनि व शुक्र से युक्त हो तो व्यक्ति शूद्र देवता की उपासना करता है। व्यक्ति मंत्रवेदी होगा अगर कारकांश के पाँचवें व नौवें में क्रूर ग्रह हो। भगवान् में आस्था देवत्व कारक से ज्ञात की जा सकती है। देवत्व कारक शुभ ग्रह है तो शुभ देवता की उपासना करेगा, क्रूर ग्रह हो तो क्रूर देवता की। देवत्व कारक के उच्च, बलवान्, नीच या निर्बल होने के अनुसार उसकी आस्था शूद्र या अतिरिक्त से होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय ८

घटना समय

१४३. साधारण टिप्पणियाँ

भविष्य की घटनाओं की समय गणना करना कठोर नारियल को तोड़ने के समान है (अत्यन्त कठिन है)। जन्मकुण्डली सम्पूर्ण जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण होती हैं और पाराशर के अनुसार, विभिन्न योगों के परिणामस्वरूप उसका क्रियान्वयन विभिन्न दशाओं व भुक्तियों में जो कुछ सीमा तक गोचर से प्रभावित होती हैं उनमें मिलता है। यहाँ जैमिनि में हमें अद्वितीय तरीका मिला है सभी समस्याओं की दिशा में यहाँ कोई ग्रह दशा या गोचर नहीं है, जबकि कुछ सुझाव जातक राजे तथा वचनतिय में हैं जो मुख्यतया आधारित हैं। जैमिनि पर जबकि राशि दशा गोचर से प्रभावित है। जैमिनि में अनेक दशाएँ हैं जो अनुच्छेद ७३ में बताई गई हैं। विभिन्न घटनाओं के लिए कौन-कौन-सी दशाएँ विशेष उपयुक्त हैं इसका कोई स्पष्ट निर्देश नहीं दिया गया है। व्याख्याकारों ने जबकिं इधर-उधर उसके संकेत दिए हैं जिसके ऊपर कोई अपना निर्णय भी ले सकता है। जिन पण्डितों से मैं इस विषय पर चर्चा कर प्रसन्न हुआ, वह भी विभक्त विचारों के थे। कुछ ने ऋषि की प्रिय दशा चर बताई जो सभी मुख्य घटनाओं के लिए है, अध्याय १, पाद २, सूत्र १२१ में जैमिनि ने कहा है कि सभी उपरोक्त योग फलदायक होंगे विभिन्न राशि की दशाओं के आरम्भ में। मैं असमर्थ हूँ कोई भी निश्चित सहायता करने में। जो अनेक कुण्डलियों पर मैंने जैमिनि की दशाएँ प्रयुक्त की हैं वह भी पर्याप्त नहीं हैं कि उन्हें श्रेणीबद्ध करके विचार या टिप्पणी दी जा सके। मैं विद्वानों की विचारधारा को प्रसारित करना चाहूँगा न कि अपने विचारों के दबाव को, जिसे मैं "प्रयोगात्मक प्रमाण" कहता हूँ। स्थिर दशा भी उतनी ही विश्वसनीय है सिर्फ मृत्यु ज्ञात करने के लिए ही नहीं अन्य घटनाओं के लिए भी, जबकि त्रिकोण दशा जिस पर हमारे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुसंधान विभाग ने कार्य किया वह भी उत्साहजनक परिणाम दे रही है। निर्याण शूल दशा बहुत उपयोगी है माता-पिता, भाई-बहन, संबंधी की मृत्यु बताने के लिए जबकि निर्याण फल शूल दशा स्वयं अपनी मृत्यु जो अधिकांश मध्यायु की कुण्डली है, जो पूर्णतः शिक्षा संबंधी रुचि के लिए उपयुक्त है। मैंने यह पाया है कि विभिन्न सभी तरीके दशा पद्धति के सहायक रूप में हैं और एक सही तरीका समय ज्ञात करने का विकसित करना है जो कभी ठीक कभी गलत प्रक्रिया से होगा। मेरा कार्य वकालत करना नहीं है लेकिन साधारणतः जैमिनि सिद्धान्तों का विश्वसनीय पता देना है जैसा मैंने उन्हें समझा है। यह मैं अपने बुद्धिमान पाठकों पर छोड़ता हूँ कि वह स्वयं दशा का चयन करें। मैं केवल अपने विचार रख सकता हूँ कि दोनों चर व स्थिर दशा को प्रमुख घटनाओं की भविष्यवाणियों के लिए प्रयुक्त करें और निर्याण शूल दशा को माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी व संबंधियों की मृत्यु की अवधि ज्ञात करने के लिए।

१४४. परिणाम की प्रकृति

पाराशरी में अनेक तथ्यों की दशा व भुक्ति के परिणाम ज्ञात करने के लिए विचार करना पड़ता है। साधारणतौर पर यह कहा गया है कि राशि अपनी दशा में कारकांश व आरूढ़ लग्न से उस भाव का फल देगी जहाँ वह है। राशि जो उच्च ग्रह से या अपने स्वामी से युक्त है वह शुभ फल देती है। सभी सम्बन्धों के अतिरिक्त कोई विशेष राशि जिसकी दशा विचारणीय है, कारकांश, आत्म कारक आदि के कारण शुभ या अशुभ परिणाम देने में समर्थ होती है। अधिकांश निर्भर करता है उस राशि से ग्रहों की स्थिति में समरूपता या असमरूपता पर। दूसरे में क्रूर ग्रह वित्तीय हानि देते हैं। जब पाँचवीं राशि सूर्य या चन्द्र की शनि से युक्त हो, या चन्द्र और राहु छठे या आठवें में हो, तो सरकार के क्रोध से हानि। दूसरी ओर, सूर्य को छठे में स्थिति अपने उच्चाधिकारियों से लाभ व सम्पत्ति में वृद्धि करती है। राशि के दोनों ओर क्रूर ग्रह हों या आठवें में या राशि विशेष में हों तो वहाँ कष्ट, दुर्भाग्य, हानि और राशि दशा के विपरीत जाता है। गुरु की केन्द्र में स्थिति को प्राथमिकता दी है। उपरोक्त स्थिति में व निम्न योग में मैं सहमत हूँ वचनातिय के कार्य से, जो जैमिनि पर प्राथमिक रूप में आधारित है। निम्न नियम दशा व्याख्या के एक ही स्रोत से लिये गये हैं, (१). वह राशि दशा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्पत्ति देगी जिससे चन्द्र व शुक्र तीसरे में हों, (२) धन की हानि होगी अगर यह ग्रह बारहवें में है, (३) राहु बारहवें में — ज्वर व शारीरिक कष्ट, (४) राशि में राहु—विदेश यात्रा, (५) क्रूर ग्रह नौवें में पिता को खतरा। लग्न से जो राशि की दशा हो और उस राशि पर शुभ व अशुभ प्रभाव केन्द्र का विचार करके ही भाग्यदायक या दुर्भाग्य फलदायक परिणाम देखें। अशुभ ग्रह चौथे में हो तो हमें माता के स्वास्थ्य को खतरा बताना चाहिए।

विभिन्न राशियों की दशाओं में, तुला, कर्क, वृष, मेष, धनु, कन्या व मिथुन कहा जाता है, शुभफल देती हैं। उनका शुभत्व तुला से मिथुन तक उत्तरोत्तर कम होता जाता है। सिंह, मेष, कुम्भ, वृश्चिक तथा मकर अशुभ फल देती हैं। उनका अशुभ प्रभाव, सिंह से मकर तक उत्तरोत्तर कम होता जाता है। संक्षेप में, राशि दशा का फल उनके बल व निर्बल.स्वामी पर अधिक निर्भर करता है और स्वामी व राशि पर अशुभ प्रभाव का भी विचार करते हैं।

जैमिनि ने जो संकेत दिये हैं अध्याय १, पाद २ जिसका वर्णन अनुच्छेद १४३ में किया है। उससे हमने एक साधारण सिद्धान्त निकाला है कि किसी भी योग का परिणाम तभी फलदायक होगा जब उस योग से सम्बन्धित राशि की दशा व भुक्ति होगी। उदाहरण के लिए अध्याय १, पाद १, सूत्र ४२ में कारकांश से चौथे में शुक्र व चन्द्र महलनुमा भवन देते हैं। माना कारकांश मेष है तब योग कर्क या चौथे में होगा। कर्क की दशा व्यक्ति को समर्थ बनायेगी कि वह भवन या अन्य सम्पत्ति ले सके और उपरोक्त बताये गये अशुभ प्रभाव भी उस पर न हों।

१४५. पिता की मृत्यु

(१) सूर्य और शुक्र में जो बलवान् हो वह पितृमारक होता है। सूर्य व शुक्र में जो निर्बल हो और अशुभ दृष्टि में हो तो वह पितृमारक होगा। पिता की मृत्यु शूल राशि (पहली, पाँचवीं, नौवीं) की दशा में होगी, (अ) पितृमारक राशि से जो पितृमारक से अष्टमेश के द्वारा स्थित राशि है। माना कि पितृमारक शुक्र है उसका देशान्तर २०° कन्या है, और पितृमारक से अष्टमेश मंगल है, उसका देशान्तर २४° वृष है। तब मंगल बलवान् है। पिता की मृत्यु होगी, पहली, पाँचवीं, नौवीं राशि वृष (मंगल स्थित राशि) की दशा में। (२) लग्न से नौवाँ और सप्तम से नौवाँ,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनमें जो शक्तिशाली हो। पिता की मृत्यु निर्याण शूल दशा में (अनुच्छेद ९८) बलवान् राशि जो है उसमें होगी। उदाहरण कुम्भ व सिंह लग्न से व सप्तम से बनी है और सिंह बलशाली है, तब पिता की मृत्यु सिंह की शूल दशा (पहली) सिंह, धनु (पाँचवीं) और मेष (नौवीं) में होगी। उपरोक्त दो पद्धतियों में दूसरी अधिक विश्वसनीय है जो विशेष रूप से मृत्यु की भविष्यवाणी के लिए है।

उदाहरण ४२

आदर्श कुण्डली में पिता का मारक समय ज्ञात कीजिये।

(१) पितृमारक है सूर्य व शुक्र —

शुक्र के अंश अधिक हैं वह सूर्य से अधिक बलवान् है।

वह पितृमारक है।

सूर्य अशुभ ग्रह से दृष्ट है।

इसलिए सूर्य भी पितृमारक हो गया है।

लेकिन शुक्र भी अशुभ शनि, जो दोनों में बलवान् है, से दृष्ट है अतः शुक्र पितृमारक है। शुक्र से अष्टमेश चन्द्र है। चन्द्र व शुक्र में शुक्र के अंश अधिक होने से वह अधिक बलवान् है। पिता की मृत्यु हो सकती है।धनु की दशा (पहली) मेष (पाँचवीं) सिंह (नौवीं) में।

सिंह दशा के अन्त में (अनुच्छेद १२१) जातक ३६ वर्ष का था। पिना वास्तव में जातक के सैंतीसवें वर्ष में गुजर गए।

लग्न से नौवां तथा सातवें से नौवां मकर व कर्क है। दूसरा बलवान् है (उदाहरण १८)।

पिता की मृत्यु हो सकती है कर्क में वृश्चिक और मीन में। मीन की दशा जीवन में बहुत बाद में है। वृश्चिक और कर्क में दूसरी के अंश अधिक होने से वह अधिक बलवान् है। कर्क की शूल दशा समाप्त होगी ९ वर्ष की ३६ से ४५ में। पिता की मृत्यु हुई कर्क की दशा आते ही।

१४६. माता की मृत्यु

मंगल व चन्द्र में जो बलवान् हो वह मातृमारक होता है। उन दो में से निर्बल अशुभ से दृष्ट होने पर मातृमारक हो जाता है। (अ) माता की मृत्यु हो सकती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है (चर) दशा शूल राशि के (पहली, पाँचवीं) से (१) मातृमारक राशि से आठवीं से (२) मातृमारक राशि से अष्टमेश की स्थित राशि से।

लग्न से सातवें से चौथी राशि जो बलवान् हो ज्ञात करें। बलवान् राशि से पहली, पाँचवीं व नौवीं राशि की निर्याण शूल दशा में माता की मृत्यु होगी।

उदाहरणं ४३

आदर्श कुण्डली में माता की मृत्यु अवधि ज्ञात कीजिये।

चन्द्र, मंगल मातृमारक है। चन्द्र (१८, २९) मंगल (०'५३) से बलवान् है। चन्द्र व मंगल दोनों अशुभ सूर्य से दृष्ट हैं। इसलिए चन्द्र बलवान् ग्रह मातृमारक है।

मातृमारक से अष्टमेश मंगल है।

अतः चन्द्र को प्राथमिकता है।

मेष की शूल दशा में माता की मृत्यु हो सकती है जो मेष, सिंह, धनु है।

तीनों में मेष बलवान् है उसमें दो ग्रह हैं।

मेष की दशा समाप्त होगी। (उदाहरण ?०) १३ वर्ष की आयु में जिसमें माता की मृत्यु हो सकती है।

लग्न से चौथी सिंह व सातवें से चौथी कुम्भ राशि है। कुम्भ सिंह से बलवान् है दूसरी में ग्रह है। इसलिए माता की मृत्यु कुम्भ की शूल दशा में होगी। जो कुम्भ, मिथुन व तुला है। कुम्भ राशि की दशा ८० वर्ष में आती है। इसलिए इसका विचार नहीं करेंगे। तुला व मिथुन में, तुला बलवान् है उसमें दो ग्रह हैं। शूल दशा तुला की ९ से १५ वर्ष तक है जिसमें जातक ने अपनी माता खो दी। वास्तव में मिथुन की अन्तर्दशा चल रही थी।

१४७. जातक की स्वयं की मृत्यु

उदाहरण ४४

मारक राशियों का निर्णय विस्तारपूर्वक अन्यत्र दिया जा चुका है। इस अनुच्छेद में केवल जातक की अपनी मृत्यु के ज्ञान की विधि शूलदशा के अनुसार दी गई है। लग्न और सप्तमं में जो बलवान् हो उसे ज्ञात करें। बलवान्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि की शूल दशा में अथवा उससे पाँचवीं अथवा नवीं राशि की दशा में मृत्यु होगी।

लग्न व सप्तम में, लग्न स्वयं बलवान् है (उदाहरण १८) इसलिए मृत्यु हो सकती है वृष, कन्या व मकर की शूल दशाओं में। कुण्डली पूर्णायु की श्रेणी की है, मकर मृत्यु प्रभावी राशि है। मकर की शूल दशा चली ९० से ९९ वर्ष तक। वह मृत्यु को प्राप्त हुआ ८१ वर्ष में।

१४८. पत्नी की मृत्यु

गुरु स्थित राशि या उससे पाँचवीं या नौवीं राशि की चर दशा में यह होती है। सम्भावित अवधि ज्ञात करने में उस विशेष भाव के बलवान् का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

उदाहरण ४५

आदर्श कुण्डली में पत्नी की मृत्यु अवधि ज्ञात कीजिये।

गुरु कुम्भ में है। मृत्यु हो सकती है कुम्भ, मिथुन व तुला में। कुम्भ की दशा आयेगी जब जातक २४ वर्ष का होगा। सप्तम भाव शक्तिशाली है। इसलिए तुला की दशा में पत्नी की मृत्यु सम्भव है। जो तुला व मिथुन में भी बलवान् है। तुला राशि ४६ वर्ष तक चलेगी। मृत्यु ४६ वर्ष के अन्त में हुई थी।

१४९. अन्य सम्बन्धियों की मृत्यु

(१) पुत्र तथा मातुल कारक की स्थिति का विचार करें, उस सम्बन्धी की मृत्यु बताई जा सकती है, उसकी शूल राशि की (चर) दशा में।

(२) लग्न से व सप्तम में तीसरी राशि जो बलवान् हो ले, उचित निर्याण शूल दशा में भाई की मृत्यु बताएँ, लग्न से व सप्तम से पाँचवीं जो राशि बलवान् हो उससे पहली, पाँचवीं व नौवीं की निर्याण शूल दशा में सन्तान की मृत्यु होती है।

बड़े भाई की मृत्यु सम्भव है लग्न व सप्तम से जो भी ग्यारहवीं राशि बलवान् हो उससे पहली, पाँचवीं राशि की शूल दशा में।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन सभी घटनाओं के बताने में पहले जन्मकुंण्डली के सावधानीपूर्वक अध्ययन से संकेत प्राप्त कर लें। उदाहरण के लिए जन्मकुण्डली सन्तान योग नहीं दिखाती तो सन्तान की मृत्यु अवधि का प्रश्न ही नहीं उठता।

उदाहरण ४६

आदर्श कुण्डली में सम्भावित मृत्यु अवधि भाई व सन्तान की निकालिये।

छोटे भाई

लग्न व सप्तम से तीसरी राशियाँ हैं — कर्क व मकर। कर्क बलवान् है। छोटा भाई (अगर है) की मृत्यु होगी शूल दशा कर्क, वृश्चिक व मीन में।

बड़े भाई

लग्न व सप्तम से ग्यारहवीं राशियाँ हैं — मीन व कन्या। मीन अधिक बलवान् है। इसलिए बड़े भाई की मृत्यु होगी शूल दशा मीन, कर्क व वृश्चिक में।

सन्तान

लग्न व सप्तम से पाँचवीं राशियाँ हैं — कन्या व मीन। मीन अधिक बलवान् है। इसलिए सन्तान की मृत्यु शूल दशा मीन, कर्क व वृश्चिक में होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय ९

सारांश

१५०. सामान्य विचार

जबकि जैमिनि व पाराशरी पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न लगती हैं, वास्तव में जैमिनि पाराशर की मुख्य शाखा है, ऋषि के अपूर्व ज्ञान से विकसित हुआ और सूत्रों व वचनों के रूप में प्रस्तुत हुआ जो समझने में तब तक सरल नहीं था जब तक उसकी व्याख्याओं की सहायता न ली जाए। जैमिनि की विशेषता कारकांश व आरूढ़ लग्न को दी गई प्रमुखता में है, ग्रहों के बल व आयु निर्धारण के सरल तरीकों के प्रयोग में है तथा मूल व अद्वितीय मूल्य दशाओं की समस्या में है। उपयुक्त दशा का उपयुक्त घटना के लिए चुनाव विवाद का विषय है। विद्वान् विद्यार्थी अपने आप प्रयास कर सकते हैं कि कौन-सी दशा किस घटना के लिए या किस विशेष कुण्डली के लिए या किन घटनाओं के समूह के लिए उचित है। यहाँ कोई संदेह नहीं कि चर दशा को गर्वित स्थान प्राप्त है।

१५१. कारक

जैमिनि के अनुसार, प्रत्येक कुण्डली में अलग-अलग कारक परिवर्तन हो जाते हैं। यहाँ सात प्रमुख कारक हैं जो आत्म, अमात्य, भ्रातृ, मातृ, पुत्र, ज्ञाति और दारा हैं। ग्रहों के भोगांश को राशि, अंश, कला में बदल लें, राशि को छोड़कर अंशों का विचार करें। आदि ग्रहों की स्थिति को अंशों के अनुसार अवरोह क्रम में लिखें। जिस ग्रह के अधिकतम अंश होंगे वह आत्म कारक होगा। कारकों के उपरोक्त क्रम के अनुसार अन्य होंगे। अमात्य, भ्रातृ आदि, अंशों के अवरोह क्रम से। जब दो या उससे अधिक ग्रहों के समान अंश हों तो कारकों में विलयन हो जाता है और ज़ो खाली रह जाते हैं उसे राहु और प्राकृतिक कारकों से पूरा किया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण ४७

हर हिटलर की कुण्डली में विभिन्न कारक ज्ञात करो। जन्म २४-४-१८८९ समय ६.३० शाम (स्थानीय समय) घटी ३३.३० सूर्योदय से, अक्षांश ४६ उत्तर देशान्तर १३ पूर्व।

ग्रहों की स्थिति कुण्डली में —

ग्रह	राशि	कला	विकला
सूर्य	मेष	१	५६
चन्द्र	धनु	१५	४६
मंगल	मेष	२५	३१
बुध	मेष	४	४८
गुरु	धनु	१७	२३
शुक्र	मेष	२५	५०
शनि	कर्क	२२	३५
राहु	मिथुन	२५	६
केतु	धनु	२५	६
लग्न	तुला	४	५६

निम्न राशि व नवमांश कुण्डलियाँ हैं —

	सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र	होरा लग्न	राहु
			शनि वर्णदा घटिका लग्न
चन्द्र गुरु केतु		लग्न आरूढ़ लग्न	

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

		बुध, सूर्य राहु
		चन्द्र
	कारकांश मंगल, शुक्र, लग्न, केतु	गुरु

अंशों के अवरोह क्रम

ग्रहों की स्थिति अंशों के अवरोह क्रम के अनुसार —

ग्रह	राशि	अंश	कला
शुक्र	मेष	२५	५०
मंगल	मेष	२५	३१
शनि	कर्क	२२	३५
गुरु	धनु	१७	२३
चन्द्र	धनु	१५	४६
रवि	मेष	९	५६
बुध	मेष	४	४८

शुक्र के अधिकतम अंश हैं इसलिए वे आत्म कारक हैं। अन्य कारक निम्न हैं —

कारक	स्वामी
आत्म कारक	शुक्र
अमात्य कारक	मंगल
भ्रातृ कारक	शनि
मातृ कारक	गुरु
पितृ कारक	चन्द्र
ज्ञाति कारक	रवि
दारा कारक	बुध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५२. विभिन्न प्रकार के लग्न

जैमिनि द्वारा प्रस्तुत अनेक लग्न हैं, आरूढ़ लग्न, होरा लग्न, वर्णद लग्न, घटिका लग्न कुण्डली विवेचना में प्रमुख हैं, विशेषत: राजयोग के विषय में। आरूढ़ लग्न वह राशि है जो लग्नेश की लग्न से राशि संख्या से और लग्नेश से वही संख्या जिस राशि में आए वह लग्न।

उदाहरण ४८

आरूढ़ लग्न, होरा, वर्णद, भाव व घटिका लग्न हिटलर की कुण्डली में निकालिये।

आरूढ़ लग्न — लग्नेश शुक्र सातवें में और सातवें से सातवां जो स्वयं लग्न आरूढ़ लग्न हुआ।

आरूढ़ लग्न — तुला

होरा लग्न — जन्मघटी को भाग करें २.५

(३३.५/२.५) = १३.४ भागफल १३ शेष ०.४

१२ को छोड़कर गणना करें २ (n + १) सूर्य से, जन्म लग्न विषम है, हमें मिला वृषभ होरा लग्न १ शेष जो १ है ३० से गुणा करें १२ डिग्री

∴ होरा लग्न = वृष १२°

भाव लग्न—जन्म लग्न तुला है, विषम राशि

जन्मघटी = ३३.५

$$\therefore n = \frac{३३.५}{५} = ६.७$$ भागफल ६ शेष ०.७

∴ जन्म लग्न विषम है भाव लग्न सूर्य से (६ + १) सातवां तुला जो शेष को बदलने पर २१°

∴ भाव लग्न = तुला २१

वर्णद लग्न — जन्म लग्न तुला है विषम राशि होरा लग्न वृष है समराशि।

∴ ए = ७ (सीधी गणना मेष से जन्म लग्न तक)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बी = ११ (विपरीत गणना मेष से होरा लग्न तक)

∵ जन्म लग्न विषम है और होरा लग्न सम है ए और बी का अन्तर = ४

जन्म लग्न विषम राशि है मेष से गिनने पर अन्तर आया।

∴ वर्णद लग्न = कर्क

घटिका लग्न = जन्म लग्न तुला है
जन्म समय घटी में = ३३.५
जन्मघटी को १२ से भाग करें

हमें मिला $\frac{३३.५}{१२}$ ९.५ शेष

पूर्ण संख्या ए (n) और खण्ड भाग ५१ घटिका लग्न वह राशि है जो आएगी n + १ (ए + १) जन्म लग्न से —

∴ घटिका लग्न = कर्क १५°

प्राणपद वह सूक्ष्म बिन्दु है जो जन्म समय को दो बार विघटी में जोड़ प्राप्त किया जा सकता है।

(अ) सूर्य अंशों में, (ब) सूर्य के अंश + २४०, (स) सूर्य अंश + १२०, सूर्य के चर, स्थिर व द्विस्वभाव राशियों में स्थिति के अनुसार।

द्वार राशि वह है जिसकी दशा पर विचार किया जा रहा है चाहे किसी घटना का पता करने के लिए या मारक अवधि के लिए।

भय राशि वह है जो राशि उतने भय राशि से दूर होगी जितनी भय राशि लग्न से।

गुलिका, जैमिनि ने जिसे बहुत महत्त्व दिया है, समय का एक भाग है (दिनमान व रात्रिमान को ८ से भाग करके) प्राप्त किया जाता है, शनि को निर्धारित है।

ब्रह्मा, महेश्वर व रुद्र ग्रहों की कुण्डलीय स्थितियों के कारण होते हैं। ब्रह्मा की स्थिति मुख्य है स्थिर व ब्रह्म दशा ज्ञात करने के लिए रुद्र व महेश्वर की स्थिति से मृत्यु प्रभावी राशियाँ ज्ञात होती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण ४९

हिटलर की कुण्डली में गुलिक — ब्रह्मा, महेश्वर व रुद्र ज्ञात कीजिये।
गुलिक (अनुच्छेद ३४) — जन्मवार–शनि।
दिनमान - घ० ३४.४/८ = ४.३

∴ शनि का भाग सूर्योदय से ४.३ घटी तक

∴ गुलिक की स्थिति उदय अंश घ० ४.३ सूर्योदय से

वृष १७.५७

ब्रह्मा (अनुच्छेद ३५) — लग्न व सप्तम में सप्तम बलवान् है = अ (अनुच्छेद ५३) षष्ठेश, अष्टमेश, द्वादशेश ए से बुध, मंगल व गुरु हैं। इन तीनों में मंगल बलवान् है उसके बाद गुरु (अनुच्छेद ५९) लेकिन मंगल दृष्ट अर्धभाग में वही है (सातवें से) गुरु ब्रह्मा होगा क्योंकि न केवल वह आधे दृष्ट भाग में है अपितु विषम राशि में भी है।

∴ ब्रह्मा गुरु है।

महेश्वर (अनुच्छेद ३८) - आत्म कारक से अष्टमेश मंगल है। वह अपने भाव में है, द्वादशेश गुरु है। इसलिए हमें अष्टमेश व द्वादशेश आत्म कारक में से बलवान् चुनना है जो मंगल व गुरु हैं। मंगल बलवान् है। इसलिए महेश्वर मंगल है। रुद्र — (अनुच्छेद ३९) लग्न से द्वितीयेश व अष्टमेश मंगल व शुक्र हैं। क्योंकि शुक्र, मंगल से बलवान् है। वह रुद्र है।

१५३. दृष्टियाँ व अर्गलाएँ

सभी चर राशियाँ सभी स्थिर राशियों को देखती हैं सिर्फ अपने से अगली को छोड़कर। सभी स्थिर राशियाँ चर राशियों को देखती हैं सिर्फ अपने से पिछली को छोड़कर। द्विस्वभाव राशियाँ आपस में एक दूसरे को देखती हैं। कुण्डली में भाग्यपूर्ण या रुकावट की कार्यकर्ता मानी गई है। देखनेवाले ग्रह से अगर चौथे, दूसरे, ग्यारहवें, पाँचवें में ग्रह हो तो अर्गला होती है। यह उस समय समाप्त हो जायेगी अगर दसवें, बारहवें, तीसरे व नौवें में ग्रह हो। तीसरे में अशुभ ग्रह पाप अर्गला बनाते हैं। केतु इसका अपवाद है। केतु से नौवें में ग्रहों से अर्गला बनती है जो पाँचवें में ग्रह होने से समाप्त हो जाती है। शुभ व अशुभ अर्गला के लिए अनुच्छेद ४५ व ४६ देखें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण ५०

हिटलर की कुण्डली में अर्गला चक्र से अर्गला ज्ञात कीजिये।

ग्रहों की अर्गला हिटलर की कुण्डली में

ग्रह	अर्गला बनाने वाले	समाप्त करने वाले
सूर्य	शनि	नहीं
चन्द्र	सूर्य, बुध, शुक्र, कुज	नहीं
मंगल	शनि	नहीं
बुध	शनि	नहीं
गुरु	सूर्य, बुध, शुक्र, कुज	नहीं
शुक्र	शनि	नहीं
शनि	कोई नहीं	नहीं
राहु	शनि, सूर्य, बुध, शुक्र, कुज	
केतु	कोई नहीं	

<table>
<tr><td>शनि, सूर्य, राहु
मंगल, शुक्र, बुध
(चन्द्र, गुरु, केतु)</td><td>शनि</td><td>राहु
(रवि, बुध,
कुज, शुक्र)</td><td>शनि, रवि, बुध,
शुक्र, कुज</td></tr>
<tr><td>राहु, रवि, बुध
चन्द्र, कुज, शुक्र
गुरु
केतु</td><td colspan="2" rowspan="2">अर्गला चक्र</td><td></td></tr>
<tr><td>कुज, रवि
शुक्र, बुध</td><td>राहु, गुरु, चन्द्र, केतु,
रवि, कुज, बुध, शुक्र</td></tr>
<tr><td>कुज, रवि
शुक्र, बुध</td><td>गुरु, चन्द्र,
केतु</td><td></td><td>गुरु, चन्द्र,
केतु, शनि</td></tr>
</table>

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपरोक्त चक्र में, शनि मेष में स्थित है जो यह प्रदर्शित कर रहा है कि मेष में उसके द्वारा तथा उसके साथ स्थित अन्य ग्रहों द्वारा अर्गला बनी है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि कोई विरोध नहीं हुआ है जबकि वृष में राहु से अर्गला बनी है। जो ग्रह कोष्ठक में हैं वे विरोधी प्रभाव दर्शा रहे हैं।

१५४. राशिफल

जैमिनि ने सदैव राशि व उसके बल पर विशेष दबाव दिया है। राशि का बल स्वयं उसके व उसके स्वामी के बल पर निर्भर करता है। स्वामी का बल बनता है — (ए) राशि के प्रथम बिन्दु से दूरी के कारण बल (बी) स्वक्षेत्र, उच्च, नीच आदि स्थितियों से प्राप्त बल (सी) आत्म कारक से विशेष स्थिति। राशि का स्वयं का बल निर्भर है — (ए) उसकी ग्रह व ग्रहों से युति (बी) उसका स्थिर, चर, द्विस्वभाव राशियों में होना व गुरु, बुध व स्वयं स्वामी होकर युति व दृष्टि। राशि का कुल बल जोड़ है स्वयं उसका बल व उसके स्वामी का बल। राशि विशेष बल प्राप्त करती है अगर वह आत्म कारक से युक्त हो। एक सुधारात्मक संख्यात्मक तरीका राशि बल निकालने का हमारे द्वारा निकाला गया है जो अनुच्छेद ६२ में है।

उदाहरण ५१

सुधारात्मक पद्धति से हिटलर की कुण्डली में राशि व ग्रह बल ज्ञात कीजिये।

ग्रह बल

ग्रह	मूल त्रिकोण बल	अंश बल	केन्द्र बल	कुल
रवि	६०.०	७.५	६०	१२७.५
चन्द्र	१५.०	१५.०	१५	४५.०
कुज	३०.०	४५.०	६०	१३५.०
बुध	१५.०	३.७५	६०	७८.१५
गुरु	३०.०	२२.५	१५	६७.५
शुक्र	१५.०	६०.०	६०	१३५.०
शनि	७.५	३०.०	६०	९७.५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि	चर बल	दृक् बल	स्थिर बल	स्वामी	कुल
मेष	१५.०	६०+६०	१०५.०	१३५.०	३७५+६०
वृष	३०.०	–	–	१३५.०	१६५.०
मिथुन	६०.०	६०.०	६०.०	७८.७५	२५८.७५
कर्क	१५.०	–	६०.०	४५.०	१२०.०
सिंह	३०.०	६०+६०		१२७.५	२७५.५
कन्या	६०.०	६०		७५.७५	१९५.७५
तुला	१५.०	–		१३५.०	१५०.०
वृश्चिक	३०.०	६०+६०		१३५.०	२८५.०
धनु	६०.०	६०+६०	९०.०	६७.५	३३७.५
मकर	१५.०	–		९७.५	११२.५
कुम्भ	३०.०	६०+६०		९७.५	२४७.५
मीन	६०.०	६०+६०		६७.५	२४७.५

१५५. दशा एवं भुक्ति

जैमिनि द्वारा बताई गई सभी विभिन्न दशाओं के तरीके हमेशा राशि से हैं और सबसे प्रिय चर पर्याय दशा है। मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक और धनु सव्य वर्ग की हैं और बाकी अन्य अपसव्य वर्ग की हैं। किसी भी दशा की गणना में दो बातें मस्तिष्क में रखने की हैं जो दशा का क्रम और दशा की अवधि प्रत्येक जन्मपत्री में बदल जाती है। स्थिर व शूल दशा में समयावधि स्थिर रहती है। चर दशा को पुनः लें, प्रथम दशा अपरिवर्तित रूप से लग्न राशि की होती है। दशा का क्रम सीधा या विपरीत लग्न से नवम राशि के सव्य या अपसव्य वर्ग पर निर्भर करता है। राशि की अवधि राशि व उसके स्वामी के मध्य आई राशि संख्या के समान होती है। गणना सीधी या विपरीत सव्य या अपसव्य वर्ग पर निर्भर करती है। अगर राशि का स्वामी उच्च का हो तो अवधि एक वर्ष बढ़ जाती है, अगर स्वामी नीच का है तो अवधि एक वर्ष कम हो जाती है। कुम्भ व वृश्चिक दोनों के दो-दो स्वामी हैं, उनकी दशा अवधि के लिए थोड़ा-सा अन्तर गणना में है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महादशा की अवधि का बारहवां भाग भुक्ति की दशा का होता है जिस राशि की अन्तर्दशा चाहिए अगर उससे दसवीं राशि सव्य वर्ग की है तो अन्तर्दशा का क्रम सीधा होगा और पहली दशा उससे पूरी राशि की होगी। अगर वह अपसव्य वर्ग की है तो दशा गणना का क्रम विपरीत होगा और पहली दशा उससे बारहवीं राशि की होगी।

स्थिर दशा पद्धति में चर, स्थिर व द्विस्वभाव राशियों के ७, ८, ९ वर्ष हैं। ब्रह्मा जिस राशि में है उससे दशा शुरू होती है और अन्य दशाएँ सीधे क्रम में आती हैं। त्रिकोण दशा आरम्भ होती है लग्न, पाँचवीं व नौवीं राशि में से बलवान् राशि से और अन्य दशाएँ सव्य व अपसव्य के अनुसार सीधे व विपरीत क्रम से चलती हैं। दशा अवधि इसमें चर दशा के अनुसार होती है। विस्तृत जानकारी के लिए अनुच्छेद ९३ देखें।

वर्णद दशा में यह लग्न से शुरू होती है और लग्न के विषम होने पर सीधे क्रम में चलती है। लग्न सम हो तो बारहवीं राशि से शुरू होकर विपरीत क्रम से चलेगी। लग्न से वर्णद लग्न तक की दूरी राशि संख्या में दशा की अवधि होगी। ब्रह्म दशा ब्रह्म राशि से सीधे क्रम में चलती है या ब्रह्मा से सातवीं राशि से शुरू होकर विपरीत दिशा में चलती है, लग्न के सम या विषम के अनुसार। दशा की अवधि षष्ठेश से विचारणीय राशिफल की दूरी है। योगार्ध दशा में राशि दशा की अवधि स्थिर दशा व चर दशा का मध्यबिन्दु है। दशा क्रम सीधा या विपरीत रहेगा — प्रथम राशि दशा (लग्न व सप्तम में जो बलवान् है) सम या विषम। निर्याण शूल दशा का विचार मुख्य रूप से किया जाता है। यह जातक व उसके परिवार-जन की आयु सीमा के लिए ज्ञात किया जाता है।

उदाहरण ५२

ज्ञात कीजिये हिटलर की कुण्डली में : (१) चर दशा, (२) स्थिर दशा, (३) त्रिकोण दशा, (४) ब्रह्म दशा, (५) वर्णद दशा, (६) निर्याण शूल दशा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिटलर की कुण्डली की दशा सूची

चर दशा

तुला	६ वर्ष
*वृश्चिक	६ वर्ष
धनु	१२ वर्ष
मकर	६ वर्ष
*कुम्भ	८ वर्ष
मीन	३ वर्ष
मेष	१२ वर्ष
वृष	११ वर्ष
मिथुन	१० वर्ष
कर्क	७ वर्ष
सिंह	५ वर्ष
कन्या	५ वर्ष

स्थिर दशा

स्थिर दशा वहाँ से शुरू होती है जहाँ ब्रह्मा स्थित है। विभिन्न राशि दशा का क्रम निम्न प्रकार चलेगा (अनुच्छेद ९१)

पहली दशा	धनु	९ वर्ष
दूसरी दशा	मकर	७ वर्ष
तीसरी दशा	कुम्भ	८ वर्ष
चौथी दशा	मीन	९ वर्ष
पाँचवीं दशा	मेष	७ वर्ष
छठीं दशा	वृष	८ वर्ष
सातवीं दशा	मिथुन	९ वर्ष
आठवीं दशा	कर्क	७ वर्ष
नौवीं दशा	सिंह	८ वर्ष
दसवीं दशा	कन्या	९ वर्ष
ग्यारहवीं दशा	तुला	७ वर्ष
बारहवीं दशा	वृश्चिक	८ वर्ष
		९६ वर्ष

*दोनों स्वामी मंगल, केतु में से हम मंगल का विचार करेंगे क्योंकि वह अधिक ग्रह के साथ स्थित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिकोण दशा (अनुच्छेद ९३)

तीनों त्रिकोणों में नौवां भाव अधिक बलवान् है क्योंकि उसमें ग्रह है व द्विस्वभाव राशि में है। अतः मिथुन सव्य वर्ग का है और उसका दशा क्रम सीधा चलेगा। निम्न के अनुसार —

पहली दशा	मिथुन	१० वर्ष
दूसरी दशा	तुला	६ वर्ष
तीसरी दशा	कुम्भ	*८ वर्ष
चौथी दशा	कर्क	७ वर्ष
पाँचवीं दशा	वृश्चिक	५ वर्ष
छठीं दशा	मीन	३ वर्ष
सातवीं दशा	सिंह	५ वर्ष
आठवीं दशा	धनु	१२ वर्ष
नौवीं दशा	मेष	१२ वर्ष
दसवीं दशा	कन्या	५ वर्ष
ग्यारहवीं दशा	मकर	६ वर्ष
बारहवीं दशा	वृष	११ वर्ष

ब्रह्म दशा (अनुच्छेद ९६)

लग्न विषम है अतः दशा ब्रह्म राशि से शुरू होगी और दशा क्रम सीधा होगा। प्रत्येक राशि की समयावधि धनु से निम्न प्रकार शुरू होगी —

*कुम्भ के स्वामी शनि व राहु अलग-अलग राशियों में स्थित हैं अतः हमें अनुच्छेद ८६ लगाना पड़ेगा। दोनों असंयुक्त हैं लेकिन राहु अधिक बलवान् राशि में है अधिक दशा अवधि दे रहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनु	४ वर्ष
मकर	३ वर्ष
कुम्भ	१० वर्ष
मीन	१ वर्ष
मेष	१२ वर्ष
वृष	११ वर्ष
मिथुन	१० वर्ष
कर्क	५ वर्ष
सिंह	११ वर्ष
कन्या	१० वर्ष
तुला	२ वर्ष
वृश्चिक	५ वर्ष

निर्याण शूल दशा (अनुच्छेद ९८)

हिटलर की कुण्डली में, लग्न विषम है, दशा लग्न से शुरू होगी जो तुला, वृश्चिक, धनु, मकर........ तथा कन्या और प्रत्येक ०९ वर्ष की होगी।

वर्णद दशा (अनुच्छेद ९५)

लग्न विषम है और दशा लग्न से शुरू होगी जैसे तुला।

जन्म लग्न है तुला
वर्णद लग्न है कर्क

तुला से कर्क तक सीधी गणना में, हमें प्रथम वर्णद दशा १० की मिलती है। दूसरी वर्णद दशा ज्ञात करने के लिए पहले हमें दूसरे भाव की वर्णद लग्न निश्चित करनी है जो वृश्चिक है। अनुच्छेद २३ के नियमानुसार —

∵ लग्न से दूसरी राशि = वृश्चिक (सम)
होरा लग्न से दूसरी राशि = मिथुन (विषम)
∴ ए = ५
बी = ३
सी = २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतः लग्न से दूसरी सम राशि है, दूसरी (सी) मीन जो कुम्भ से दूसरी राशि की वर्णद है। अतः तीसरी वर्णद की अवधि के लिए तुला से कुम्भ तक की गणना से ५ वर्ष इसी प्रकार, बाकी वर्णद राशि की अवधि भी ज्ञात की जा सकती है।

१५६. आयु निर्धारण

आयु निर्धारित की जा सकती है (ए) लग्नेश व आठवें से (बी) लग्न व चन्द्र से (सी) लग्न व होरा लग्न से। अल्पायु, मध्यायु व पूर्णायु ज्ञात की जा सकती है इन छः तत्त्वों के चर स्थिर व द्विस्वभाव राशियों में स्थिति से। जहाँ तीनों तत्त्व तीन विभिन्न शर्तें बता रहे हों तो लग्न व होरा लग्न के निर्देश को प्राथमिकता दें। इस प्रकार से अगर चन्द्र लग्न या सातवें में हो तो उस शर्त को लें जो (बी) में हो, वरना बहुमत को प्राथमिकता दें। अन्य पद्धति के अनुसार (अनुच्छेद १११) आयु अल्प, मध्य व पूर्ण है ग्रह (लग्न व सप्तम से जो अष्टमेश बलवान् हो) केन्द्र पणफर व आपोक्लिम में हो। तीसरी पद्धति में सुझाव है। अनुच्छेद ११२ में आत्म कारक से द्वितीयेश व अष्टमेश में जो बलवान् हो। जीवन की शर्तों के पक्ष व विपक्ष का अच्छी प्रकार ध्यान करके ही किसी व्यक्ति की आयु निर्धारित करें। विशेष जीवन की शर्त भी वृद्धि व ह्रास में बदली जा सकती है जब उसमें कक्षा वृद्धि या कक्षा ह्रास का समावेश करते हैं अनुच्छेद ११४ देखें।

उदाहरण ५३

हिटलर की कुण्डली में आयु प्रमाण ज्ञात कीजिये।

जीवन अवधि (अनुच्छेद १०४)

(ए) तीनों तथ्यों के निर्धारण में पूर्ण, मध्य या अल्पायु देखने के लिए।

(ए) शुक्र (लग्नेश व अष्टमेश) (बी) तुला व चन्द्र (लग्न व चन्द्र) और (सी) तुला व वृश्चिक (लग्न व होरा लग्न)।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	अनुच्छेद ८३ अल्पायु	अनुच्छेद ८४ मध्यायु	अनुच्छेद ८५ पूर्णायु
लग्नेश — शुक्र	x		
अष्टमेश — शुक्र	x	x	पूर्णायु
लग्न — तुला			
चन्द्र — धनु	अल्पायु	x	x
लग्न — तुला			
होरा — वृश्चिक	x	मध्यायु	x

उपरोक्त सारणी में तीनों जोड़ें, तीन विभिन्न आयु बता रहे हैं। अतः १०८ अनुच्छेद के अनुसार हम "लग्न तथा होरा लग्न" की आयु लेंगे जो मध्यायु है। दूसरे शब्दों में पद्धति "ए" के अनुसार जीवन मध्यायु है।

पद्धति बी (अनुच्छेद १११)

लग्न से अष्टमेश शुक्र है और सप्तम से अष्टमेश मंगल है। इस स्थिति में इन दोनों में से कौन बलवान् है नहीं उठता। क्योंकि शुक्र व मंगल दोनों केन्द्र में हैं तो जीवन पूर्णायु में आता है।

पद्धति सी (अनुच्छेद ११२)

ग्रह जो सम्मिलित हैं वह पुनः मंगल व शुक्र हैं। इसलिए तीसरी पद्धति भी बी पद्धति को बताती है।

अतः हमारे पास है ए जो बताती है मध्यायु बी और सी पूर्णायु। अतः कुण्डली पूर्णायु की है। दूसरा कदम यह है कि कुण्डली में आयु प्रमाण में ह्रास या अन्य कुछ तो नहीं है।

कक्षा वृद्धि

सातवें से शुभ ग्रह त्रिकोण में	= १
आत्म कारक से त्रिकोण में शुभ ग्रह	= १
	२ इकाई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कक्षा ह्रास

अष्टमेश आत्म कारक है	= १
सातवें से अष्टमेश आत्म कारक के साथ	= १
त्रिकोण में अशुभ राहु	= १
आत्म कारक से सातवें अशुभ ग्रह	= १
	४ इकाई

जबकि प्रथम विवेचन में ही पूर्णायु दीखती है, कक्षा ह्रास कक्षा वृद्धि से अधिक है। अतः कुण्डली मध्यायु श्रेणी की है। यह ध्यान देने योग्य है कि एक राशि दशा की वृद्धि, आत्म कारक से पूर्ण चन्द्र की त्रिकोण में स्थिति के कारण हुई है।

१५७. मृत्यु की अवधि

राहु, केतु व शनि की आत्म कारक या लग्न से सातवीं स्थिति बताती है कि मृत्यु १, २, ३ आयु की अवधि के अनुसार जातक की कौन-से भाग में होगी। मृत्यु साधारणतया होती है (ए) आठवें से जो त्रिकोण में है (बी) पापकर्तरी योग (सी) आठवें या बारहवें में अशुभ ग्रह हो (डी) आठवीं या बारहवीं राशि में अगर उन पर शुक्र व चन्द्र के अतिरिक्त कोई दृष्टि नहीं (ई) रुद्र व महेश्वर की राशि में जो राशि का चयन हो वह जीवन की शर्त के अनुसार आयु बताती है।

उदाहरण ५४

हिटलर की कुण्डली में मारक अवधि ज्ञात कीजिये।

जातक को मारने में समर्थ राशि को देखने पर निम्न योग्य है।

अनुच्छेद १२१ (बी) वृष, कन्या व मकर।

(ख) वृष अशुभ ग्रहों के मध्य है इसलिए मृत्यु प्रभावी राशि है।

(ग) आठवीं व बारहवीं राशियाँ वृषभ तथा कन्या हैं। इन दो में से कन्या राशि की दशा पूर्णायु की श्रेणी में आती है बजाय कि जो दशा का चयन किया है। दूसरी राशि जो वृषभ है जो अयोग्य सिद्ध हो रही है क्योंकि उस पर शनि की दृष्टि है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(घ) चन्द्र से शनि आठवें है इसलिए यह सम्भव है कि मृत्यु एक राशि पूर्व हो जाए।

(ई) वृश्चिक भी योग्य है।

(ज) मेष — महेश्वर की स्थिति के कारण।

(क) मेष — रुद्र की स्थिति के कारण।

(स) आत्म कारक से ३, ६, ८ व १२ के स्वामी हैं बुध, मंगल व गुरु। मंगल उनमें बलवान् है (अनुच्छेद ५९) और उस द्वारा स्थित राशि में भी योग्य है।

आगे जाने से पूर्व यह देखा गया है कि मेष पर बहुत अधिक दबाव है और उसके बाद वृश्चिक पर। मेष राशि की मृत्यु प्रभावी राशि निश्चित करने से पूर्व हम देखेंगे अनुच्छेद १४७ इस विषय में। इस प्रसंग में लेंगे शूल दशा और लग्न व सप्तम में बलवान् से त्रिकोण राशियों को। इस वर्तमान स्थिति में निःसंदेह सप्तम (मेष) बलवान् ही नहीं है लग्न से अपितु त्रिकोण में भी सबसे बलवान् है। इसलिए हम जातक की मृत्यु मेष राशि की दशावधि जो निर्याण शूल दशा के अनुसार भी है, में आशा करते हैं, मेष राशि हिटलर के पचपनवें वर्ष से ६४ वर्ष में आती है।

दूसरे इन ९ वर्षों में हम सर्वाधिक दोषपूर्ण समय देख रहे हैं। यह कहा जाता है कि आत्म कारक (शुक्र) से छठें, दूसरे, बारहवें स्वामी में जो सर्वाधिक बलवान् हो उसकी अन्तर्दशा में मृत्यु होती है, या रुद्र की राशि में (मेष) या मारक राशि से (वृषभ) मेष से षष्ठेश, वृषभ नवमांश में है षष्ठेश के नवमांश राशि की अन्तर्दशा में। इसलिए मेष व वृष की अन्तर्दशा सबसे अधिक दोषपूर्ण है और हिटलर की मृत्यु ५६ वर्ष में वृष की अन्तर्दशा में हुई थी।

१५८. कुण्डली का विवेचन

कारकांश, नवमांश व वर्णद लग्न के स्वामी व्यक्तिगत आकृति को निर्धारित करते हैं, जबकि उसका चरित्र में मस्तिष्क में कारकांश से ग्रहों की स्थिति पर निर्भर है। सम्पत्ति के योग साधारणतया आरूढ़ लग्न से देखते हैं और सम्पत्ति के लिए उत्तम योग है आत्म कारक और उससे द्वितीयेश के मध्य युति या दृष्टि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारकांश में विभिन्न ग्रह या उनकी दृष्टि संकेत करती है कष्टों व खतरों की ओर। उदाहरणत:, कारकांश मेष, धनु हो तो वाहन दुर्घटना, ऊँचाई से गिरना आदि। कारकांश से मंगल, राहु व केतु की विभिन्न स्थितियाँ संकेत करती हैं उन विभिन्न रोगों को जिनसे व्यक्ति कष्ट पाएगा।

कारकांश से ग्रहों की स्थिति से शिक्षा का भी विवेचन होता है। उपपद से भाई व बहनों का विवरण पता चलता है। यह अनुच्छेद १३२ में बताया गया है और भाई व बहन की मृत्यु के योग भी दिए गए हैं। उपपद विवाह जानने का आरम्भिक बिन्दु है। उपपद से दूसरे या सातवें में शुभ या अशुभ ग्रह सातवें भाव की स्थिति विधवा योग बनाती है और होरा लग्न से आठवें में मंगल व केतु वर्ग स्थिति भी। उपपद से पाँचवां और ग्यारहवां सन्तान को दर्शाता है। तब हमारे पास हैं सन्तानहीन व बंध्या योग आदि।

व्यवसाय ज्ञात करने के विचार से जैमिनि पद्धति अद्वितीय है यहाँ विस्तृत अनुसन्धान व अन्वेषण का क्षेत्र है। व्यवसाय व जीविका साधन का मुख्य तथ्य जो विचारणीय है कारकांश की स्थिति व उससे विभिन्न ग्रहों की भाव स्थिति है।

मृत्यु की प्रकृति का मुख्यत: आत्म कारक या लग्न के तीसरे भाव से पता चलता है। विभिन्न ग्रहों के तीसरे भाव में स्थिति मृत्यु के विभिन्न कारण बताती है। शुभ ग्रहों से शांतिप्रद मृत्यु और अशुभ ग्रहों से घातक मृत्यु होती है। अनुच्छेद १४१ और १४२ में दान, मोक्ष, सहानुभूति आस्था आदि के मिश्रित योग दिए हैं।

उदाहरण ५५

हिटलर की मृत्यु की प्रकृति ज्ञात कीजिये।

जैमिनि के अनुसार मृत्यु की प्रकृति आत्म कारक या लग्न के तीसरे भाव से ज्ञात की जा सकती है। तीसरे में अशुभ ग्रह घातक और शुभ ग्रह शान्तिप्रद मृत्युक्षेत्र है। यहाँ आत्म कारक से तीसरा राहु है और लग्न से चन्द्र, गुरु व केतु। अगर आत्म कारक व लग्न में बलवान् देखें तो आत्म कारक बलवान् है क्योंकि वह तीनों ग्रहों के साथ है और लग्न में न तो ग्रह है और न ही वह दुष्ट है। अत: राहु तीसरे में (विष) मुख्य संकेतक है जबकि उसकी घातक प्रकृति कम हुई है चन्द्र-व गुरु की दृष्टि है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५९. घटना समय

सभी प्रमुख घटनाएँ चर दशा पद्धति से बताई जा सकती हैं, जबकि मृत्यु सम्बन्धी घटनाएँ स्थिर व निर्याण शूल दशा से उत्तम रहती हैं। साधारणतया, राशि अगर बलवान् हो तो अपनी दशा में अच्छे परिणाम देती है और उसमें अशुभ ग्रह न हो या आठवें या बारहवें में परिणाम की प्रकृति जो किसी राशि दशा में होगी वह लग्न, आत्म कारकांश या कारकांश से भाव के अनुसार देगी। पिता की मृत्यु स्थिर राशियों की चर दशा के अनुसार बताई जा सकती है (अनुच्छेद १४५) और निर्याण शूल दशा की स्थिर राशियों में। इसी प्रकार, इन दो दशाओं की सहायता से माता, भाई, बहन व बच्चों की सम्भावित मृत्यु अवधि भी पता की जा सकती है यहाँ तक कि जातक की स्वयं की मृत्यु भी (अनुच्छेद १४७ के अनुसार)।

१६०. योग

शक्तिशाली राजयोग उस समय होता है जब जन्म लग्न, होरा लग्न व घटिका लग्न किसी एक ही ग्रह से दृष्ट हो। तीनों लग्नों के दृष्ट न होने पर योग का बलाबल कम हो जाता है अन्य कई राज़योग संकेत करते हैं श्रेणी, स्थिति व प्रसिद्धि की ओर। अनुछेद १४१वें में अरिष्ट योगों का वर्णन है जो दुर्घटनाओं की ओर संकेत करते हैं जैसे — दूसरे के घर में आग लगाना, कैद या अवैध शारीरिक सम्बन्ध।

हिटलर की कुण्डली पूर्ण करने से पूर्व यंह अनिवार्य है कि हम इस कुण्डली के मुख्य योगों पर जैमिनि पद्धति द्वारा दृष्टिपात कर लें। उसके व्यक्तित्व को देखते हुए कारकांश में स्थितियों से उसके बाह्य व्यक्तित्व का मुख्य भाग परावर्तित होता है, मानसिक चरित्र आदि। अकेला मंगल कारकांश में उत्तम सैनिक बनाने में समर्थ है, मंगल शुक्र की कारकांश में युति उसे सैनिक से शासक और सेनापति बनाती है लेकिन केतु की स्थिति वांछनीय नहीं है। अधिकतर उसके कारण जीविका के साधन प्रश्नचिह्नवाले होते हैं धोखाधड़ी या मार-धाड़ से जुड़ते हैं। लग्नेश से तीसरे अ़शुभ ग्रह और सातवें (राहु) भी कहा जाता है सेनापति बनाता है। निम्न कुछ राजयोग हैं जो उसकी महानता व शक्ति में सहायक हुए हैं —

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्रेष्काण व जन्म लग्न से सातवें में ४ ग्रहों की स्थिति, नवमांश लग्न में तीन व उससे सातवें में दो ग्रहों की स्थिति है। अतः छः तत्त्वों में से चार की पूर्ति हो रही है। तकनीकी रूप में अकेला ग्रह ही अनिवार्य है (राजयोग २) यहाँ चार ग्रह बहुत शक्तिशाली योग बना रहे हैं। इसके साथ ही योग में पूर्ण शक्ति है क्योंकि सत्य यह है कि जन्म लग्न, द्रेष्काण व नवमांश में योग उन्हीं एक समान ग्रहों से बन रहा है।

दूसरा शक्तिशाली राजयोग बन रहा है कि जन्म लग्न, घटिका लग्न व होरा लग्न पर मंगल व शनि, शुक्र तथा चन्द्र की उत्तरोत्तर दृष्टि है।

जब मंगल, शुक्र व केतु स्थिर केन्द्र में होते हैं तो राजयोग होता है। इस कुण्डली में वह स्पष्ट केन्द्र नहीं है परन्तु परस्पर युति है।

आत्म कारक वर्ग की उच्च के सूर्य से युति स्वयं में राजयोग बनाती है और ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि यह सभी राजयोग मेष राशि से बनते हैं, दूसरे शब्दों में मेष राशि हिटलर की कुण्डली में धुरी है और उस पर जो प्रभाव पड़ रहा है वह शक्तिशाली है। इस सबसे भी ऊपर, मेष के ४३७ बिन्दु राशिफल में हैं और उसके इकतालीसवें वर्ष में वह मेष दशा आ रही है। यह हमने पहले ही कहा है कि जैमिनि पद्धति में किसी की जीवन घटनाओं में समय के लिए चर दशा प्रिय है। यह १२ वर्ष से चल रही है और इसी समय में हिटलर सत्ता में आया और जर्मनी ने प्रथम विश्व युद्ध में हुए अपने उत्पीड़न का बदला लिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष के अनुपम ग्रन्थ

आप और आपकी राशि	: केवलानन्द जोशी
अर्घ-मार्तण्ड	: मुकुन्दवल्लभ मिश्र
कर्मठगुरुः	: मुकुन्दवल्लभ मिश्र
ग्रहलाघवम्	: केदारदत्त जोशी
चन्द्रहस्तविज्ञान	: चन्द्रदत्त पन्त
चमत्कारचिन्तामणि	: ब्रजबिहारीलाल शर्मा
जातकपारिजात (मूल, हिन्दी व्याख्या सहित)	: गोपेशकुमार ओझा
जन्माङ्ग फल विचार	: कैलाशनाथ उपाध्याय
ज्योतिषतत्त्वप्रकाश	: लक्ष्मीकान्त कन्याल
ज्योतिष-रत्नाकर	: देवकीनन्दन सिंह
ज्योतिष-रहस्य (सम्पूर्ण)	: जगजीवनदास गुप्त
ज्योतिर्विदाभरण (कालिदास-कृत)	: रामचन्द्र पाण्डेय
दशा-फल-विचार	: जगजीवनदास गुप्त
फलदीपिका	: गोपेशकुमार ओझा
बृहज्जातकम्	: केदारदत्त जोशी
मुहूर्तचिन्तामणि (पीयूषधारा हिन्दी टीका सहित)	: केदारदत्त जोशी
लग्नचन्द्रप्रकाश	: चन्द्रदत्त पन्त
लघुपाराशरी एवं मध्यपाराशरी	: केदारदत्त जोशी
सचित्र ज्योतिष शिक्षा (दस खण्डों में)	: बी॰ एल॰ ठाकुर
सत्य सिद्धान्त ज्योतिष	: प्रभुलाल शर्मा
होरारत्नम्	: मुरलीधर चतुर्वेदी
वैवाहिक विलम्ब के विविध आयाम एवं मंत्र	: मृदुला त्रिवेदी
वैवाहिक सुख ज्योतिषीय संदर्भ	: मृदुला त्रिवेदी
सिद्धान्तशिरोमणेः गोलाध्यायः	: केदारदत्त जोशी
शत्रुशमन	: मृदुला त्रिवेदी
शनि शमन	: मृदुला त्रिवेदी
ताजिकनीलकण्ठी	: केदारदत्त जोशी
संतान सुख सर्वांङ्ग चिन्तन	: मृदुला त्रिवेदी

MOTILAL BANARSIDASS
SINCE 1903 IN INDOLOGY
MLBD
E-mail: mlbd@mlbd.com
Website: www.mlbd.com

₹ 145.00

Astrology

ISBN 978-81-208-2571-0

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh